हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकरका ६३ वाँ ग्रन्थ ।

प्रेम-प्रपञ्च

जर्मन-महाकवि योहान क्रस्टाफ फ्रीड्रक वान शिलरके
Luise Millerin or Kabale und Liebe का
हिन्दी रूपान्तर

रूपान्तरकर्ता
पं० रामलाल अग्निहोत्री, विशारद

प्रकाशक
हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय, बम्बई

ज्येष्ठ, १९८४ वि०

जून, १९२७

मूल्य ग्यारह आने
सजिल्दका एक रुपया तीन आने

प्रकाशक-
नाथूराम प्रेमी,
मालिक, हिन्दी-ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय,
हीराबाग, गिरगाँव, बम्बई ।
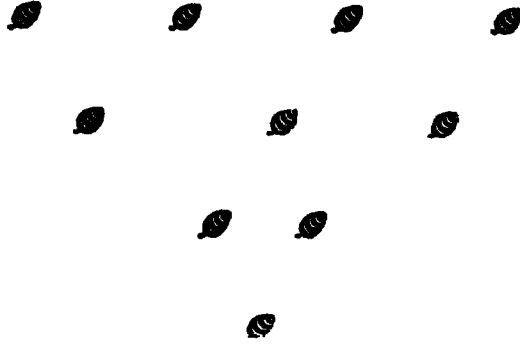
मुद्रक-
मंगेश नारायण कुलकर्णी,
कर्नाटक प्रेस,
३१८ए, ठाकुरद्वार, बम्बई ।

भूमिका

कवि-कीर्तन

विद्वानोंका कथन है कि कवि किसी देश विशेषकी सम्पत्ति नहीं होते; वरन् उनकी कविता-कौमुदीकी अमृत-रश्मियोंसे सारा संसार अभिषिक्त होता है। वे अपने देशवासियोके अतिरिक्त अन्य-देशवासियों और अन्य-भाषाभाषियोंको भी अपनी रचनाओंपर विमुग्ध करके परमानन्दकी प्राप्ति कराते है। उनकी प्रतिभाको देश या काल सीमाबद्ध करके परमित नही कर सकता। यद्यपि उनकी रचनायें उनकी ही मातृभाषाओंमें होती हैं और उनके देशके आचार-विचारोंकी छायासे भी वे अछूती नहीं होती हैं; फिर भी वे अपनी विचित्रता, मनोहरता और नव-नवोन्मेषशालिनी प्रतिभासे पाठकोंका मन मोह लेती है। यदि कभी उनकी किसी रचनाका भाव अनुवादद्वारा किसी अन्यभाषाभाषी पाठक या श्रोताको समझाया जाता है, तो उस समय वह इस बातको भूलसा जाता है कि मूल रचनाके स्रष्टाकी भाषा कोई दूसरी है। ऐसी दशामें भला कौन कह सकता है कि प्रतिभाशाली महाकवियोंका प्रभाव समस्त मानव-हृदय पर नहीं पड़ता?

ऐसे ही महाकवियोंमें जर्मनीके महाकवि शिलर है जिनका पूरा नाम 'योहान क्रस्टाफ फ्रीड्रक वान शिलर' ह। जो स्थान भारतीय कवियोंमें कविकुलगुरु कालिदासको, इंग्लैण्डमें शेक्सपीयरको और फ्रान्समें मोलियरको प्राप्त है, जर्मनीमें प्रायः उसी स्थानके अधिकारी शिलर हैं। यद्यपि शिलरको हुए लगभग सवासौ वर्ष बीत गये हैं, फिर भी वे जर्मनीमें--नहीं नहीं सारे संसारके साहित्य-गगनमें--उज्ज्वल और प्रकाशयुक्त तारेके समान आज भी चमक रहे है और तब तक चमकते रहेंगे, जब तक संसारमें सहृदयता और कवित्व-प्रेमका एक अंश भी शेष रहेगा।

इन्हीं महाकविके रचे हुए एक नाटकका रूपान्तर आज हम हिन्दीके सहृदय पाठकोंके सम्मुख उपस्थित कर रहे हैं। इसके पहले कि इस नाटकके सम्बन्धमें कुछ कहा जाय, हम अपने पाठकोंको शिलरका संक्षिप्त परिचय करा देना उचित समझते हैं।

कविका परिचय

शिलरका जन्म उर्टमवर्ग प्रान्तके नार्विच नामक नगरमें सन् १७५९ ईस्वीमें हुआ और वहीं इन्होंने प्रारंभिक शिक्षा पाई। 'होनहार बिरवानके होत चीकने पात'के अनुसार छुटपनसे ही इनके प्रत्येक कार्यमें प्रतिभाकी झलक पाई जाती थी। इनकी जीवनीके पढ़नेसे यह अच्छी तरह निश्चित हो जाता है कि कवि बनाये नहीं जाते, वरन् ईश्वरदत्त शक्तियोंसे सुसज्जित होकर स्वयं उत्पन्न होते हैं। शिलरने किसी यूनीवर्सिटीकी कोई बड़ी 'डिगरी' प्राप्त नहीं की। इनके पिताने चाहा था कि ये वकील होकर धन और कीर्ति प्राप्त करें; परन्तु उनकी यह आशा पूरी नहीं हुई। शिलरका जी वकालतमें नहीं लगा, इसलिये इन्होंने उसे छोड़कर डाक्टरी पढ़ना शुरू कर दिया; परन्तु उसमें भी इनका जी न लगा और ये विद्यार्थी-जीवनसे छुट्टी लेकर २१ वर्षकी अवस्थामें उर्टमवर्गके ड्यूककी फौजमें भर्ती हो गये।

जिस समय ये डाक्टरी पढ़ते थे, उस समय १८ या १९ वर्षकी अवस्थामें, इनकी सबसे पहली कविता एक समाचारपत्रमें प्रकाशित हुई और वह लोगोंको इतनी पसन्द आई कि उस पत्रकी हजारों प्रतियाँ केवल इस कविताके कारण खप गईं।

शिलर जिस समय अपने आगामी जीवनके लिए विचार-सामग्री जुटा रहे थे, उस समय फ्रान्समें अराजकताके भावोंका जोर था और फ्रेञ्च लेखक अपने देश-वासियोंके विचारोंमें महान् क्रान्तिका बीज बो रहे थे। उनका साहित्य प्रजाके विचारोंमें उथल पुथल मचा रहा था। केवल फ्रान्समें ही नहीं, उसके आसपासके देशोंमें भी उनके विचारोंकी लहरें जा पहुँची थीं। शिलर भी उनसे नहीं बचे। उन्होंने भी रूसो, मारो, डाँटो आदि फ्रेन्च लेखकोंके ग्रन्थोंका अध्ययन किया और इस नई लहरसे अपने विचारोंको संस्कृत किया। इससे वे मनोवृत्तियों और मनोविज्ञानके गूढ सिद्धान्तोंसे भी बहुत कुछ परिचित हो गये। उनके ग्रन्थोंमें जो मनुष्यके स्वभावों और उनकी विभिन्न चेष्टाओंका सुन्दर चित्रण दिखलाई देता है, वह इसी अध्ययनका परिणाम है।

फौजी नौकरी करते समय उन्होंने अपना सबसे पहला नाटक 'दि रावर' (डाकू) लिखा। उर्टमवर्गके ड्यूककी नौकरीमें उन्हें राज-दर्बारों, दर्बारियों

और अमीरोंके चरित्र और रहस्य जाननेका अच्छा सुभीता मिल गया था, इससे उन्हें अपनी रचनाओंको लोकप्रिय बनानेमें बहुत सहायता मिली। 'द्रि रावर' सबसे पहले सन् १७८२ में मैनहमकी शाही रंग-शालामें अभिनीत हुआ; परन्तु उसे देखनेके लिए सर्वसाधारणको आज्ञा नहीं मिली, यहाँ तक कि स्वयं शिलर भी देखनेकी आज्ञा न पा सके। केवल दर्बारी अमीर ही उसके दर्शक बन सके। उक्त नाटकमें अमीरों और राजाओंके अत्याचारों तथा विषय-लम्पटताओंका अच्छा खाका खींचा गया है, इसी कारणसे सर्वसाधारणको उसके देखनेकी रोक कर दी गई थी।

इस कठोर राजाज्ञाके होते हुए भी शिलर किसी तरह छिप छिपाकर अपने नाटकका अभिनय देखनेके लिये जा पहुँचे। उन्होंने देखा कि नाटकको लोगोंने बहुत ही पसन्द किया है और चारों ओरसे उसकी प्रशंसा हो रही है। इससे उनका उत्साह बढ़ गया और वे एक दूसरा नाटक लिखनेके लिये तैयार हो गये। इस दूसरे नाटकका नाम 'फिस्को' है। यह भी शाही थियेटरमें खेला गया और इसके देखनेके लिये भी कविको गुप्तरूपसे वहाँ जाना पड़ा। परन्तु अबकी बार वे पकड़ लिये गये और १५ दिनके लिये जेलकी हवा खानेको भेज दिये गये। साथ ही इस बातकी सख्त आज्ञा दे दी गई कि न आगे वे कोई नाटक लिखें और न उर्टमवर्गके किसी नागरिकसे मिलें!

इस तरह जब शिलरकी सारी मनुष्योचित स्वतंत्रता हरण कर ली गई और उनकी कलम तथा ज़बानपर ताला डाल दिया गया, तब वे उक्त अन्यायी राज्यसे भाग निकलनेकी चिन्ता करने लगे। आखिर सन् १७८२ ईस्वीमें उन्होंने उर्ट-मवर्ग छोड़ दिया।

कुछ समयतक जीविकाकी चिन्तामे इधर उधर भटकनेके बाद उन्हें 'अग्गर शहन' नामक स्थानमें आश्रय मिला और वहीं रह कर उन्होंने 'लुइजे मिलिरन' (प्रेम-प्रपञ्च) नाटक निर्माण किया। एक और नाटक 'डान कारलोज' का प्रारंभ भी इस स्थान पर किया गया; परन्तु वह पूरा न हो सका।

मनुष्यके दिन सदा एकसे नहीं रहते। अब शिलरकी भी अर्थचिन्ता कम हो गई और वे १७८३ में 'मैनहम' की नाटक-कम्पनीके मुख्य नाट्यकार नियत हो गये। यद्यपि उक्त कम्पनी अर्थाभावके कारण उन्हें काफ़ी वेतन न दे सकती थी; फिर भी उसके सम्बन्धसे इनका नाम देशव्यापी हो गया। धीरे धीरे कम्प-नीकी आर्थिक अवस्था भी सुधर गई और शिलरके कारण वह एक सुप्रसिद्ध

नाटक-कम्पनी बन गई । इस कम्पनीने सन् १७८४ में 'लुइजे मिलिरन (प्रेम-प्रपञ्च) और 'फिस्को' नाटकोंको खेला । दर्शकोंने उन्हें बहुत ही पसन्द किया और लोगोंके हृदयमें शिलरकृत नाटक देखनेका चाव बहुत ही बढ़ गया ।

इसी समय शिलरने एक 'छिरेकिश' नामक पत्रिका निकाली, जो इनके नाटकोंकी प्रसिद्धिके कारण खूब चल निकली । अब शिलरकी प्रतिष्ठा बढ़ने लगी । सर्वसाधारणके अतिरिक्त राजा और रईस भी उनका काफ़ी सम्मान करने लगे; यहाँ तक कि वाइमरके गुणग्राही ड्यूकने उन्हें 'रैट' की सम्मानित पदवीसे विभूषित कर दिया ।

सन् १७८५ की ग्रीष्ममें शिलरको उनके चार मित्रोंने निमंत्रित किया और यह पूरी ग्रीष्मऋतु उन्होंने अपने उक्त मित्रोंके यहाँ ही बड़े आनन्द और विनोदमें व्यतीत की । उनकी 'ओड एन डी फ्रायडे' नामक कवितामें इस आनन्द और विनोदकी छाया स्पष्ट दिखलाइ देती है ।

ग्रीष्मके अन्तमें वे अपने 'कोर्यनर' नामक मित्रके साथ भ्रमण करनेके लिए निकले और जर्मनीके अनेक स्थानोंमें घूमते रहे । इस भ्रमणमें उन्होंने 'डान कारलोज' नाटकको समाप्त किया और एक और नाटक तथा उपन्यासकी रचना की ।

कोर्यनर दार्शनिक थे । उनकी संगतिसे शिलरकी रुचि दर्शनशास्त्रकी ओर आकर्षित हो गई और वे दर्शनशास्त्रका अध्ययन करने लगे । इस विषयमें उन्होंने इतनी योग्यता प्राप्त कर ली कि कुछ ही समयके पश्चात् उन्होंने 'फिलासफ़ी ब्रेफ़े' नामक ग्रन्थकी रचना करके लोगोंको चकित कर दिया । इस रचनासे जर्मनीके बड़े बड़े विद्वानोंका ध्यान उनकी ओर आकृष्ट हो गया ।

सन् १७८९ में वे वाइमर नगरमें पहुँचे । यद्यपि उस समय वहाँ वाइमरके ड्यूक और महाकवि गेटे उपस्थित न थे, फिर भी उनके आदर-सत्कारमें कोई त्रुटि नहीं रही । स्वयं डचेजने और अन्य राज-कवियोंने उनका हृदयसे स्वागत किया । इस स्थानमें कुछ समय तक रहनेके बाद उन्होंने एक रूपवती युवतीके साथ विवाह कर लिया । विवाहके समय ड्यूक और महाकवि गेटेने शिलरको बहुत बहुत बधाई दी ।

'डान कारलोज' का प्लाट तयार करते समय शिलरको इतिहासका भी थोड़ासा अध्ययन करना पड़ा और उसी समयसे उनकी रुचि इतिहासके अध्ययनकी ओर भी

प्रबल हो उठी। इसका फल यह हुआ कि वे इतिहासके धुरंधर पण्डित बन गये। उन्होंने 'स्पेनके अधीन नैदरलेण्ड' नामका इतना अच्छा इतिहासग्रन्थ लिखा कि सर्वसाधारणसे लेकर विद्वान् तक उन्हें महान् इतिहासवेत्ता मानने लगे। इसी समय सन् १७८९ में महाकवि गेटेकी सिफारिशसे वे 'येना' के सुप्रसिद्ध विश्व-विद्यालयके प्रोफेसर नियुक्त हो गये। इस विश्वविद्यालयमें काम करते हुए इन्होंने और भी कई इतिहासग्रन्थ लिखे जिनमें '३० वर्षीय महायुद्ध' अधिक प्रसिद्ध है।

सन् १७९१ में ये बीमार पड़ गये और तब इनकी आर्थिक अवस्था बहुत ही शोचनीय हो गई। उस समय इन्हें प्रिन्स आफ होलिस्टाइन और उनके मंत्रीद्वारा जो थोड़ीसी वार्षिक वृत्ति मिलती थी, उसीपर अपनी गुजर करनी पड़ी। यह वृत्ति इन्हें लगातार तीन सालतक मिलती रही। इस बीचमें—इस आपत्ति-कालमें भी—इन्होंने दर्शनशास्त्रका खूब अध्ययन किया और अपनी योग्यता बहुत बढ़ा ली। उस समय पाश्चात्य दार्शनिकशिरोमणि काण्टकी कीर्ति-कौमुदी चारों ओर फैल रही थी और उनके अनुयायियोंकी संख्या बढ़ रही थी। शिलरने भी इसी समय अपने दार्शनिक विचारोंकी सुप्रकाशपूर्ण रश्मियाँ फैलानी शुरू कीं और अपनी सरस तथा सरल भाषाके द्वारा लोगोंके हृदयमें अधिकार जमा लिया। थोड़े ही समयमें इनके कई दार्शनिक ग्रन्थ प्रकाशित हो गये और तब काण्टके साथ इनकी घनिष्ठ मित्रता हो गई। दोनोंमें दार्शनिक सिद्धान्तोंपर विचार-विनि-मय भी होने लगा।

जब शिलरके दार्शनिक, ऐतिहासिक, नाटक और काव्य-ग्रन्थ गेटेकी नजरसे गुजरे, तब उनके हृदयमें भी शिलरके प्रति एक महान् प्रेम उत्पन्न हो गया और वे अन्त तक शिलरको अतिशय आदरकी दृष्टिसे देखते रहे। उस समय गेटे संसारके बहुत बड़े कवि और विद्वान् गिने जाते थे। उनके द्वारा शिलरका आदर होना इस बातका प्रमाण है कि शिलर वास्तवमें कविशिरोमणि और महान् विद्वान् थे। गेटे अपनी उच्च कोटिकी कविताओंको शिलरकी 'डि होरेन' नामक पत्रिकामें ही प्रकाशित कराते थे। शिलरने भी एक जगह लिखा है कि मेरे जीवनकी सबसे अधिक मूल्यवान् और आनन्ददायक घटना महाकवि गेटेसे मित्रता स्थापित होना है।

इधर कुछ समयसे शिलरका झुकाव दर्शन शास्त्रकी ओर अधिक हो गया था; परन्तु गेटेके सत्सङ्गने उन्हें फिर साहित्य और काव्यकी ओर आकर्षित कर लिया।

यह गेटेके ही सत्संगका प्रभाव था जो उन्होंने साहित्यका सर्वाङ्गीण ज्ञान प्राप्त किया और इस विषयपर एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखा जिसे जर्मन-प्रजा विवादास्पद विषयोंका निर्णय करनेमें आज भी प्रमाणभूत मानती है। इसी समय शिलरने वे भावपूर्ण कवितायें लिखीं जो जर्मन-साहित्यमें अनुपमेय हैं।

शिलरकी रचनायें दो भागोंमें विभाजित की जा सकती हैं। पूर्वभागमें वे सब ग्रन्थ और कवितायें हैं जिनका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। इसके बाद उनके जीवनका उत्तर-युग आरंभ होता है। इस युगमें जो ग्रन्थ निर्माण हुए हैं, वे इतने उत्तम हैं कि संसारमें अपनी उपमा आप ही हैं। इस युगके उनके विभिन्न ग्रन्थोंके देखनेसे विदित होता है कि वे एक सिद्धहस्त नाट्यकार ही न थे, वरन् उत्तम कवि, श्रेष्ठ इतिहासज्ञ, प्रखर दार्शनिक और महान् तत्त्वदर्शी विद्वान् थे। अपने 'वैलेट' नामक काव्यमें उन्होंने जिस प्रतिभा और कवित्वशक्तिका परिचय दिया है, वह असाधारण है। इसके प्रभावसे वे समस्त यूरोपमें निर्विवाद रूपसे महाकवि मान लिये गये।

शिलरके ग्रन्थोंकी भाषामें विशेषता है। वह इतनी सरल, सरस, हृदयग्राही और प्रभावोत्पादक है कि पाठकोंके हृदयपर तत्काल ही अधिकार कर लेती है। चरित्र-चित्रणमें तो उन्होंने कमाल कर दिया है। वे इस विषयमें बेजोड़ हैं।

सन् १७९९ में इनका 'वालेन स्टाइन' नामक विशाल ऐतिहासिक नाटक तीन भागोंमें प्रकाशित हुआ और यह इतना लोकप्रिय हुआ कि थोड़े ही समयमें यूरोपकी प्रायः सारी भाषाओंमें अनुवादित हो गया। शिलर इस कृतिसे प्रथम श्रेणीके नाट्यकार कहलाने लगे।

शिलरने अपने अन्तिम समयमें मौलियर जैसे प्रसिद्ध नाट्यकारों और लेखकोंके कई ग्रन्थोंका जर्मन भाषामें अनुवाद किया और कई मौलिक नाटकोंकी भी रचना की, जिनमें 'विलियम टेल' और 'जौन आफ आर्क' बहुत प्रसिद्ध हैं।

पिछले दिनोंमें शिलरका स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया था—वे प्रायः ही बीमार रहते थे। इस समय उनकी इच्छा हुई कि मैं महाकवि गेटेके सहवासमें रहूँ तो बहुत अच्छा हो। इसी सदिच्छासे प्रेरित होकर वे 'वाइमर' नगरमें जा बसे और गेटेकी संगतिसे अपनी रुग्णावस्थामें भी प्रसन्नतापूर्वक रहने लगे। अन्तमें सन् १८०५ में वह दिन आगया जब कि महाकवि शिलर इस संसारको छोड़कर चल बसे। सारी जर्मनीमें उनकी मृत्युका शोक मनाया गया और प्रत्येक श्रेणीके लोगोंने उनके गुणोंका बखान किया।

शिलर एक नीतिपरायण और उच्च विचारोंसे विभूषित महापुरुष थे। उनके ग्रन्थोंने जर्मन-जातिके चरित्र-गठनमें बहुत सहायता पहुँचाई है।

अनुवाद और रूपान्तर

यह ग्रन्थ महाकवि शिलरके 'लुइज़े मिलिरन' अथवा 'काबेल उण्ड लीब' (Luise Millerin or Kabale und Liebe) का हिन्दी रूपान्तर है। जहाँतक मैं जानता हूँ, हिन्दीमें अभी तक शिलरके किसी भी ग्रन्थका अनुवाद प्रकाशित नहीं हुआ है जब कि संसारकी प्रायः सभी प्रौढ़ भाषाओंमें शिलरके मुख्य मुख्य ग्रन्थोंके अनुवाद हो चुके है—यहाँतक कि इस देशकी मराठी जैसी प्रान्तीय भाषाओंमें भी शिलरके कई ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके है। मैं हिन्दीके लेखकों और प्रकाशकोंका ध्यान इस ओर विशेष रूपसे आकर्षित करता हूँ।

पाठक यह जानकर आश्चर्य करेंगे कि मैंने यह ग्रन्थ मूल जर्मन या अँगरेजी से न लिखकर फारसी अनुवादके सहारे लिखा है। मैंने इसका अँगरेज़ी अनुवाद भी पढ़ा है, परन्तु वह मुझे फारसी अनुवादसे अच्छा न जान पड़ा, इसलिए मैंने इसे फारसीके आधारसे लिखना ही उचित समझा। यह फारसी अनुवाद तेहरान (ईरान) की एक पब्लिशिंग कम्पनीने 'ख़ुद ओ इश्क' के नामसे प्रकाशित किया है जो मूल जर्मनका अविकल अनुवाद है और बहुत ही अच्छा है।

फारसी हम लोगोंके लिये बहुत ही परिचित भाषा है, फिर भी हम लोग उसके द्वारा अपने साहित्यकी पुष्टि करना आवश्यक नहीं समझते। शायद इसका कारण यह है कि हम लोग पुरानी फारसीको ही फारसी साहित्य मान बैठे हैं और उस नवीन फारसीसे बिल्कुल ही परिचित नहीं हैं जो इस समय बड़ी तेजीसे नाना विषयोंसे विभूषित हो रही है। ईरान (फारस) में फारसी एक नया ही रूप धारण कर रही है और उसके प्रायः सभी अंगोंकी पुष्टि हो रही है। इस नवीन फारसीको हमारे यहाँके पुराने खयालोंके मौलवी और मुल्ला शायद अच्छी तरह समझ भी न सकेंगे।

इस नाटकका 'प्रेम-प्रपञ्च' नाम मूल 'काबेल उण्ड लीब' और फ़ारसी 'ख़ुद ओ इश्क' का शुद्ध शब्दानुवाद है। फ़ारसी लेखकने मूल ग्रन्थका केवरी अनुवाद किया है; परन्तु मैंने थोड़ासा रूपान्तर करना उचित समझा है। मेरी

समझमें अभी हिन्दीके पाठकोंकी रुचि ऐसी नहीं हुई है कि वे विदेशी नाटक-उपन्यासोंको उनके असली रूपमें पढ़कर यथेष्ट आनन्द लाभ कर सकें। विदेशी नाम, विदेशी रीति-रवाज और विचार उन्हें कुछ अटपटेसे मालूम होते हैं और उनके चित्तपर कुछ गंभीर प्रभाव नहीं डाल सकते। इसी लिये मैंने जर्मनीके पात्रोंको भारतीय जामा पहनानेका प्रयत्न किया है। ऐसा करते हुए जहाँ तक बन सका है, मैंने ग्रन्थकर्ताके प्रधान भावोंको सुरक्षित रक्खा है, केवल गौण भावोंमें ही कुछ परिवर्तन किया है और सो भी उन्हीं स्थानोंपर जहाँ तक भारतीय भावोंके साथ बिल्कुल ही विरोध आता था। मालूम नहीं, मुझे इस प्रयत्नमें कहाँ तक सफलता मिली है और पाठक इसे पसन्द करेंगे या नहीं।

अन्तमें मैं अपने परम मित्र मौलवी अब्दुल बाकी साहब एच० पी० को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने नवीन फारसीके इस 'ख़द ओ इश्क़' का वास्तविक अभिप्राय समझनेमें मुझे बहुमूल्य सहायता दी है। इस विषयमें मैं उनका चिरकृतज्ञ रहूँगा।

लखनऊ,
१ जनवरी, १९२७।

निवेदक—
रामलाल अग्निहोत्री।

नाटक-पात्र ।

पुरुष ।

मदनमोहन	...	...	मंत्रीका लड़का ।
कृष्णकुमार	...	...	मंत्री, मदनमोहनका पिता ।
मोतीलाल	...	...	मंत्रीका लेखक (मुंशी) ।
माधवप्रसाद	...	...	विमलाका पिता (प्रसिद्ध गवैया) ।
वीरेन्द्रविक्रम	...	...	सेनापति ।

पुलिसके सिपाही, मंत्री तथा मुसाहिब लोग ।

स्त्री ।

विमला ...	...	...	माधवप्रसादकी लड़की ।
यशोदा ...	...	...	माधवप्रसादकी स्त्री ।
कमला ...	...	...	महाराजकी उपपत्नी ।
चम्पा ...	...	...	कमलाकी सखी ।
निर्मला ...	...	...	विमलाकी सहेली ।

परिचारिकायें ।

प्रेम-प्रपञ्च।

पहला अंक।

पहला दृश्य।
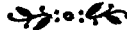
स्थान—माधवप्रसादके घरका एक कमरा।

समय—प्रातःकाल।

[माधवप्रसाद तथा उसकी स्त्री यशोदा दोनों बैठे हैं।]

माधव०—तुम कान खोल कर सुन लो, मैं तुमसे कहे देता हूँ कि भण्डा फूट गया। सारा शहर विमला और मदनमोहनकी ही चरचा कर रहा है। मदनमोहनके आने जानेकी बात उसके पिता तक अवश्य पहुँचेगी। हमें उचित है कि हम मदनमोहनसे कह दें कि अबसे वह हमारे यहाँ न आया करे।

यशोदा—ऐसी कौनसी घटना हो गई है, जो तुम इस प्रकार व्याकुल हो रहे हो? इतनी व्याकुलता और निराशा किस लिये है? तुम मदनमोहनको जबरदस्ती तो अपने घर लाते नहीं; वह स्वयं अपनी इच्छासे आया करता है।

माधव०—हाँ! हाँ!! वह आता है गान-विद्याकी शिक्षा प्राप्त करनेके लिये; न कि विमलासे प्रेम करने और उसको कुदृष्टिसे देखनेके

लिये। मुझे उचित था कि जिस दिन मुझको इस अनुचित प्रेम-मय सम्बन्धका समाचार ज्ञात हुआ था और मैंने जान लिया था कि पारस्परिक अनुराग अपना रंग चढ़ाता जाता है, उसी दिन मैं उसके पिताके पास जाकर, उन्हें इन सब बातोंकी पूरी पूरी सूचना दे देता। वे मदनमोहनको उचित शिक्षा या दण्ड देते और समझा देते कि फिर कभी हमारे यहाँ न आवे। इधर विमलाको हम कुछ दिनोंके लिये लखनऊ या कानपुर भेज देते। इस प्रकार हम भली भाँति निश्चित हो जाते। परन्तु अब, जब कि बात बढ़ गई है, और सर्व साधारणके कानों तक पहुँच चुकी है, सम्भव है कि हमारे दुःख-सागरमें ज्वार आ जाय। अब देखना है कि यह बिजली कहाँ गिरती है। यह तो सम्भव नहीं कि मंत्रीके भव्य-भवनको उससे कुछ हानि पहुँचे; यह प्रज्वलित अग्नि मुझ दुखियाहीकी पर्ण-कुटीको जलावेगी और मेरे जीवन तथा मेरी सुख-सामग्रीका नाश कर डालेगी।

यशोदा—आप अपने मनमें क्यों ऐसे बुरे विचारोंको लाते हैं? भला, इससे हमको क्या हानि या कष्ट पहुँचेगा? तुम्हारा व्यवसाय है गाना सिखलाना। जो तुमसे सीखना चाहता है, उसे तुम सिखलाते हो। तुम्हीं बताओ, क्या यह उचित होता कि तुम मंत्रीके पुत्रको रोक देते और उसे शिक्षा न देते? क्या इसी लिये कि वह लड़का सुन्दर और धनी है, तुम उसको जवाब दिये देते हो? यदि तुम ऐसा करोगे तो तुम्हारी तुच्छता प्रकट होगी, सब लोग तुम्हें महा मूर्ख समझेंगे।

माधव०—नहीं, नहीं, यही काम बुद्धिमानीका होगा। भला, इससे हमको लाभ ही क्या पहुँचता है? मैं जानता हूँ कि वह मेरी कन्यापर अनुराग रखता है। मैंने उसकी चाल-ढाल तथा बोल-चालसे भी उसकी हार्दिक इच्छा तथा वासनाका अनुमान कर लिया है। तुम यह

भी याद रक्खो कि वह मंत्रीका लड़का प्रतिष्ठित और वैभव-सम्पन्न होते हुए भी हमारी लड़कीका पति न हो सकेगा।

यशोदा—तुम्हारे मनमें यह विचार कहाँसे आकर भर गया है ?

माधव०—मैं नहीं जानता था कि तुम इतनी मूर्ख हो गई हो!

यशोदा—मदनमोहनने तो वचन दे दिया है कि वह विमलासे ही विवाह करेगा।

माधव०—वाह! अच्छा वचन-दान है और तुम्हारा विचित्र अनुमान है। इन बातोंसे हम प्रसन्न हो जायँ और निश्चिन्त हो कर सोयें, यह कदापि नहीं हो सकता। क्या तुम जानती हो कि उसने इस अनुनय-विनय और वाक्पटुताके बदले, विमलासे क्या माँगा होगा ? देखो समझदारी और दूरदर्शिताको हाथसे न छोड़ो। ईश्वरके यहाँ लड़कियाँ अपने सतीत्व और चरित्रकी पवित्रताकी उत्तरदात्री होती हैं। जो अवगुण उनके सतीत्वको कलुषित करेगा, उसका फल माताओंको भुगतना पड़ेगा। यह युवक तुम्हारी आँखोंके सामने उसके हृदयमें कुसंस्कारका बीज बो रहा है और उसको पाप-पूर्ण कार्य करनेकी प्रेरणा कर रहा है। तुम नहीं जानतीं कि एक दिन ऐसा होगा जब तुम अपनी बेटीको रोते देखोगी और रोनेका कारण पूछनेपर वह उत्तर देगी कि मेरे प्रेमीने—जो मुझपर आसक्त था, मुझसे अनुराग करता था—मुझे धोखा दिया और छोड़कर चला गया। हे ईश्वर! अच्छा होता यदि उसका अभाग्य यहीं तक परिमित रहता! किन्तु नहीं, आगे चल कर तुम फिर किसी दिन सुनोगी कि उसकी मान मर्य्यादाका भी नाश हो गया और वह अप्रतिष्ठा तथा बदनामीके गहरे और अँधेरे गढ़ेमें गिर पड़ी है।

यशोदा—उन आपत्तियोंसे ईश्वर बचाये।

माधव०—ईश्वर तो बचायगा ही; किन्तु हमें भी उचित है कि इस बदनामीसे बचें। अबकी यदि मदनमोहन आवेगा, तो मैं द्वारकी ओर सङ्केत करके कहूँगा कि बढ़ईने यह द्वार उन लोगोंके लिये बनाया है, जो अच्छे भावोंसे मेरे घर आया करते हैं। परन्तु जो कुइच्छायें साथ लेकर आते हैं उन्हें चाहिये कि वे इस मार्गसे लौट जायँ और फिर यहाँ आनेका अनुचित साहस न करें। यह द्वार फिर न खोला जायगा।

यशोदा—खूब सोच लो कि इस कार्यसे तुम केवल मंत्रीके लड़-केको ही अपना शत्रु न बना लोगे, बल्कि अपनी जीवन-सम्पत्तिका भी नाश कर लोगे।

माधव०—क्या तुम डरती हो कि मत्रीका लड़का यदि हमारे यहाँ न आवेगा, तो हमारी रोटी न चलेगी? धिक्कार है ऐसे जीवनपर, जिससे अपनी पुत्रीके सतीत्व-कलेवरपर कलङ्क लगे! जगदीश अपने दासोंकी प्रतिदिन खबर लेता है। कोई भूखों नहीं मरता। मुझे यह स्वीकार है कि प्रत्येक मनुष्यके सम्मुख भिक्षुक बनकर, अपना हाथ फैलाऊँ, बाजारों और गलियोंमें गाता फिरूँ और आनेजानेवालोंसे भीख माँगूँ। किन्तु उस दशामें भी मैं अपना अपमान करनेके लिये मदनकी अशर्फियोंकी थैली तक न छूँगा। हर तरहका कष्ट और परिश्रम, जो ध्यानमें आ सकता है, मेरे लिये इससे कहीं अधिक सहज और सह्य है। और यदि इस प्रकार भी मैं विफल-मनोरथ रहा, तो इस बाजेको, जो चालीस वर्षसे मुझे दुरवस्था तथा दुर्दिनमें ढारस बँधाता और मेरा मनोरञ्जन करता रहा है, त्याग दूँगा और तब लोग भी जान

लेंगे कि मैंने इस अभागे व्यवसायको छोड़ दिया है। कदाचित् इस यत्नसे मैं अपनी प्यारी बेटीको, नेकनामी और उच्चादर्शके सुदृढ़ कोटमें सुरक्षित रख सकूँ। विमलाकी माँ, मुझे यह आशा न थी कि मैं ये बातें तुम्हारे मुँहसे सुनूँगा। इन तीस वर्षोंमें—जो मैंने तुम्हारे साथ व्यतीत किये हैं—मैं सदा तुमको सती, साध्वी समझता रहा हूँ। किन्तु अब मैं देखता हूँ कि................

यशोदा—यदि तुम उन पत्रोंको देखते जो मदनने विमलाको लिखे हैं, तो समझ जाते कि उनका प्रेम सारे अवगुणोंसे रहित और पवित्र है।

माधव०—हाँ हाँ! अनुरागका आरंभ इसी रीतिसे हुआ करता है। बहुत दिनोंतक प्रेमी परस्पर मित्रता और अनुरागका दम भरते हैं और मनोहर प्रेम-वचनोंसे एक दूसरेको सन्तुष्ट करते हैं; परन्तु कुछ ही समयके पश्चात्, ये सब बातें काफ़ूर हो जाती हैं। उस फूली फली प्रेम-वाटिकाकी शोभा नष्ट हो जाती है। भौंरे पुष्प-रहित पौधेपर ध्यान नहीं देते; वे तो किसी न किसी नई कलीको खोजकर उसपर मँडराने लगते हैं।

यशोदा—तुम तो सठिया गये हो। मैं नहीं जानती कि तुम आज इस कार्य्यपर क्यों इतना पश्चात्ताप कर रहे हो।

माधव०—तुम चाहती हो कि मैं तुम्हें इसका कारण बता दूँ। अच्छा सुनो, आज मोतीलाल, जो मंत्रीके मुंशी हैं, मुझसे मिलने आवेंगे। ये वे ही महाशय हैं जिनके साथ गतवर्ष, विमलाका विवाह कर देना निश्चित हो गया था। कदाचित् इस बातको तुम न भूली होगी।

यशोदा—तो क्या तुम चाहते हो कि लड़की मोतीलालको दे दी जाय, जो मंत्रीका एक साधारण सेवक है ?

माधव०—पहले तो मोतीलाल मंत्रीके सेवक नहीं, लेखक या मुंशी हैं। दूसरे वे मंत्रीके प्रतिष्ठित मित्रोंमें गिने जाते हैं।

यशोदा—बहुत खूब ! क्या अच्छी समझ है ! क्या मुंशीका पद सेवक-वाची नहीं है ?

माधव०—नहीं, नहीं, कदापि नहीं !

यशोदा—सुनो, अपने सेवकों और अधीनोंसे स्वामीकी मित्रता और घनिष्ठता सदा इस कारण हुआ करती है कि उसका कोई न कोई रहस्य उस मित्रता और घनिष्ठतामें छिपा हुआ रहता है। अबसे पन्द्रह वर्ष पूर्व, राजाके अन्तःपुरके मंत्रीके पदपर ये लाला कृष्णकुमारजी नियत हुए थे। राज्यका प्रबन्ध भी इन्हें सौंपा गया था। तुम जानते हो कि पूर्व महाराजकी मृत्युके सम्बन्धमें, लोग क्या क्या कहते थे और कैसे कैसे लाञ्छन वर्तमान महाराजपर लगाते थे।

माधव०—चुप रहो; तुम्हें अपने मुखसे ऐसी बातें न निकालना चाहिये। तुमको किसीके गुप्त-कार्यों और राजनीतिक दाव-पेचोंपर आक्षेप करनेसे मतलब ? यही धृष्टता क्या कम है कि तुम निष्प्रयोजन बक-वाद कर रही हो और अपना कथन सिद्ध करनेके लिये अज्ञात घटना-ओंका प्रमाण देती हो। जाओ, यहाँसे उठो, मेरे कपड़े ला दो। मेरा पड़ोसी बुद्धिमान् तथा अनुभवी मनुष्य है। मैं उससे जाकर सलाह करता हूँ और उसकी राय लेता हूँ। वह देखो, मुंशी मोतीलाल आते हैं। ऐसा न हो, कि तुम नासमझीकी बातें करके उन्हें मेरा शत्रु बना दो।

[मोतीलालका प्रवेश ।]

माधव०—आइये मुंशीजी, आप तो गूलरके फूल हो गये। हम लोगोंको तो आप बिल्कुल ही भूल गये। हमने तो समझ लिया था कि आपने हमें अपनी मित्रमण्डलीसे ही अलग कर दिया है।

मोती०—यदि आप कहें तो मैं निवेदन करूँ कि मैं आपसे क्यों कम मिला करता हूँ। सच बात तो यह है कि आज कल आप एक बड़े आदमीको गाना सिखलाते हैं, ऐसी दशामें कदाचित् मेरा आना आपको अच्छा न माऌम हो।

यशोदा—आप ऐसी गूढ़ बातें क्यों कर रहे हैं? हमारे यहाँ मदन-मोहन कभी कभी आ जाता है; परन्तु हम अपने पुराने व्यवहार केवल इसी कारण नहीं छोड़ सकते।

माधव०—(आश्चर्य्यपूर्वक) हें! यशोदा, तुम खड़ी खड़ी देख रही हो! जाकर मुँशी मोतीलालके लिये कुर्सी ले आओ।

(यशोदा कुर्सी लाकर रख देती है, मोतीलाल उस पर बैठ जाता है।)

मोतीलाल—कहिये, विमलाके विषयमें फिर आपने क्या निश्चय किया?

यशोदा—किस बातका निश्चय?

माधव०—अरी नासमझ........

मोती०—यही, उसके विवाह-सम्बन्धका।

यशोदा—अभी वह समय नहीं आया है कि हम लोग इस बात-पर अच्छी तरह विचार कर सकें।

माधव०—अरी! तू चूप भी होगी या नहीं?

मोती०—कृपा करके आप अपना मतलब विस्तारपूर्वक प्रकट कीजिये।

यशोदा—यह तो ऐसी गंभीर बात नहीं है जिसमें विस्तारकी आवश्यकता हो। मतलब यह है कि उत्तम उत्तम है और अति उत्तम अति उत्तम, और उत्तम प्रत्येक दशामें अति उत्तमसे घट कर होता है।

मोती०—आपका कथन मेरी समझमें बिल्कुल न आया।

यशोदा—माताओंको उचित है कि वे अपनी बेटियोंकी सम्पन्नता, समृद्धता तथा सौभाग्य-संपादनमें हर प्रकारसे, यत्नपूर्वक, सहायता करें और अपनी सन्तानकी सुशिक्षामें बाधा न डालें। इस संसारमें मेरे केवल एक ही बेटी है। मैं चाहती हूँ कि उसको सौभाग्यवती और सम्पन्न देखूँ। सो अब यदि ईश्वरने चाहा; तो मेरी बेटी........

माधव०—इस जिह्वाको सर्प डस ले। अरी मूर्खे! चुप रह। क्या तू मुझे क्रोध दिलाना चाहती है? मैं बाजा उठाकर तेरे मुँहपर मार बैठूँगा। मुंशी मोतीलालजी, आप इसकी बातोंपर ध्यान न दीजिये! (यशोदासे) तू यहाँ बैठी क्यों है? रसोई-घरमें जाकर अपना काम देख! भोजनका समय निकट आ गया है, दस बजा चाहते हैं।

यशोदा—मैं जाती हूँ; परन्तु जो कुछ मुझे कहना था, वह मैंने कह दिया। यह काम कदापि न होगा। [प्रस्थान।

मोती०—महाशय, मुझे यह आशा न थी कि आप मेरा आदर सत्कार इस प्रकार करेंगे।

माधव०—आपने स्वयं देख लिया है कि इसमें मेरा कोई अपराध नहीं है।

मोती०—आज तक मैंने आपका कथन विश्वसनीय समझा है। मैं मदनमोहनके समान वैभवसम्पन्न और जागीरदार नहीं हूँ, इस लिये वह मुझसे विशेषता रखता है। फिर भी मैं इस अपमानके योग्य

नहीं हूँ। मैं भी एक उच्च-पदपर नियत हूँ। जो वेतन मुझे प्राप्त होता है, उससे मैं भलीभाँति अपने बालबच्चोंका पालन कर सकता हूँ। इसके अतिरिक्त मंत्रीके सेवकोंमें सबसे प्रथम स्थान और मान मेरा है। मैं उनका विश्वास-पात्र और उनके रहस्योंको जाननेवाला सेवक हूँ। सम्भव है कि बहुत शीघ्र ही उनकी संगति, सहायता और प्रेरणासे मैं और भी उच्चाधिकार प्राप्त कर लूँ। मेरे विचार सुसंस्कृत और उच्च हैं। मुझे शोक है कि इस छोकरेने आपको धोखा दिया!

माधव०—नहीं मुंशीजी, आपको केवल सन्देह हो गया है। मुझे किसीने कभी धोखा नहीं दिया। इस कथनकी पुष्टिमें इससे अधिक दृढ़ और क्या प्रमाण होगा कि गत वर्षसे अब तक मैंने इस प्रश्नको स्थगित ही रक्खा है? अब मैं अपना पुराना वचन पुनः आपके सम्मुख नवीन रूपसे दोहराता हूँ। इसमें सन्देह नहीं कि मैंने आपको वचन दे दिया है कि अपनी बेटीका ब्याह आपसे कर दूँगा और इस परिणयसे मैं अत्यन्त प्रसन्न होऊँगा। किन्तु यह इस शर्तपर कि आप जिस तरह विमलाको चाहते हैं उसी तरह वह भी आपको चाहती हो। इस दशामें, मैं वचन-भङ्ग रूपी कलङ्कसे छूट जाऊँगा। यदि मुझे मालूम हुआ कि आपकी ओर वह आकृष्ट है, तो फिर विवाह हो जाना निश्चित जानिये। मैं उसके विचारोंका ज्ञान सहज ही प्राप्त कर लूँगा। परन्तु यदि वह स्वीकार न करेगी, तो फिर मुझसे इस सम्बन्धमें आप कुछ न कहियेगा। किन्तु तब आप मुझसे रुष्ट या उदासीन न हों। हमारी आपकी मित्रतामें इस घटनासे कोई बाधा न पड़े। आप जानते हैं कि मेरी बेटी सयानी हो गई है। वह आपकी स्त्री होगी और आपके सुख-दुखमें सदा साथी रहेगी। पति-पत्नीको उचित है, कि वे परस्पर सच्चा प्रेम करें। मैं जबरदस्ती अपनी बेटी क्यों ऐसे पुरु-

षको दूँ, जिससे वह प्रेम न करती हो? सब लोग कहेंगे कि कुटिल कुजाति माधवने अपनी बेटीको कूएँमें डाल दिया। मैं यह कार्य कदापि न करूँगा।

मोती०—महाशय, आपका यह बहाना युक्तिसङ्गत नहीं। यदि विमला इससे सहमत न हो, तो उसे आपकी शिक्षायें, अपना प्रभाव डाल कर मेरे अनुकूल बना सकती हैं और जब कि आप मुझे खूब जानते हैं, तब यह काम................

माधव०—राम! राम! मुझको आपकी उच्चता अथवा नीचताके जाननेसे कुछ मतलब नहीं। मैं तो यही चाहता हूँ विमला आपसे प्रेम करने लगे। मैं उस बेटीका प्रतिरोध, या प्रतिकूलता करना नहीं चाहता, जो युवावस्थाको प्राप्त हो चुकी हो और लाखों इच्छाओं और आशाओंसे अपने आपको तसल्ली देती हो। हजारों विचार उसके हृदयमें छिपे पड़े होंगे। पुरुष स्त्रियोंके मनोगत विचारोंका अनुभव कदापि नहीं कर सकता। हाँ, मैं एक काम भली भाँति जानता हूँ, जिसे लोग सङ्गीत-शास्त्र कहते हैं। जो कोई इस विद्याकी ओर आकर्षित हो, और मुझसे प्रश्न करे, मैं बिना विचारे उसको उत्तर दे सकता हूँ। परन्तु विमलाके प्रेमका, तथा उसकी इच्छाओंका, अन्दाजा लगाना जरा कठिन काम है। और विशेषत: उसके हार्दिक भाव जाननेमें तो मैं सर्वथा असमर्थ हूँ। यह काम कोई उखड़ा हुआ और बेसुरा राग तो है नहीं कि उसको तुरन्त ठीक कर दूँ। आपकी मैत्री और प्रेमके रूपमें मुझसे, जो कुछ हो सकता ह वह सब मैं करनेको उद्यत हूँ। यदि विमला राजी हो जाय, तो आपका विवाह शुभ मुहूर्त देख कर जल्दीसे जल्दी कर सकता हूँ।

मोती०—(खड़े होकर) मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। अच्छा, अब मुझे आज्ञा दीजिये। [प्रस्थान।

दूसरा दृश्य।

स्थान—माधवप्रसादका कमरा।

समय—१० बजे दिन।

[अकेला माधव वीणा बजाकर गा रहा है।]

रागिणी–भैरवी।

कभी मत सहियो जग अपमान।
दुःख द्वन्द्वकी सेना चाहे, चढ़े महा बलवान्,
विचलित हृदय कभी ना होवे, करे युद्ध घमसान ॥ कभी मत०
नर-तन मिला पुण्य कर्मोंसे, रक्खो इसका मान,
जग–पालक भगवान न विसरें, रहे निरन्तर ध्यान ॥ कभी मत०
अपने वचनोंके पालनमें, जावे चाहे जान,
अन्तकालमें मिले सौख्य यश, नर पावे निर्वान ॥ कभी मत०
जो कुछ कहें करेंगे बस वह, लाभ होय या हानि,
दृढ़प्रतिज्ञ बन छोड़ जायँगे, शुभ जाज्वल्य प्रमान ॥ कभी मत०

माधव०—(आप ही आप) आश्चर्य है कि मेरा भाषण, उसको असह्य हुआ! धर्मकी सौगन्ध, मैं अब समझा कि विमला क्यों उससे घृणा करती है। वह सत्यपर है। मोतीके मुखमण्डलपर कुटिलता और दुष्टताके चिह्न प्रकट हो रहे हैं। उस निष्प्रभ मस्तिष्क तथा भयोत्पादक स्वरूपपर वह कितना घमण्ड करता है! नीले नेत्र, लाल केश, चौड़ी चिबुक और लम्बी नाक, मूर्खता और अभाग्यकी निशानियाँ हैं। जो कोई उसके मुखको देखेगा, समझेगा कि यह भूत है, नरकसे भाग

आया है और इसने मनुष्यका जामा पहन लिया है। नहीं नहीं, मैं उसके साथ विमलाका विवाह कदापि न करूँगा।

[विमला कमरेमें आती है और पूजनके पात्रोंको एक चौकीपर रखकर दूसरी चौकीपर बैठ जाती है।]

माधव०—प्यारी बेटी, तुम कहाँसे आ रही हो ?

विमला—क्या माताजीने आपसे नहीं कहा कि मैं पूजन करनेके लिये मन्दिरकी ओर गई थी ?

माधव०—हाँ, कहा तो था; किन्तु मैं भूल गया। बेटी, मैं तुम्हारी भक्तिभावनासे बहुत प्रसन्न हूँ। सदा इसी प्रकार दृढ़ बनी रहना, जिससे ईश्वर तुममें पवित्र विचारोंका सञ्चार करे और तुम उसकी कृपाकी भागिनी बनो। (हटकर आड़में खड़ा हो जाता है।)

[निर्मलाका प्रवेश।]

निर्मला—सखी, आज मन्दिरमें बड़ी देर लगाई, क्या वहाँ मदन-मोहनका ध्यान करने लगी थीं ?

विमला—बहिन, चाहे तुम कितने ही ताने मारो और कुछ भी कहो; परन्तु मैं अब मदनमोहनको नहीं भूल सकती। मुझपर उनके प्रेमने इस प्रकार अपना अधिकार जमाया है कि म अपने आपको भी भूल गई हूँ। मेरा सारा समय पढ़ने लिखने तथा ईश्वर-पूजनमें व्यतीत होता था, किन्तु जबसे मुझे प्रेम-देवके दर्शन हुए हैं, तबसे सारे पूजा-पाठ, यम-नियमादि बिगड़ गये हैं। मैं जानती हूँ कि मैंने बुरा किया है; पर मैं विवश थी। प्रेमके अधीन होकर मुझे ऐसा करना ही पड़ा। मैं मदनके प्रेम-पाशमें फँस गई। मैंने इच्छापूर्वक अपना हृदय अर्पण नहीं किया है, जो सहज ही उसे फेर दूँ। तुम्हीं

बतलाओ, जिस समय कोई मनुष्य किसी सुन्दरचित्रको देखनेमें तन्मय हो जाता है, और कुतूहल तथा आश्चर्य्यवश चित्रकारका ध्यान भी नहीं करता है तो क्या उस समय, उसकी वह चेष्टा और असावधानी उस चित्र-विद्याविशारद चित्रकारकी निपुणताका प्रमाण नहीं देती है जिसने ऐसा सुन्दर चित्र अपनी अद्भुत लेखनी द्वारा अंकित किया है ? यदि मैं मदनमोहनके प्रेम-पाशमें बँध चुकी हूँ, तो क्या मैं उस सर्वशक्तिमान् ईश्वरका गुण-गान किये बिना रह सकती हूँ, जिसने अपनी अपूर्व सृष्टि-रचना-शक्तिसे मदन ऐसा सुन्दर और सर्वगुणसम्पन्न पुरुष उत्पन्न किया ?

माधव०—(आड़मेंसे) हाय ! मैं इसीसे तो डरता था। (सिर पकड़ लेता है)

विमला—वे लोग धन्य हैं, जो उसे दृष्टिभर देखते हैं, उसका मधुर भाषण सुनते हैं । परन्तु एक मैं हूँ कि उसके दर्शन तकसे वञ्चित हूँ । इसका केवल यही एक कारण हो तो हो सकता है कि मैं निर्धनकी पुत्री हूँ । यह न समझना कि मैं अपने दुर्भाग्यको कोसती हूँ, बल्कि मेरी हार्दिक इच्छा है कि मेरा भरण पोषण स्वतंत्रतापूर्वक मदनको करना पड़े। मैं चाहती हूँ कि अपना सारा जीवन एक साँसमें भर दूँ और उस साँसको उसके सामने ही त्याग दूँ। तत्पश्चात् ईश्वर करे कि यह रूप और युवावस्था उस पुष्पमें परिणत हो जाय, जो मदनके मार्गमें पड़ा हो। कदाचित् उसका पैर प्रेमाहतपर पड़ जाय और उसकी आत्माको शान्ति प्रदान करे—

* **बिधना मोरि समाधि अब, मित्र-बीथिमें होय ।**
पग वाको परतो रहै, रहूँ शान्तिसे सोय ॥

माधवप्रसाद—(उसी तरह गुप्तरूपसे) मुझे स्वीकार है कि मैं अभी मर जाऊँ, किन्तु ऐसी बातें तुझसे न सुनूँ ।

निर्मला—सखी, जो बातें पुरानी प्रेम-कहानियोंमें पढ़ी सुनी थीं, तुम तो उनसे भी आगे बढ़ गई। मुझे तो डर है कि कहीं तुम मदन-मोहनकी मोहिनीमें पागल न हो जाओ। पर यह तो कहो कि यदि वे तुम्हें न चाहते हों तो?

विमला—तुम नहीं जानतीं कि मदनमोहन मेरे लिये है और मैं उसके लिये हूँ। मदनमोहन मेरा सौभाग्य पूर्ण करनेके लिये ही उत्पन्न हुआ है। तुम नहीं जानतीं कि किसीके मानसक्षेत्रमें प्रेम-सम्राट् किस प्रकार पैर जमाते हैं। तुम नहीं जानतीं कि प्रेममें कैसी आकर्षण शक्ति है। जो कोई उस ओर आ निकलता है, वह सिवाय अधीनताके कोई उपाय ही नहीं कर सकता। जिस समय मैंने मदनमोहनको देखा, मुझमें एक विचित्र उत्सुकता उत्पन्न हो गई, मेरे सारे शरीरमें बिजली दौड़ गई और मेरा हृदय आहत पक्षीके समान तड़फड़ाने लगा। आकाशके तारे, पक्षियोंका कलरव, मलयाचलका सुगन्धित वायु और संसारका प्रत्येक पदार्थ मुझसे धीरे धीरे कानमें कहता था कि यह देवता ही प्रेम करनेके योग्य है। इन इच्छाओं और प्रेरणाओंने मुझको प्रेमपाशमें जकड़ दिया। उसके बाद भी मैंने बहुत कुछ चाहा कि यह भेद छिपा रहे, किन्तु कुछ लाभ न हुआ। हृदयकी आकुलता दिनपर दिन बढ़ती ही गई, उसकी कोई अमोघ ओषधि न प्राप्त हो सकी। अब प्रेमके हाथों ऐसी दशा हो चुकी है कि जिस ओर देखती हूँ, मदन ही मदन दिखलाई पड़ता है।

सब जग अब दर्पण भयो, जित देखूँ तित तोहि।
काँकर, पाथर, काँकरी, भई आरसी मोहि॥

निर्मला—खैर सखी, अब यह प्रेम-पुराण पूरा करो और यह कहो कि मुझे अपने उस मोहनके दर्शन कब कराओगी? इस समय तो मैं जाती हूँ। माताजी प्रतीक्षा कर रही होंगी। [प्रस्थान।

माधवप्रसाद—(आड़मेंसे ही स्वगत) विमला! अरी विमला! यह सारे कुविचार अपने हृदयसे निकाल डाल और मदनमोहनको मुझसे न माँग! मैं कदापि यह न मानूँगा। [क्रोधावस्थामें बाहर चला जाता है।

तीसरा दृश्य।

स्थान—विमलाका कमरा।

समय—दो पहर।

[विमला अकेली बैठी गुनगुना रही है।]

गजल।

अनोखी है दशा दिलकी, न दम भर चैन मिलता है,
पड़ी हूँ मैं विकल, अति दुःखसे हा! दम निकलता है।
भरी जिस रोजसे आँखोंमें छवि, उस प्राणप्यारेकी,
तनिक भी भूल जाऊँ बस, वहींपर मन मचलता है।
मेरे इस मानसिक मन्दिरमें, तुम हो देवता प्यारे,
तुम्हारी आरतीहीको यह दीपकप्रेम जलता है।
नहीं मालूम किसको आज यह बिजली मिटा देगी,
कि खंजर[1] हाथमें उस बुतके[2] रह रह कर सँभलता है।
अजब जादूगरी है कुछ समझहीमें नहीं आता,
दिखाई कोइ नहिं देता मगर दिलको मसलता है।

विमला—प्यारे, तुम न मानोगे! मैं भी ईश्वरके सम्मुख शोकातुर दशामें अश्रुपात करती हूँ और देखती हूँ कि मेरी इच्छा पूरी होती है, या नहीं। वह ओसकी बूँद—जो थोड़ी देरमें, भगवान् भास्करके उद्दण्ड तापसे तप्त होकर वायु मण्डलमें विलीन हो जायगी—मुझसे कहीं अधिक

---

१ तलवार। २ प्रेम-पात्र।

भाग्यशालिनी है। यद्यपि अल्प काल तक ही उसका अस्तित्व रहा, किन्तु रहा तो फूलोंके सुकोमल अङ्कमें, जिसको उषःकालकी मनोमोहनी समीरने झूला झुलाया और पक्षियोंने सुन्दर गाना सुनाया। मलयाचलके मलय समीरका आस्वादन करके वह चलती हुई। एक मैं भाग्यहीन हूँ, जो इस दुःखागारमें पड़ी हूँ, जिसके आदि-अन्तका ठिकाना नहीं, जो दुःखों और कष्टोंका निवासस्थान है, शत्रुओंकी निर्दयता और विपक्षियोंकी कटुवादितासे आच्छादित और अनेक प्रकारकी लाञ्छनाओंसे पूरित है। किन्तु ज्यों ही मैं इस नाशवान् जगत्को छोड़कर परलोक-गामिनी होऊँगी त्यों ही सारी बाधायें नष्ट हो जायँगी। इस पञ्च-भौतिक शरीरके पृथ्वीमें विलीन हो जानेके पश्चात्, कोई हम लोगोंके पारस्परिक सम्मिलनमें रुकावट न डाल सकेगा। मृत्यु हो जानेके उपरान्त, सारी सम्पत्ति और सारा ऐश्वर्य्य यहीं छूट जाता है। साधु-महात्मा तथा रङ्कजन अपना टाटका बिछौना, धनी अपनी धन-राशि, तथा कुलीन और प्रतिष्ठित पुरुष, अपनी कुलीनता और मर्य्यादा, यहीं छोड़ जाते हैं। सब लोग जैसे खाली हाथ आते हैं वैसे ही चले जाते हैं। मनुष्य केवल पाप-पुण्य और कार्य्य-अकार्य्य ही साथ ले जाता है। मैं भी उपर्युक्त सज्जनोंका अनुकरण करती हुई, अपना निष्पाप प्रेम साथ ले जाऊँगी। पिताजी कहा करते हैं कि मरनेके बाद मनुष्यको जब यमदूत, यमराजके सम्मुख उपस्थित करेंगे; तब उस न्यायालयमें बल, आतङ्क, उच्चता, कुलीनता और सम्पत्तिका कुछ भी प्रभाव न पड़ेगा। राजा—रङ्क तथा युवा—वृद्ध सब एक ही दृष्टिसे देखे जायँगे। प्रत्येक मनुष्य अपने कर्म अकर्मका फल भोगेगा। उस दिन मैं अवश्य धनी और प्रफुल्लचित्त रहूँगी। वे अश्रुबिन्दु जो मेरे नेत्रोंसे टपके हैं अमूल्य मुक्ताओंके समान हो जायँगे। मेरा रोना-

धोना, आश्चर्य्य और अभाग्य, कठिन तपस्यामें परिणत हो जायगा। मदन भी समझेगा कि प्रेमकी धरोहर सौंपनेके योग्य कौन है। माधवकी निर्धन पुत्रीके समान वह किसी राजकन्या अथवा सम्राज्ञीको भी कदापि न समझेगा। ईश्वर, अब मैं तेरी ही शरणमें हूँ, तू ही मेरी रक्षा कर!

चौथा दृश्य।

स्थान—माधवप्रसादके घरका एक कमरा।

समय—सन्ध्या।

[मदनमोहन और विमला।]

मदन०—विमला!...(निकट आकर) तुमने यह क्या दशा बनाई है? प्यारी विमला, तुम क्यों बेचैन हो? ऐसी कौनसी बात हुई है, जो तुम इतनी शोकाकुल और दुखी हो?

विमला—मदनमोहन! तुम हो! तुम्हारी ही चिन्ता लग रही थी, ईश्वरसे तुम्हारे मङ्गलार्थ प्रार्थना कर रही थी।

मदन०—ऊँचे आदर्शोंसे भरा हुआ तेरा हृदय (अपनी अँगूठीकी ओर संकेत करता हुआ) इस नगीनेके समान उज्ज्वल और चमकीला है, अतः तेरे मानसिक विचार और वासनायें मुझसे गुप्त नहीं रह सकतीं। तेरी सारी चिन्तायें उन बादलोंके सदृश हैं, जो स्वच्छ तथा निर्मल आकाशमें, क्षितिजके अन्धकारको हटाते हुए चले आते हैं। मैं उन बादलोंको भलीभाँति पहचानता हूँ। तुझको आजकल क्या हो गया है? कौनसी दुख-प्रद चिन्ता तुझे दुखी और व्यग्र कर रही है?

विमला—प्राणनाथ ! किसी प्रकार तुम जान लेते कि तुम्हारा यह मधुर तथा प्रेममय भाषण इस ग्रामीण अबोध बालिकापर क्या प्रभाव डाल रहा है !

मदन०—विमला ! यह कैसी आत्मग्लानि है ! जब कि तू मेरे जीवनका सर्वस्व है, मेरे लिए शान्तिदायिनी देवी है, तो फिर तू क्यों अपने आपको तुच्छ समझती है ? यदि तू मेरे नेत्रोंसे अपने आपको देखे, तो समझ सके कि वास्तवमें तेरा कितना मूल्य तथा कितनी मर्य्यादा है । यह तेरी ही मानसिक पवित्रता तथा विशुद्ध दृष्टि है, जो मुझको स्वर्गीय आनन्दका सुसंवाद सुना रही है और मेरी आत्माको अमृतके समान स्वाद प्रदान करती है। तू मेरी प्राण-प्यारी, प्रेम-पात्री, और जीवन-सर्वस्व है । तू एक देवी है जो स्वर्गसे मृत्युलोकमें मुझे कृतार्थ करने आ गई है । जिस समय मैं तुझको और तेरी रति-विनिन्दित सुन्दरताको दृष्टि भर देखता हूँ, उस समय मैं अपने आपको भूल सा जाता हूँ । तेरे सौन्दर्यका स्वामित्व मुझपर पूर्णरूपसे हो जाता है । विमला ! मेरी सारी प्रसन्नता और सारा सुख, तेरी प्रसन्नता तथा समीपतामें है, और मेरी इच्छा तेरी इच्छाकी अनुगामिनी है । तू ही समझ ले कि जो दुःख या कष्ट तेरे हृदयको पीडित करता है, वह मुझपर कैसा प्रभाव डालता होगा । मेरे और तेरे बीचमें कुछ अन्तर नहीं । हम दोनों एक ही आत्माके दो शरीर हैं । यह मानव शरीर हम लोगोंको एक दूसरेसे पृथक् नहीं कर सकता ।

विमला—मदन, मैं अपने भविष्यको अन्धकारमय पा रही हूँ। भविष्यमें जिन अनेक दुःखों और शोकोंकी सम्भावना हो रही है, उन सबको मैं आपत्तियोंका सूत्रपात समझती हूँ । तुम और मेरे पिताके विचार, दोनों, खूनकी प्यासी तलवारकी तरह मेरे सिरपर घूम रहे हैं । भयानक

खोहें हमारे पैरोंके नीचे मुँह खोले पड़ीं हैं और अवसर पाते ही हम दोनोंको निगल जानेकी चिन्तामें हैं। प्यारे, वे सब लोग यही चाहते हैं कि मुझे तुमसे पृथक् कर दें।

मदन०—विमला! यह क्या कह रही हो? बिना किसी घटनाके हुए, यह बात तुमने कैसे जानी? कौन है, जो हमारे प्रेम-साम्राज्यको उलट सके? कौन है जो बिना किसी प्रकारके दुःखके नाखूनसे मांसको पृथक् कर दे? कौन है जो आत्माको आनन्द देनेवाले दो रागोंको बिगाड़ डाले? तुम कहती हो कि मैं कुलीन और उच्च हूँ। क्या व्यक्तिगत अथवा वंशगत-उपाधि, और पैतृक मानमर्य्यादा प्राकृतिक नियमोंको दबा सकती है? मेरी समझमें, कुलीनता, सम्पन्नता, उच्चता और नीचता ये सब कोई वास्तविक महत्त्व नहीं रखते। मनुष्यको उचित है कि वह अपने सुख तथा आनन्ददाताको ढूँढे। क्या यह व्यक्तिगत विभिन्नता ईश्वरकी महाशक्तिसे अधिक बलवान् है? विमला, तुम मदन हो और मदनमोहन विमला है।

विमला—किन्तु प्यारे! तुम्हारे पिता................

मदनमोहन—विमला! ईश्वर और अपनी आत्मापर विश्वास रक्खो और शोककी कलुषित कालिमाको अपने हृदयमें मत जमने दो। मैं यत्न और कौशलसे सारी रुकावटें दूर कर दूँगा, बन्धनोंको तोड़ डालूँगा और साहस तथा प्रयत्नसे कठिनताओंको अपनी प्रेम-वृद्धिका कारण बनाऊँगा। मेरे पिताकी कठोरता और आतङ्क चाहे तुम्हारे चित्तको व्यग्र कर दे; किन्तु मैं उसे आगामी सुखका कारण समझता हूँ। जिस प्रकार साँप पूरे बलसे खजानेकी रक्षा करता है, उसी प्रकार मैं भी अपना सारा बल अपने सौभाग्यके खज़ाने विमलाकी रक्षामें लगा दूँगा। तुम्हारे मार्गके कण्टकजालको सुकोमल पुष्पोंमें परिणित कर दूँगा। अपने

ऊपर आपत्तियोंका पहाड़ उठा लूँगा, किन्तु सदा तुम्हारी रक्षा करूँगा। तुम मेरे बाहु-बलपर विश्वास रख कर आनन्दसे जीवन व्यतीत करो। जिस समय मृत्यु-काल आवेगा और इस नश्वर जगत्से हम दोनों प्रस्थान करेंगे, उस समय हमारी आत्मायें सूर्य्यके समान प्रकाशित होंगी। देवता उनकी आभा और पवित्रता देख कर कहेंगे कि प्रेम-प्रकाशने इनको इतना प्रभायुक्त और पवित्र कर दिया है कि जिससे इनपर दृष्टि नहीं ठहरती। स्वर्गलोकमें हमें अवश्य उच्चस्थान प्राप्त होगा।

विमला—प्यारे मदन! तुमने उस पदार्थका महत्त्व समझ लिया, जिसका मिलना केवल परलोकहीमें हो सकता है। तुमने मेरे जीवनमें एक नई शक्तिका सञ्चार कर दिया। मेरी इच्छाओंमें स्फूर्ति उत्पन्न कर दी, मुझे आशायुक्त कर दिया। अब मैं इस दशाको देखती हुई पार्वतीके वाक्योंकी पुनरावृत्ति करती हूँ; जिससे तुम्हें मेरे हार्दिक भावोंका पता लग जाय।—"मै उस अव्यक्त, अगोचर, विशुद्ध, दयालु, दीनबन्धु तथा पालनकर्ता जगदीशकी सौगन्ध खाकर कहती हूँ कि या तो नील-कण्ठ बाघाम्बरधारी श्रीशङ्करजीकी अर्धाङ्गिनी बनूँगी और नहीं तो मौतकी गोदमे सुखकी नींद सोऊँगी।"

[एक नौकरका प्रवेश।]

नौकर—श्रीमान्, आपको पिताजीने याद किया है।

मदन०—क्यो क्या काम है? अच्छा चलता हूँ।

विमला—यही है तूफ़ान, जो आनेवाला है।

मदन०—प्यारी विमला! तुम भयभीत मत होओ! [प्रस्थान।

पाँचवाँ दृश्य ।
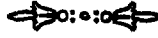
स्थान—मंत्री कृष्णकुमारका दफ़्तर ।

समय—सन्ध्या ।

[कृष्णकुमार और मुंशी मोतीलाल ।]

कृष्ण०—मैं आज अच्छी तरह समझूँगा। मैंने एक विश्वासपात्र मनुष्य भेजकर अनुसन्धान कराया है।

मोती०—वास्तविक दशाका ज्ञान प्राप्त होने पर, श्रीमान् स्वयं मेरे कथनकी सत्यता स्वीकार कर लेंगे।

कृष्ण०—मैं तुमको मिथ्यावादी तो समझता ही नहीं; किन्तु मैं यह जानना चाहता हूँ कि तुम्हारा कथन कोई मानसिक उमङ्ग अथवा धृष्टता तो नहीं है ?

मोती०—यदि आज्ञा हो तो मैं कुछ निवेदन करूँ।

कृष्ण०—मैंने पहलेसे इस बातपर कुछ ध्यान न दिया कि मदन उस लड़कीसे मिल न सके और बातचीत तक न करने पावे। इस कारण अब उसे झिड़की या दण्ड देनेका मुझे कोई अधिकार नहीं रह गया। स्त्री-पुरुषका पारस्परिक प्रेम, यदि वे दोनों युवावस्थाको प्राप्त हो चुके हों, कोई बुरी बात नहीं है। उनका अपराध क्षमाके योग्य है। पर सच कहो, क्या वह युवती सुन्दरी और सुशीला है ?

मोती०—सुन्दरी तो ऐसी है कि रतिकी सुन्दरताको भी लज्जित करती है और सुशीलतामें बस अपनी उपमा आप ही है।

कृष्ण०—क्या मदन वास्तवमें उससे प्रेम करता है ?

मोती०—निस्सन्देह। यहाँतक कि उसने उसको वचन तक दे दिया है कि मैं तेरे ही साथ विवाह करूँगा।

कृष्ण०—तब तो इस सम्बन्धमें कोई बात मेरी इच्छाके प्रतिकूल नहीं हुई है। जब तुम कहते हो कि लड़की सुन्दरी और सुशीला है, तब तो मैं यही कहूँगा कि मेरा पुत्र भी समझदार और बुद्धिमान् है। उसने उसका चित्त जिस प्रकार हो सका अपनी ओर खींच लिया है और वह चाहता है कि कुछ काल तक इसी प्रकार मनोरंजन करे। यहाँ तक तो वह इस दृढ़तासे चला है कि तुम भी स्तम्भित रह गये और इस बातको बिल्कुल ठीक समझ बैठे। मुझे प्रसन्न होना चाहिये कि मदन चतुर और सचेत है और समय पड़नेपर वह चाटुता, चतुरता और कुटिल नीति-तकका अवलम्बन करके अपना काम निकाल लेता है। इस योग्यताके कारण निस्सन्देह वह मेरी सम्पत्तिका उत्तराधिकारी होनेके योग्य है। मुझे उचित है कि अपने सुयोग्य पुत्रके मङ्गलार्थ, ईश्वरके सम्मुख शुद्ध चित्तसे प्रार्थना करूँ।

मोती०—उचित तो यह है कि आप यह प्रार्थना, उस शोक और मानसिक चाञ्चल्यके निवारणार्थ करें जो आगे चलकर आपको इस सुयोग्य पुत्रद्वारा प्राप्त होगा।

कृष्ण०—मोतीलाल, तुम्हें मालूम है कि मैं अपनी प्रतिज्ञासे सहज ही नहीं हटता। जहाँ तक हो सकता है, उसे पूर्ण करनेका प्रयत्न करता हूँ। तुम इन बातोंसे अपना कार्य्य सिद्ध करना चाहते हो। तुम्हारी इच्छा है कि मैं अपने प्रिय पुत्रकी प्रतिकूलतापर कटिबद्ध हो जाऊँ और तुम उस प्रतिद्वन्दीसे—जो तुम्हारा सामना करता है—छुटकारा पा जाओ। यह बात ध्यानमें भी न लाना कि मैं तुम्हारी इच्छाओंसे अनभिज्ञ हूँ। जब तुमने देखा कि तुम मदनमोहनके हाथोंसे विमलाको किसी प्रकार नहीं छुड़ा सकते हो, तब चाहते हो कि मैं भी तुम्हारे पापमें सम्मलित हो कर तुम्हारा काम बनाऊँ और तुमको सहायता देकर उसपर तुम्हारा

आधिपत्य स्थापित करूँ। यदि वह लड़की तुमको चाहती नहीं है, तो तुम क्यों ईर्ष्यावश कूटनीतिका सहारा लेकर उसपर अपना अधिकार जमाना चाहते हो? मदनको अधिकार है कि वह विश्वास और स्वाभिमानकी रक्षा करे। मैं उसकी ओरसे निश्चिन्त हूँ। अब तुम्हें चाहिए कि तुम भी मेरा अनुकरण करो।

मोती०—तो क्या श्रीमान् मेरे कथनको स्वार्थपूर्ण समझते हैं?

कृष्ण०—(बिगड़कर) तुम इतने मूर्ख हो कि इस बड़ी भारी कठिनता तथा बाधाके होते हुए भी, मदनमोहनसे ईर्ष्या करते हो और उसकी बराबरी करना चाहते हो। अरे मूर्ख! नीच! कहाँ तू और कहाँ यह काम? "कहाँ राजा भोज और कहाँ गङ्गातेली।" खैर, अब मैं इस बातको छोड़ता हूँ और अपने मुख्य आशयपर आता हूँ। महाराज कुछ कारणोंसे विवश हैं कि किसी राज-कुलकी कन्यासे अपना विवाह कर लें और अपनी उपपत्नी कमलासे विरक्त हो जायँ। उस समय सांसारिक लाञ्छन दूर करनेके लिए आवश्यक होगा कि कमलाको किसी औरसे सम्बद्ध कर दिया जाय। तुम जानते हो कि इस स्त्रीने किस हद तक उनपर अधिकार जमा रक्खा है और कहाँ तक उन्हें अपने प्रेमजालमें फँसा रक्खा है। उसने सब कुछ अपने हाथमें कर लिया है और वह भी इस प्रकार कि अब उसके हाथसे छूटना असम्भव है। किन्तु इस दशामें भी मैं महाराजकी पूरी सहायता करूँगा। मैं उस जालको—जो कमलाने दस वर्षसे महाराजके मार्गमें बिछा रक्खा है—तोड़ डालूँगा। मैं सदाके लिये यह शिकार अपने हाथमें करनेका प्रयत्न करूँगा। मैंने कमलाके लिये एक ऐसा पुरुष ढूँढ़ रक्खा है जो सब प्रकार उसीके योग्य है। वह है मदनमोहन। मैं चाहता हूँ कि कमलाका विवाह शीघ्र ही मदनमोहनके साथ कर दिया जाय।

मोती०—आपकी दूरदर्शिता प्रशंसनीय है। किन्तु मैं डरता हूँ कि कहीं मदनमोहन आपके स्नेह और प्रेमको भुला कर, आपकी आज्ञाका उल्लंघन न कर बैठे और इस दशामें लाभके बदले हानि न हो जाय।

कृष्ण०—मोतीलाल! तुम मेरी बातोंको खूब समझते हो, मानो मेरे हार्दिक विचारोंहीके अनुगामी हो। तुम मेरी दृढ़तासे भी अनभिज्ञ नहीं हो। तुम जानते हो कि कोई कठिनता या रुकावट मुझे अपने विचारोंसे विचलित नहीं कर सकती। मै आज ही मदनको बुला कर अपनी इच्छा उसपर प्रकट करता हूँ और इस मामलेमें उसकी राय लेता हूँ।

मोती०—इस युक्तिसे कोई लाभ न होगा। जहाँ सन्देह विद्यमान हो, वहाँ केवल विश्वास कर लेनेहीसे काम नहीं चलता। यदि आप मुझमें यह योग्यता समझते हैं कि मै आपके इस कार्य्यमें सम्मलित हो कर आपकी सेवा कर सकूँ, तो मुझे शामिल कर लीजिये। फिर देखिये कि यह समस्या कितनी जल्दी हल हो जाती है। यदि मदनमोहन इस विचारसे सहमत न हों और बहाना करें कि कमला मेरी शास्त्रोक्त स्त्री नहीं हो सकती, तो एक ओर कमलाको राज्यकी ओरसे निर्वासनकी आज्ञा निकलवा दीजियेगा और दूसरी ओर अधिकारियोंको सूचना दे दीजियेगा कि महाराजको किसीने विष दे दिया है, राज्य उसका अनुसन्धान करके उसके लिए उचित दण्ड निर्धारित करेगा और उस समय आप निडर होकर अपने कार्य्योंमें लग जाइयेगा।

कृष्ण०—यदि तुम कर सकते हो तो बहुत जल्दी इसका प्रबन्ध करके मेरे धन्यवादके भागी बनो।

मोती०—किन्तु श्रीमान्! मदनमोहन बलवान् तथा आत्माभिमानी हैं। यदि वे कहीं समझ गये कि मैंने यह काम किया है और आपसे मिल कर यह षड्यंत्र रचा है, तो लेनेके देने पड़ जायँगे।

कृष्ण०—तुम विश्वास रक्खो, मैं प्रत्येक आपत्ति तथा कुचक्रसे तुम्हारी रक्षा करूँगा ।

मोती०—मैं यदि इस कार्य्यको आपकी इच्छानुसार सम्पन्न कर दूँ तो ?

कृष्ण०—तुम्हें दस हज़ार रुपये पुरस्कारमें दूँगा । इसके अतिरिक्त, जिस विमलाको तुम रातदिन याद किया करते हो, उससे तुम्हारा विवाह करा देनेको भी प्रयत्न करूँगा ।

मोती०—जब मैं यह सौभाग्य प्राप्त कर लूँगा, तब आपसे आज्ञा लेकर, किसी छोटेसे गाँवमें जा रहूँगा और वहीं अपना शेष जीवन आनन्दपूर्वक व्यतीत कर दूँगा । उस दशामें हमारे गुप्त रहस्य भी किसीपर न खुल सकेंगे ।

छठा दृश्य ।

स्थान—कृष्णकुमारकी बैठक ।

समय—प्रातःकाल ।

[कृष्णकुमार तथा सेनापति वीरेन्द्र विक्रम ।]

सेना०—आज मैंने आपकी सेवामें उपस्थित होनेमें देर की, इसके लिए क्षमा चाहता हूँ । मेरे कार्य्योंकी कोई सीमा नहीं है । आपके सामने उन सबका वर्णन करना, केवल आपका समय नष्ट करना है । धनवानोंके नामोंकी नामावली उनकी मर्य्यादानुसार तैयार करना, भोज्य पदार्थोंका सञ्चय करना, आगन्तुक लोगोंकी आवश्यकताओंकी पूर्तिका प्रबन्ध करना, और उन सब लोगोंसे वचन लेना और [illegible]की रीतिके

अनुसार, दरबारमें उपस्थित होते हैं। इन सब कामोंको मैंने केवल एक ही दिनमें सम्पादित किया है। इसके अतिरिक्त सवेरे तड़के, महाराजके पूजनादि प्रातःकृत्य समाप्त करनेसे पहले, उनकी इच्छायें सुननेके लिये मैं प्रतिदिन अन्तःपुरमें भी जाता हूँ।

कृष्ण०—सेनापति महाशय! आप ठीक कहते हैं, आपके कार्य्य इससे भी अधिक हैं। वास्तवमें आपकी यह चतुरता और फुर्ती सबको विस्मित कर रही है और उसपर तुर्रा यह कि कामोंकी अधिकता होते हुए भी आप सबको भली भाँति निपटा डालते ह।

सेना०—परन्तु उस नीच दर्ज़ीने मेरे तीन मिनट बेकार खो दिये!

कृष्ण०—आप समयका ऐसा सदुपयोग करते हैं कि एक मिनट भी बेकार नहीं जाने देते। आपकी उन्नतिका मूल कारण यही है कि आप प्रत्येक कार्य नियत समयपर किया करते हैं।

सेना०—यद्यपि मैं अपने सारे काम समयानुसार ही किया करता हूँ, तथापि आज मुझसे एक बहुत बड़ा अपराध होते होते बच गया। ईश्वरको धन्यवाद देना चाहिये कि उसने मुझे जल्दी करनेमें सहारा दिया। यदि सात ही सेकण्डकी और देर हो जाती, तो महाराजके सामने कोई अन्य पुरुष अवश्य पड़ जाता और वे उठ कर उसीका मुँह देख लेते। आज दस वर्षसे महाराज शयनागारसे उठकर सबसे पहले मुझे ही दर्शन देते हैं। यदि नित्यनियमानुसार आज वे किसी दूसरेको अपने सम्मुख उपस्थित पाते, तो आप ही विचार देखिये कि मुझपर कैसी बीतती!

कृष्ण०—ऐसी कौनसी दुर्घटना हो गई कि जिससे आपको महा-राजके सामने पहुँचनेमें विलम्ब हो गया?

सेना०—गाड़ीसे उतरते समय घोड़े बिगड़ पड़े। बहुत चाहा, परन्तु मैं अपने अव्यवस्थित चित्तकी चञ्चलताके कारण अपने आपको न सँभाल सका। मैं धड़ामसे जमीनपर आ गिरा और मिट्टीमें लिथड़ गया। यदि मेरे स्थानपर आप होते तो क्या करते ? केवल पौनघण्टा समय था। मैं उसी अवस्थामें अपने निवासस्थानकी ओर आया और कपड़े बदल कर फिर राजमहलकी ओर चल पड़ा। रास्ता बहुत लम्बा था। गाड़ीसे गिरकर मैं बेहोश हो गया था, क्योंकि मुझे डर हो गया था कि, कदाचित् मैं ठीक समयपर उनके सम्मुख न उपस्थित हो सकू और यदि वैसी ही दशामें उनके सामने चला जाता तो मेरी वहाँ व्यर्थ ही हँसी होती। उठते बैठते मेरी दिल्लगी उड़ाई जाती। इन सब बातोंने मुझे अचेत कर दिया। चार सेवकोंने मुझे गाड़ीमें डाला और घोड़े सरपट छोड़ दिये। २ मिनट १५ सेकण्डमें मैं अपने घर पहुँचा, छः मिनट ४५ सेकण्डमें कपड़े बदले। फिर राजभवनकी ओर चल पड़ा और सबसे पहले महाराजकी सेवामें उपस्थित हो गया।

कृष्ण०—यह सब तो मनुष्य-शक्तिसे बाहर कहा जा सकता है। अवश्य आपको किसी देवताका इष्ट है।

सेना०—मैं महाराजकी सेवामें २० मिनट ३५ सेकण्ड तक उपस्थित रहा। मै आपकी चेष्टासे समझ रहा हूँ कि आप आजके नवीन समाचार सुननेके लिये उत्सुक हो रहे हैं। सबसे अधिक नवीन और अद्भुत समाचार यह है कि महाराजने आज बल्हती रँगके वस्त्र धारण किये हैं।

कृष्ण०—यह समाचार पाकर मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। इस समाचारको गुप्त रखना हमारा परम कर्तव्य है। मैं भी आपको एक आनन्द-प्रद, नवीन समाचार सुनाता हूँ कि मेर इकलौते तथा परम-

प्रिय पुत्र मदनमोहनका विवाह कमलाके साथ दूसरे सप्ताह तक हो जायगा। मुझे इसका पक्का वचन मिल चुका है। यदि आप कमलाके घरकी ओर जायँ, तो उसे भी यह समाचार सुना दें।

सेना०—केवल आपकी आज्ञासे आज ही यह आनन्ददायक समाचार कमलाके कानों तक पहुँचा दूँगा।

कृष्ण०—किन्तु अपने हार्दिक मित्रोंके अतिरिक्त और किसीको इसकी ख़बर न हो, क्यों कि यह एक रहस्यमय बात है।

[सेनापतिका प्रस्थान]

—

सातवाँ दृश्य।

स्थान—कृष्णकुमारका कमरा।

समय—१० बजे दिन।

[मदनमोहन कमरेके बाहर टहलता हुआ गा रहा है।]

निशि वासर मोहि भूले नाहीं, प्यारीको मुख चन्द।
मो मन भावे मोद बढ़ावे, दुख बिलगाय अमन्द,
तेरी बलि बलि जाऊँ, तोहि मनाऊँ, तू ही मोहि पसन्द॥ नाहीं०
मातु-पिता प्रिय मित्र हितैषी, करत सदा मोहि बन्द,
कमल-पराग तजन हित कैसे, उद्यत होय मलिन्द। नाहीं प्यारी०

(एक चपरासी भीतरसे आता है। मदनमोहन अपने आनेकी सूचना पिताके पास पहुँचाकर अन्दर जाता है।)

कृष्ण०—बेटा, मुझे नहीं मालूम कि आजकल तुम किस काममें लगे रहते हो। आजकल तुम इतने दुखी और मुरझाये हुए क्यों देख पड़ते हो? तुममें यह परिवर्तन क्यों हो रहा है? अभीसे क्यों बुड्ढोंका

अनुकरण करते हुए, युवावस्थाके आनन्दोंको तिलाञ्जलि दे रहे हो ? वह तुम्हारा प्रसन्न और प्रफुल्लित मुखारविन्द कहाँ चला गया ? वे आनन्द विनोदके चिह्न कहाँ हैं—जो तुममें होने चाहियें ? कदाचित् किसी गुप्त रोगने तुम्हें दबा लिया है जो भीतर ही भीतर अपना काम कर रहा है। तुम अब न मेरे साथ दर्बारमें जाते हो और न किसी जल्से, मैच, अथवा दौड़में शरीक होते हो। इस एकान्तवास तथा त्यागका कारण क्या है ? युवकोंके कतिपय काम क्षमा करनेके योग्य होते हैं, किन्तु कुछ कार्य्य, आँखोंमें काँटेके समान खटका भी करते हैं। मदन ! यह काम छोड़ दो और मुझे तुम्हारी सम्पन्नताके कारणोंको संचित करने दो।

मदन०—मैं आपकी इन प्रेम-युक्त शिक्षाओं और अमूल्य उपदेशोंका आभारी हूँ।

कृष्ण०—(हँसकर) मदन, तो क्या हम साफ़ साफ़ ही कह डालें ? अच्छा कहो तो, आजकल किसके प्रेमपाशमें फँसे हो ? क्या स्वयं मैंने तुमको इस घातक रोगमें डाला है ? क्या तुम जानते हो कि मैं इन आपत्तियोंके चिकने—फिसलनेवाले—धरातलपर क्यों विचर रहा हूँ ? मनुष्योंको अपना शत्रु बना कर, मैं किस लिये ईश्वर तथा संसार दोनोंके सामने लज्जित हो रहा हूँ ? इन सब बातोंको मैं अपने पुत्रके सामने कह रहा हूँ, और चाहता हूँ कि वह धैर्य्यपूर्वक सुने। मदन ! तुम जानते हो कि मैंने क्यों पूर्व महाराजको हटाकर, उनके अधिकार अपने हाथमें लिये हैं ?

मदन०—यह प्रयत्न मेरे लिये नहीं किया गया। मुझे वे कार्य्य जो चाटुता, वंचकता तथा कुटिलतासे परिपूर्ण हों, कदापि अच्छे नहीं मालूम होते।

कृष्ण०—मैं समझता हूँ कि तुमने पाठशालामें न्यायशास्त्र, शब्दशास्त्र तथा तर्कशास्त्रका भली भाँति अध्ययन किया है। किन्तु मैं नहीं

जानता कि तुमने कभी शिष्टाचार और सभ्यताके मूल सिद्धान्तोंका ज्ञान प्राप्त करनेका भी प्रयत्न किया है या नहीं। पिता, अपने पुत्रके भावी सुखके विचारसे स्वयं सुखसामग्रीका उपभोग नहीं करता। वह स्वयं कष्ट सह करके अपनी सन्तानको सुख पहुँचाता है। क्या, अब वह ईश्वर नहीं रहा, जो कृतघ्नियोंको उनकी कृतघ्नताका फल देता है? भला तुमको इससे क्या प्रयोजन कि मैं किस काममें लगा हूँ या क्या क्या कर रहा हूँ। मदन! पुत्र अपने पिताका उत्तराधिकारी होता है। जो कुछ मेरे पास है, सब तुम्हारे ही लिये है। यदि मैंने अपना जीवन पाप कार्य्योंमें व्यतीत किया है, तो उनका फल मुझे ही भोगना पड़ेगा, तुम्हें नहीं।

मदन०—यही बातें तो मुझे, आपकी आज्ञा उल्लंघन करनेकी प्रेरणा कर रही हैं। मैं आपसे स्पष्ट कहता हूँ कि मैं आपकी इस आपत्ति-मूलक सम्पत्तिका स्वामी नहीं होना चाहता। मैं ऐसी धन-राशिसे सर्वदा घृणा करता हूँ।

कृष्ण०—मदन, तुम्हारी मूर्खतापूर्ण बातें, मेरे धैर्य और सहनशक्तिका ह्रास किये डालती हैं। मुझे ज्ञात होता है कि तुममें बुद्धिका अभाव हो गया है और तुम्हारी प्रतिभाको बड़ी भारी हानि पहुँच चुकी है। अच्छी तरह सोचो! यह पद—जिसकी प्राप्तिके लिए तुम्हारे समान युवक दिनरात कठिन प्रयत्न तथा परिश्रम किया करते हैं, और नाना प्रपञ्च रचने पर भी सफल मनोरथ नहीं होते हैं—बिना परिश्रम तुम्हें प्राप्त होने-वाला है। मेरे प्रयत्नसे, तुम इस बीस वर्षकी अवस्थामें ही कई बड़े बड़े पदोंपर रह चुके हो। मैंने ये उच्च पद क्यों तुमको दिलाये? क्या तुमने कोई सेना परास्त की है, अथवा युद्धमें किसी विपक्षीको हारका हार पहनाया

है ? इन बातोंमेंसे एक भी तुम नहीं कर सके हो । केवल अपने पिताके —प्रयत्नसे जो सर्वदा तुम्हारी उन्नतिकी चिन्तामें निमग्न रहता है,— तुम अल्प कालमें ही इतने ऊँचे पदपर पहुँच सके हो। मैंने महाराजकी आज्ञा प्राप्त कर ली है कि सैनिक-सेवासे तुम अलग कर लिये जाओ और राजकाजमें अपना हाथ डालो । कुछ काल भी न बीतने पावेगा कि या तो तुम किसी विभागके मंत्री बना दिये जाओगे या राज्यके प्रधान मंत्री। इस तरह मदन, एक बड़ा भारी सौभाग्य तुम्हें स्वयं बुला रहा है । तुम्हें उचित है कि इस अमूल्य समयका उचित उपयोग करो। यह सुसंस्कृत मार्ग तुम्हें राज-मुकुट तक पहुँचा देगा और तुम्हारा भविष्य जाज्वल्यमान् कर देगा। किन्तु कठिनता यह है कि तुम संसारको न्याय तथा तर्ककी दृष्टिसे देखते हो और अपनेको इन पदोंका अनिच्छुक सिद्ध कर रहे हो । तुम्हारा जन्म और पालन-पोषण सम्पन्न घरमें हुआ है, इसी लिये तुम इन वैभवोंको तुच्छ गिन रहे हो। यदि तुमने विपन्नता और दरिद्रताके समुद्रमें पड़कर उसकी भयङ्कर लहरोंके थपेड़े खाये होते, तो अवश्य ही तुम इस समृद्धिका आदर कर सकते । सोचो कि तुम संसारमें किस लिये आये हो? क्या कोई ऐसा भी मनुष्य है जो अपनी उन्नतिसे कोसों दूर भागे ?

मदन०—मेरे विचार आपके विचारोंसे सर्वथा प्रतिकूलता रखते हैं। आप मुझे ऐसे सौभाग्यकी ओर आकर्षित नहीं कर सकते, जो मुझे न्याय-मार्गसे विचलित करके सार्वजनिक शान्ति भङ्ग करे। इसके अतिरिक्त भला उस सौभाग्यसे क्या लाभ पहुँच सकता है जिसका अधिकारी सर्वसाधारणके लाञ्छनोंको सहन करता रहे और दूसरोंके अपकथन सुना करे। पिताजी! यह सौभाग्य दुःखमय है। यह सौभाग्य जिसकी प्रशंसाके गीत आप गा रहे हैं, मनुष्य-समाजको

दुर्व्यसन और अहंकारमें फँसाकर कलुषित तथा विनष्ट कर देनेवाला है। जब तक मनुष्य ईर्ष्या, द्वेष, और तामसिक तृष्णाओंमें फँसा हुआ है, तबतक उसके लिये शुभकर्म करना दुस्तर है। वह कदापि न्याय और समानताको अपना पथप्रदर्शक नहीं बना सकता। मेरे विचारमें सौभाग्यशाली वही है, जो पूर्वजन्मका संचित पुण्य उदय होते ही, पापाचरणका त्याग कर दे, और सारे दुर्व्यसनोंसे अलग हो जाय। संसारमें भाग्यवान् वही है जिसका उत्कर्ष समाजको अपकर्षकी ओर न ले जाय।

कृष्ण०—सच है, आज तुम अनुभवी विद्वानोंके समान मुझे शिक्षा दे रहे हो। यह वक्तव्य तुमने किस पुस्तकमें पढ़ा और कहाँ याद किया है? कदाचित् यह उन पुस्तकोंमें हो, जिनका पढ़ना पदाधिकारियोंके लिये मना है। क्या तुम समझते हो कि तुम्हारी ये निष्प्रयोजन बातें मेरे अधिकार, मेरी शक्ति और मेरे प्रभावका विनाश कर देंगी? क्या मैं जो चाहता हूँ वह नहीं होता? क्या सर्वसाधारण मेरी आज्ञा नहीं मानते? जाओ, आजसे मैं तुम्हें अपनी सेवासे वञ्चित करता हूँ, जिससे कुछ कालमें तुम्हारी अक्ल ठिकाने आ जाय।

मदन०—मैं आपका मुख्य अभिप्राय अभी तक नहीं समझा। मैं नहीं जानता कि आप कौनसी और कैसी आज्ञा प्रदान करनेवाले हैं।

कृष्ण०—मैं तुम्हारा विवाह करना चाहता हूँ।

मदन०—(विस्मयपूर्वक) मेरा विवाह?

कृष्ण०—क्यों, आश्चर्य्य और विस्मयकी शरण क्यों ले रहे हो? आज सबेरे ही, मैंने कमलाको तुम्हारे आनेकी सूचना दे दी है। तुम्हें उचित है कि आज उसके घर जा कर उससे मिलो और फिर आनन्दपूर्वक शास्त्रोक्त रीतिसे उसका पाणिग्रहण कर लो।

मदन०—मैं कमलाके मकानपर मिलने जाऊँ ? क्या यह कुलटा, और कामिनीकुलकलङ्क वही स्त्री नहीं है, जिसको सारा नगर पहिचानता है ? क्या यह महाराजकी वही उपपत्नी नहीं है जिसकी बदनामी घर घर है ? आश्चर्य्य है कि मैं अभी तक इस बातको हँसी समझता था। आप यह काम कदापि न करें और कलङ्कका तिलक अपने माथेपर धारण करके मुझे भी उसका भागी न बनावें। पिताजी, यह कार्य आपके विशुद्ध वंशको दूषित कर देगा।

कृष्ण०—मैं नहीं समझता कि तुम कितने मूर्ख हो। शोक कि मैं पचास वर्षका हो गया हूँ और मेरी आयु इस कामके अयोग्य है; नहीं तो तुम देख लेते कि मैं कमलाको पति-विहीन न रहने देता। और एक तुम हो, जो उसे स्वीकार करते बगलें झाँकते हो।

मदन०—मैं ईश्वरको साक्षी दे कर कहता हूँ कि यदि ऐसा निन्द्य कर्म आपके द्वारा होता, तो मैं आपको अपना पिता न समझता और सर्वदा आपके वंशसे घृणा करता।

कृष्ण०—तुम्हारी कुटिलता और दुस्साहस सीमासे बाहर हो रहा है; किन्तु फिर भी मैं तुम्हारी इस असभ्यताको क्षमा करता हुआ कहता हूँ कि मैंने तुम्हारा विवाह कमलासे करनेका दृढ सङ्कल्प कर लिया है। मैं उससे कदापि न हटूँगा।

मदन०—भला यह तो सोचिये कि मैं इस दशामें अपने-बेगानोंको कैसे मुँह दिखाऊँगा और नीचसे नीच मनुष्योंके सामने भी, किस प्रकार अपना सिर ऊँचा कर सकूँगा। मैं कङ्गालों और भिखमङ्गोंसे भी नीच हो जाऊँगा। यद्यपि वे लोग धन-धान्य नहीं रखते हैं, किन्तु अपमान भी सहन नहीं कर सकते। मैं इस प्रसिद्ध कुलटासे भूल कर भी नहीं मिल सकता। वह मेरी मान-मर्य्यादाको मिट्टीमें मिला देगी। कौन ऐसा

सद्वंशज है, जो इस प्रकारका अपमान सहन करनेके लिये राजी हो जायगा ? कलुषित और निर्लज्ज जीवन उसीको व्यतीत करना उचित है, जिसे नीचता और आत्महीनता, इस अपमानका अनुभव न करने दे।

कृष्ण०—मुझे जो कुछ कहना था कह चुका; मेरा सङ्कल्प बदल नहीं सकता।

मदन०—क्या आप मुझे इस अपमानके बन्धनमें बाँधना ही चाहते हैं ? मैं आपसे कहे देता हूँ कि इसका परिणाम अच्छा न होगा। आप इस विवाहके द्वारा अपनी मर्य्यादा और पदवृद्धि करना चाहते हैं; परन्तु मुझसे इसकी आशा न रखिये। मैं इस बातको भूल कर भी स्वीकार न करूँगा। मैं इस बातके लिये उद्यत हूँ कि अपना जीवन तक आपके चरणोंमें अर्पण कर दूँ, किन्तु स्वाभिमान तथा पैतृक मर्य्यादाको हाथसे न जाने दूँगा। मैं उसे सबसे अधिक मूल्यवान् समझता हूँ। जब तक शरीरमें प्राण हैं, उसे संसारके आक्षेपोंसे बचाये रहूँगा।

कृष्णाकु०—(अपनी बातचीतका ढँग बदल कर और मदनके कन्धे-पर हाथ रखकर) धन्य पुत्र ! यह है विचारोंकी सरलता और उच्च साहस। निस्सन्देह तुम इस योग्य हो कि तुम्हारी रायसे किसी निष्कलङ्क और उच्चादर्शवाली सुन्दरीसे ही तुम्हारा विवाह कर दूँ। अच्छा तो अब शीघ्र ही तुम्हारा विवाह पद्मावतीसे निश्चित कर दिया जायगा। क्या इस विषयमें अब भी तुम्हें कुछ कहना सुनना है ?

मदन०—मैं पद्मावतीकी निन्दा नहीं करना चाहता—वह देशकी सुशिक्षिता तथा सुशीला कन्याओंमेंसे हैं और सुन्दरता तथा लावण्यकी ऐसी आरसी है, जिसे अभी तक मानवी श्वासने स्पर्श करके गन्दा नहीं किया है।

कृ० कु०—ठीक है। मुझे आशा न थी कि तुम मेरे चुनावसे प्रसन्न होगे।

मदनमो०—इस असभ्यता और धृष्टताके होते हुए भी, जो मुझ तुच्छातितुच्छसे प्रकट हुई, केवल आपकी कृपा और आपका प्रेम ही मुझे सन्मार्गपर लानेको पर्य्याप्त है। मेरी विनय स्वीकार कीजिये और मेरे अपराध क्षमा कीजिये। आपका चुनाव, यद्यपि लाञ्छनीय नहीं है, पर फिर भी सम्भव है कि मैं उसे (पद्मावतीको) न चाहूँ।

कृ० कु०—इतने बुद्धिमान् होते हुए भी अन्तमें तुम पकड़ लिये गये। स्पष्ट हो गया कि तुम्हारा यह सारा कथन और मान-मर्य्यादाकी रक्षाका प्रयत्न केवल इसी लिये है कि तुम ब्याह ही नहीं करना चाहते हो। नहीं तो कमला सर्वगुणसम्पन्न और तुम्हारे ही योग्य वधू है। तुम्हारा उसके साथ विवाह होना भी सर्व साधारणमें प्रसिद्ध हो चुका है। नगरके छोटे बड़े तथा गण्यमान्य, सभीने इसकी सूचना पाई है। मदन, अपना निर्मूलक विचार त्याग दो और मुझे इस बातपर विवश न करो कि इसके लिये मैं अपनी शक्ति और अधिकारका प्रयोग करूँ। मेरी प्रतिकूलता कोई चाहे जितनी करे, पर अन्तमें मैं अपने विचारोंपर अटल रहूँगा। मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि तुम तुरन्त कमलासे मिलने जाओ।　　　　[प्रस्थान।

मदन०—(आप ही आप) हा! यह आज्ञा उन पिताजीकी है, जो मेरे शुभचिंतक हैं! मैं बैठा बैठा यह सब सुन रहा हूँ!—मैं उस कुल्टाके घर जाऊँ और उससे मिलूँ? यदि कमला महाराजकी सारी सेना लेकर भी मेरी प्रतिकूलता करे और निर्लज्जतापूर्वक मेरी पत्नी होना स्वीकार करे, तो भी मैं उसे अङ्गीकार न करूँगा और इस अपमानका भार अपने ऊपर न लादूँगा।　　　　[प्रस्थान।

दूसरा अंक।

पहला दृश्य।

स्थान—कमलाका ऊपरी कमरा।

समय—दोपहर।

[कमला और चम्पा। कमला बैठी बैठी गुनगुना रही है।]

ठुमरी।

न जानूँ काहे ना आये, प्राणप्रिय मेरे मनभाये।
खड़ी अकेली राह देखती, इत उत दृष्टि पसार,
पै निर्मोही देख पड़े नहिं, कहा करूँ कर्तार;
शोकसे नैना भरि आये। प्राणप्रिय०
हम जानी थी सत्य-प्रेमको, परि है कछुक प्रभाव,
पै प्रभाव पड़नेको सम्प्रति उसमें प्रेमाभाव;
विपति ही अब तो दिखराये॥ प्राणप्रिय मेरे मन०
मैं चातककी भाँति तिहारी आशा रही लगाय,
जान बूझकर प्राण हमारे काहे रहे तरसाय;
अबेलौं बहुतक दुख पाये। प्राणप्रिय मेरे मन०

चम्पा—सेनाका सारा चक्कर समाप्त हो गया और वह देखो अधिकारी लोग भी इधर उधर जा रहे हैं।

कमला—वह नहीं आया, मैं उसकी प्रतीक्षा व्यर्थ ही कर रही हूँ। (खड़ी हो जाती है) चम्पा! मैं अपने शोक और व्यथाका कारण नहीं जानती। तुमको विश्वास है न कि वह आज नहीं आया? यदि आया होता, तो क्या मैं यहाँ न देख पाती? वह सेनाका खास अफ़सर है।

उसके लिये आवश्यक है कि मैदानमें अवश्य उपस्थित हो। वह जानता है कि मेरे घरकी खिड़कियाँ इस ओर खुली रहा करती हैं। हे परमात्मन्, वह आता, और मैं खूब जी भरकर उसके दर्शन कर लेती। चम्पा! यह मानसिक चिन्ता मुझे जल्दी मार डालेगी। मैं बड़ी अभागिनी हूँ। इससे अधिक और मेरा क्या अभाग्य होगा कि मैं एक बार भी मदनको भलीभाँति न देख सकूँ? हाय! ये घड़ियाँ कितनी लम्बी हो गई हैं और कैसी धीमी चालसे कट रही हैं! चम्पा साईससे कह दे कि एक तेज़ घोड़ा जोत कर गाड़ी तैयार करे, मैं हवा खाने जाना चाहती हूँ। स्वच्छ और पवित्र वायुमें भ्रमण करूँगी। कदाचित् इसी उपचारसे मेरा शोक और मानसिक कष्ट कुछ दूर हो जाय, नहीं तो मैं इसी कम-रेमें मर जाऊँगी। (माथा पकड़कर रह जाती है।)

चम्पा—आपके इस घातक रोगकी रामबाण ओषधि यही है कि आप अपने इष्टमित्रोंको बुलवा लें और चौसर बिछा कर उनके तथा महाराजके साथ चौसर खेल कर अपना मनोरञ्जन करें। यदि कहीं तुम्हारी जगह मैं होती और मेरे सङ्केत मात्रपर युवकगण तथा नगरके गण्य-मान्य लोग, यहाँ पधारनेमें एक दूसरेको परास्त करनेका प्रयत्न करते होते, तो मैं बतला देती कि कमलाको क्या करना चाहिये और अपने अमूल्य समयको किस प्रकार व्यतीत करना चाहिये।

कमला—मैं उन लोगोंसे कोसों दूर रहूँगी, यहाँ तक कि उनका मुँह तक न देखूँगी। चम्पा! जिस समय तू कोई ऐसा उपाय कर देगी जिससे मुझे महाराज और उनके सङ्गी साथियोंसे छुटकारा मिल जाय, उस समय तू जो कुछ माँगेगी, वही दूँगी। मैं अपने शुद्ध गृहको, इन नीच और दुरात्मा लोगोंसे क्यों अपवित्र करूँ? क्या तू नहीं जानती कि दर्बारी लोग किस सीमा तक मिथ्यावादी, मायावी और खुशामदी टट्टू होते हैं?

कदाचित् ही कोई दिन ऐसा होता होगा जिस दिन ये अभागे राज्य-प्रबन्धक, निरपराधियोंपर हजारों झूठे दोष न लगाते हों, तरह तरहकी कूट नीतियोंका प्रयोग न करते हों, और अगणित निर्बलोंकी हत्या न करते हों। यदि ये कभी सर्वसाधारणको लाभ पहुँचानेवाली किसीकी कोई बात सुन पाते हैं, तो आँखें फाड़ फाड़ कर घूरने लगते हैं और राक्षसी दृष्टिसे उसकी ओर ताकते हैं। यह मूर्ख तथा असभ्य मण्डल वास्तवमें कठपुतलियोंका मण्डल है—जिसकी गति तथा प्रतिगतिकी डोरी मेरे हाथमें है। वे मेरे इच्छानुसार चलने और मेरी आज्ञाका पालन करनेके अतिरिक्त और कोई काम नहीं करते। वास्तवमें महाराज अपने शासनके जादू और अपनी राज-शक्तिद्वारा अपनी वासनाओंकी पूर्ति करना चाहते हैं। वे अल्पकालमें भव्यभवन बनाकर, उसे नाना प्रकारकी सुन्दर वस्तुओंसे सजा कर, देवदुर्लभ खाद्य पदार्थोंसे उसका भोजनालय सजा कर, काबुल और ईरानसे उत्तमोत्तम मेवे मँगवा कर और उन्हें मेजपर चुनवा कर, तथा ऊजड़ स्थानोंको सुरम्य उपवनोंमें परिवर्तन करके, मुझे वशीभूत करना चाहते हैं। तो क्या वे उस हृदयको भी—जो उनसे विमुख रहता है—कभी इस प्रकार अपने अधीन कर सकेंगे कि वह उनसे प्रेम करने लगे? यदि मैं इस अभिमानी राजाके बदले किसी उच्चवंशज युवकको अपनी ओर आकर्षित करके अनुरक्त कर सकती, तो कितनी सुशीला समझी जाती! चम्पा! मैं देखती हूँ कि तूने अब तक मुझे न पहिचाना, क्यों कि तू बहुधा मेरी बातोंपर आश्चर्य्य प्रकट किया करती है। यद्यपि मैं एक साधारण अबला हूँ, किन्तु मेरा हृदय स्वतंत्र और अविचल है। कदाचित् वह किसी मनस्वी पुरुषके पदकमलमें अर्पण किया जाय। जिस प्रकार फुँकनीकी हवा दर्पणके धरातलको धुँधला कर देती है, उसी प्रकार महाराजके दर्बारकी विषैली वायुने, मेरा हृदय-पटल निष्प्रभ कर दिया

है। यदि कोई अन्य सुन्दरी महाराजके हृदयमें मेरासा स्थान प्राप्त कर लेती, तो यह कार्य्य मेर परम सौभाग्यका कारण हो जाता। यह लोलुपता जो आजतक मुझमें दिखलाई दी है केवल एक गुप्तेच्छा पूरी करनेके लिये थी। जिस दिन मदनमोहन मुझे अपनी सेवामें स्वीकार कर लेंगे, मैं उसी दिन उनको आत्मसमर्पण कर दूँगी और संसारके सारे सुखों और ऐश्वर्य्योंपर लात मार कर, उनके साथ, वनों और पर्वतोंपर रहकर भी अपना जीवन व्यतीत कर दूँगी। लोग सोचते हैं कि मदनके साथ विवाहकी बातचीतका होना, मन्त्रीकी युक्तिका फल है। अच्छा है कि इसी प्रकार सब लोग सन्दिग्धावस्थामें पड़े रहें। महाराज, उनके संगी-साथी तथा वीरेन्द्र विक्रम इत्यादि सोचते हैं कि मेरी रक्षा उसी दशामें सम्भव है जब कि मेरा विवाह मदनमोहनसे कर दिया जाय। ये हैं वे राज-नीतिविशारद और नीतिकुशल कहलानेवाले लोग, जिनको एक मूर्ख अबला राह बताती है!

[परिचारिकाका प्रवेश।]

परि०—रानीजी, मदनमोहनजी द्वारपर खड़े हैं।

कमला—उन्हें आदरपूर्वक ले आओ! [परिचारिकाका प्रस्थान।

कमला—(आप ही आप) उनसे क्या कहना चाहिये और किस प्रकार उनका चित्त अपनी ओर आकर्षित करना चाहिये? (प्रकाश्य) चम्पा! क्या तू मुझे अकेली छोड़ सकती है? हाँ! तेरा चला जाना ही युक्तिसङ्गत है। [चम्पाका प्रस्थान।

[मदनमोहनका प्रवेश।]

मदन०—मैं आपसे देरमें मिल सका, इसके लिए क्षमा चाहता हूँ। आज पिताजीने मुझे आपसे मिलनेकी आज्ञा प्रदान की है, इस लिए मैं यहाँ हाजिर हुआ हूँ।

कमला—मैं आपके पिताजीकी अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जो उन्होंने मेरे ऊपर कृपा करके आपको यहाँ भेजा।

मदन०—मेरे यहाँ आनेका कारण यह है कि मेरे और आपके विवाहकी बात सारे नगरमें फैल रही है। सब कहीं यही चरचा हो रही है। आज पिताजीने इस लिये मुझे यहाँ भेजा है कि मैं स्वयं यह समाचार आपतक पहुँचा दूँ।

कमला—शायद आपका यह मतलब है कि आप स्वेच्छापूर्वक यहाँ नहीं पधारे और न हृदयसे इस कामका स्वागत कर रहे हैं, वरन् विवश होकर यहाँ आये हैं।

मदन०—मेरे पिता और उनके अनुगामी, इस काममें मेरी इच्छा होना या न होना, बराबर समझते हैं। चाहते हैं कि मेरी इच्छा-शक्तिका ही खून कर डालें।

कमला—इस सुसम्वादके अतिरिक्त, क्या आपको मुझसे और कुछ भी नहीं कहना है?

मदन०—मुझे अभी आपसे और भी बहुत कुछ कहना है; किन्तु जो कुछ मैं कहूँगा वह यथाशक्ति बहुत ही संक्षिप्त और सार्थक शब्दोंमें कहूँगा। आप जानती हैं कि मैं एक निर्दोष तथा निष्कलङ्क वंशमें उत्पन्न हुआ हूँ, इस लिये मैं अपनी कुलीनता तथा स्वाभिमानका ध्यान प्रत्येक दशामें रखता हूँ। मैं कोई ऐसा काम नहीं करना चाहता, जिससे मैं संसारमें निन्दनीय समझा जाऊँ।

कमला—मैं आपके इन गूढ़ वाक्योंका तात्पर्य्य समझनेमें सर्वथा असमर्थ हूँ। बतलाइये, इस प्रस्तावनासे आपका क्या अभिप्राय है।

उत्तम होगा कि आप इन क्लिष्ट पदोंकी सविस्तर व्याख्या करके उन्हें स्पष्ट कर दें।

मदन०—यही शब्द तो मेरे विचारोंकी शुद्धता, वंशकी कुलीनता तथा मेरी तलवारकी वीरता सूचित कर रहे हैं और जो कुछ कि शेष रह जायगा वह समरभूमिमें विदित हो जायगा।

कमला—(मदनमोहनकी तलवारकी ओर इशारा करके) यही तलवार न जो कि आपको महाराजने प्रदान की है ?

मदन०—शायद आप हँसी कर रही हैं। यह तलवार मैंने अपने परिश्रम तथा कर्तव्य-पालनके बदलेमें पाई है—अपनी पैतृक उच्चता, तथा निर्दोष वंशज होनेके प्रतिफलरूप प्राप्त की है। अतः मेरा धर्म है कि मैं इस अमूल्य रत्नकी रक्षा करूँ और इसे किसी प्रकार कलुषित न होने दूँ। कदाचित् आपका यह विचार हो कि महाराज मुझे यह कष्ट सहन करनेपर विवश करेंगे। किन्तु उनकी आज्ञाका पालन करना, उचित होते हुए भी, मैं स्वधर्म और आभिजात्यके अभिमानको नहीं खो सकता। मैं निष्कलङ्क जीवनको सारे पदार्थोंसे बढ़कर समझता हूँ। यह तो केवल महाराज ही कर सकते हैं कि नीचत्व और कलङ्कको अपने सुन्दर वस्त्रोंमें छिपा लें; किन्तु ये अवगुण, उस कृत्रिम कलेवरमें, अनुसन्धानके दृष्टियोंसे, छिपे नहीं रह सकते। श्रीमतीजी, यहाँ मेरे और आपके अतिरिक्त कोई और उपस्थित नहीं है। मैं आपके सम्मुख बिना किसी गवाह या साक्षीके अपना आशय प्रकाशित कर रहा हूँ। भला, आपके जैसी कोई स्त्री, जो सब प्रकारकी सुशीलता सञ्चित करके संसारकी देवियोंमें गिनी जाती हो और जिससे हर मनुष्य प्रेम करनेमें अपनेको धन्य मानता हो, यदि कभी अपनी सारी मान-मर्यादा तथा

अपना सतीत्व, सांसारिक सुखोपभोगमें नष्ट कर दे, और फिर भी एक सत्पात्र तथा सम्मानित पुरुषसे विवाहकी इच्छा करे तो यह क्या कभी सम्भव हो सकता है ?

कमला—यह पहला ही अवसर है कि आप मेरे सामने इस प्रकारकी बातें कर रहे हैं। आजतक मुझसे किसीने भी इस प्रकारकी बातें नहीं कीं, और न किसीने कभी इस तरह जवाब ही तलब किया है। कदाचित् आपको भ्रम हो गया है। मैं उन नीच और कलङ्कित स्त्रियोंमें नहीं हूँ, जिनमें आपने मेरी कल्पना की है। क्या आप जानना चाहते हैं कि मैं कौन हूँ और यहाँ कैसे और कहाँसे आगई हूँ ? आप इन प्रश्नोंका समुचित उत्तर सुननेके लिये तैयार हो जाइये। क्योंकि यह उत्तर आपके सिवाय, और कोई ध्यानपूर्वक नहीं सुन सकता। महाशय, आप मुझको बिना घर-बारकी और बेनाम-निशानकी स्त्री न ख्याल कीजियेगा। मैं उस राजवंशकी हूँ, जो सारे देशमें अपनी समता नहीं रखता था और जिसका आतङ्क सर्व साधारणके मानस-भवनको कँपाता रहता था। उस वंशका प्रत्येक व्यक्ति, राज्यका उच्च पदाधिकारी रहा करता था। समयके फेरसे, मैं उन्नति तथा श्रेष्ठताके उच्च-शिखरसे गिरकर, अपमानके गहरे गढ़ेमें गिर पड़ी और भाग्यवश उन्नतिसे अवनतिमें आ गई। मैं इन सब बातोंको केवल आपके सन्देहनिवारणार्थ कह रही हूँ, न कि स्वार्थसाधन अथवा आपकी कृपा प्राप्त करनेके अर्थ। मेरे पिता एक सुप्रसिद्ध राजाके मंत्री थे। हमारे वंशके शत्रुओंने, पिताजीपर विपक्षियोंसे मिल जानेका, मिथ्यादोषारोपण किया और इस दोषका दोषी प्रसिद्ध कर दिया। इस निर्मूल दोषको राजाने सत्य मानकर, प्रमाण न मिलने पर भी, उन्हें फाँसीपर लटकवा दिया। इस भयङ्कर दण्डके साथ यह

भी आज्ञा दी कि हमारी सारी सम्पत्ति हरण करके राजकोषमें जमा कर दी जाय। तदनुसार अधिकारियोंने मेरी सारी सम्पदा हरण करके, मुझे और मेरी माताको मातृभूमिसे निकाल बाहर कर दिया। मेरी माता इन कष्टोंको सहन न कर सकी, और आठ दिनके भीतर ही उसका स्वर्गवास हो गया। मैं उस समय—केवल चौदह वर्षकी अवस्थामें—अपनी धायको साथ लेकर प्रयागकी ओर चली आई। सारी सम्पदामेंसे मैंने, केवल एक साड़ी रख ली थी, जिसमें रत्नों और मुक्ताओंकी झालरें टँकी हुई थीं। मैं असहाय दशामें प्रयाग पहुँची थी। पिताजीके जीवनकालमें, जब कि हमारे अभाग्यका आरंभ नहीं हुआ था, मैंने संस्कृत तथा सङ्गीतका अच्छा अभ्यास कर लिया था; परन्तु युवावस्थाकी जड़ताके कारण कभी यह सोचा भी न था कि मेरी अन्य विषयोंकी शिक्षा अपूर्ण रह जायगी। क्योंकि अपनी त्रुटियों और भविष्यकी कठिनाइयोंको, वह लड़की, कब ध्यानमें लाने लगी, जो बाल्यावस्थामें रत्नों और मोतियोंपर लोटती रही हो, रेशमी और मखमली कालीनोंपर शयन करती रही हो और हर समय सेवकोंकी एक बृहत् सेना जिसके कष्टरूपी शत्रुओंसे युद्ध करनेको तय्यार रहती हो? दो वर्षका समय इसी दशामें व्यतीत हुआ। अन्तिम दिनोंमें—जब कि मैं प्रयागमें थी—आपके महाराजसे मेरी अकस्मात् भेंट हो गई। महाराजसे भेंट होनेसे एक दिन पहले मेरी धायका देहान्त हो चुका था और मेरा सारा रुपया खर्च हो चुका था। उस समय मेरे पास लज्जा ढाँकनेके वस्त्रोंके अतिरिक्त कुछ भी न बचा था। उस दिन जब कि महाराज वायुसेवनार्थ भगवती भागीरथी-पर पधारे, मैं गङ्गाके किनारे खड़ी, उसकी निर्मल धारा देख रही थी, और अपनी आत्मासे प्रश्न कर रही थी कि इस नदीकी गहराई अधिक है अथवा उन दुःखों और चिन्ताओंकी सरिताकी, जो मुझको चारों

ओरसे घेर हुए है। उसी समय महाराजकी प्रेम-दृष्टि मुझपर पड़ी। मैं आत्महत्या करनेका दृढ़ सङ्कल्प करके गङ्गाके घाट पर गई थी, किन्तु कुछ विचारोंने मुझे ऐसा करनेसे रोक दिया। मैं अपने निवा-स-स्थानपर लौट आई और मैंने इस कामको दूसरे दिनपर टाल दिया। उस दिन मैंने अपनी भूख केवल एक मुट्ठी चना चाब कर शान्त की। जब मैं अपने घर लौट रही थी, मुझे मालूम होता था कि कोई मनुष्य मेरे पीछे पीछे लगा चला आता है। वह आहट मेरे घरमें प्रवेश करते ही समाप्त हो गई। दूसरे दिन सबेरे ही महाराज मेरे गृहपर स्वतः पधारे और दीनतापूर्वक गिड़गिडा कर मेरे पैरोंपर गिर पड़े; साथ ही अपना प्रेम भी प्रकाशित करने लगे। महाराजने शपथ खाई कि मैं तुम्हें हृदयसे चाहता हूँ। मुझे महाराजने नाना प्रकारके वचन तथा प्रलोभन देकर अपनी प्रेम-पाशमें फाँस लिया और युवावस्थाकी वासनाओंको मेरे हृदयमें जाग्रत कर दिया। यद्यपि उस समय मैं आत्महत्या करनेके लिए तय्यार थी; परन्तु मनुष्य युवावस्थामें और उसमें भी बीस सालकी आयुमें, मरना न स्वीकार कर सकता है और न सहज ही अपनी जान ही दे सकता है और खास कर वह जिसे कोई सहायक और प्रेमी मिल गया हो। इसके पश्चात् मैंने अन्तःपुरमें प्रवेश किया और कुछ मास महाराजके सहवासमें बिताये। मैं चाहती थी कि अपनी अपकीर्ति तथा बदनामीको, कङ्गालों तथा असहायोंकी सहायता करके और अधिकारियोंद्वारा पीड़ित प्रजाका कष्ट दूर करके छिपा लूँ। मैंने अपनी युक्ति, बुद्धि, स्वाभाविक सुन्दरता और प्रतिभासे सहायता ली, और जो कुछ चाहा वही किया। दरबारी लोग, यह समझकर कि महाराज भली भाँति मेरे वशीभूत हैं, मेर सामने पृथ्वीपर मत्था रगड़ते थे। महाराजकी उपपत्नियोंने, मेरी

बराबरी करनेमें अपने आपको असमर्थ जानकर, अपना अपना रास्ता लिया। परमात्मा अपने सेवकोंके कार्य्योंको सब प्रकार जानता है। कोई बात उससे छिपी हुई नहीं है। मैंने कारागार खुलवा दिये और उन लोगोंको मुक्त कर दिया जो संकुचित और महा अन्धकारमय कारागारोंमें वास करते थे। जिन्हें आजन्म कारागारवासकी आज्ञा थी उन्हें बातकी बातमें मुक्त करा दिया। अधिकांश आज्ञायें मेरे ही हाथों पलटी गईं। चाण्डालोंने प्राण-दण्ड-भोगी लोगोंको फाँसीके नीचे छोड़ दिया। बहुतसे निर्दोष बन्दियोंको छुटकारा दिलवाया और उस अन्यायकी आपत्तिसे, जो उनपर किया गया था, बचाया। आपने मेरे भूतकालका अविकल विवरण सुन लिया। अब कृपा करके अधिक लज्जित न कीजिये। हे भगवन्! मुझसे ऐसा कौनसा अपराध हो गया है, जो मैं इस प्रकार पश्चात्ताप-सागरमें गोते खा रही हूँ।

मदन०—मैं स्वीकार करता हूँ कि आपने अपने सप्रमाण कथन-द्वारा मुझे परास्त कर दिया।

कमला—नहीं महाशय, मैं आपको परास्त नहीं करना चाहती। मैं तो आपसे यह पूछती हूँ कि यदि मेरे समान कोई अभागिनी कुलीन स्त्री इस तरह भूलकर पापके गहरे कुएमें गिर पड़ी हो और फिर आपके अनुरागका स्वागत करती हुई, प्रेमपूर्वक इस लिए आपकी शरण आई हो कि आपकी सहायतासे वह अपनी अपकीर्ति-कालिमा धो डालेगी, तो क्या आप उसका हाथ न पकड़ेंगे और उसे इस अथाह गढ़ेसे न निकालेंगे? आप धीर, वीर तथा सहृदय हैं। आपने मेरा सारा कथन ध्यानपूर्वक सुननेकी कृपा की है, अतः आपके द्वारा इस पापमय जीवनसे उद्धार पानेकी मुझे पूरी आशा है।

मदन०—अब उचित है कि आप मेरी बात भी सुननेकी कृपा करें और जब मेरी वर्तमान दशासे परिचित हो जायँ, तो मेरी भी बात स्वीकार कर लें। आपकी सुशीलता और उच्चता जो आपने अभी कथन की है, यथार्थ है; बल्कि मैं मानता हूँ कि वह इससे भी अधिक होगी; किन्तु मैं अपना प्रेम-धन किसी अन्यको अर्पण कर चुका हूँ, इस लिए लाचार हूँ। मैं चाहता हूँ कि एक निर्धन लड़कीसे—जिसके पास सतीत्व तथा पवित्रताके अतिरिक्त, कुछ भी नहीं है—ब्याह कर लूँ। मैं माधवप्रसादकी पुत्री विमलासे प्रेम करता हूँ और उसीसे विवाह करना चाहता हूँ। आप शायद इस सम्बन्धको ठीक न समझें; परन्तु यह भी आप जानती हैं कि पात्रापात्र तथा ऊँच नीचका विचार उसी समय तक सम्भव है, जब तक प्रेम-देवने पदार्पण न किया हो। मैं यह भी कह देना चाहता हूँ कि इसमें अपराध मेरा है, विमलाका नहीं। क्योंकि उसे मैंने ही तलाश किया और उसके हृदयमें अनुरागका बीज भी मैंने ही बोया। ऐसी दशामें यह असंभव है कि मैं आपको या किसी अन्य सुन्दरीको अपनी अर्धाङ्गिनी बनाऊँ और प्रेमाज्ञासे विमुख होकर बुद्धिकी फटकार सुनूँ।

कमला—दो दिन हुए कि मेरा आपके साथ विवाह होनेका समाचार सर्व साधारणके कानों तक पहुँच चुका है, इस लिए अब तमाम नगरनिवासी मेरी ओर सन्देहकी दृष्टिसे देखेंगे। आपके द्वारा इस प्रकार अपमानित किया जाना, मुझे इस बातपर आरूढ़ करता है कि मैं भी आपसे आपके ही योग्य व्यवहार करूँ। क्या आप मेरे यहाँ, मुझे भला-बुरा कहने और गालियाँ देने ही आये थे? बहुत अच्छा, आप मेरे मुकाबलेके लिये तय्यार हो जाइये। मैं आपसे युद्ध करूँगी।

मदन०—सुनिये, मैं आपकी अप्रसन्नतासे नहीं डरता और जब तक बन सकेगा, मैं आपका सामना करता रहूँगा। आपको यदि अपने उपपति महाराजका अहंकार है, तो मुझे भी (तलवारकी ओर संकेत करके) इस अपनी महाशक्ति, शत्रुसंहारिणीका भरोसा है।

[तेजीसे चला जाता है।

दूसरा दृश्य।

स्थान—माधवप्रसादका घर।

समय—९ बजे दिन।

[यशोदा और विमला।]

(माधवप्रसाद डरा हुआ आता है।)

माधव०—अरी दुष्टा, मैंने तुझसे पहले ही कह दिया था कि....

यशोदा—क्या हो गया? क्या कहते हो? ईश्वरके लिये जल्द कहो!

माधव०—(दाँत पीसकर) क्या हो गया, मुझसे पूँछती है! (दर्पणमें मुख देखता हुआ) देख! मेरे चेहरेका रँग उड़ा हुआ है। मैं जानता था कि इस कामका यही परिणाम होगा। बस तेरे हाथसे ईश्वर ही रक्षा करे।

यशोदा—(हकी बकी होकर) मैं तो—मैं बेचारी—

माधव०—तेरी निरंकुशता तथा अपकथनने आज मुझे एक महान् विपत्तिमें फँसा दिया। कल तू मोतीलालपर पागल कुत्तेके समान टूट पड़ी थी। जो तेरे जीमें आया, कह डाला। वह बेचारा अपनासा मुँह लेकर चला गया, और उसने सारा हाल अपने मालिकसे जाकर कह दिया। यह सिपाही सामने खड़ा है और चाहता है कि मुझे दरबारमें ले जाय। सच कहा है कि यदि कोई शैतान किसी घरमें अपना

बीज बो देता है, तो उस बीजसे सुन्दर लड़की उत्पन्न होती है। अब तूने जान लिया होगा कि यह किस प्रकारकी घटना हो गई है।

यशोदा—मोतीलालने वचन दिया था कि महाराजके निकट तुम्हें पहुँचा दूँगा और यह भी कहा था कि सरकारी नाट्य-समिति-में नौकर रखा दूँगा, कदाचित् इसी लिये उन्होंने आपको याद किया हो।

माधव०—अरी मूर्खा! तू यह क्या वाहियात बक रही है? भगवन्! मैं क्या करूँ, कहाँ जाऊँ! इस सिपाहीने मेरा घर क्यों घेर रक्खा है? मैंने किसीका माल नहीं हड़प लिया, किसीको बुरा भला नहीं कहा। जाकर अभी इसके हाथ पैर तोड़े देता हूँ। भला यह नीच मुझसे क्या चाहता है? आज मुझ अभागेको कोई नहीं दिखाई देता, जो मेरी सहायता या रक्षा करके मेरा पक्ष ले।

[विमला डरसे काँपने लगती है।]

यशोदा—यह कैसी भयङ्कर आपदा है! क्या किया जाय? कहाँ भागकर आत्मरक्षा करूँ?

माधव०—तू जब यह जानती थी तो पहलेहीसे मुझे सूचना दे देती। यदि तू और विमला, मेरी रायकी प्रतिकूलता न करती, तो मैं आज इस कुचक्रसे बचनेका उपाय कर सकता। किन्तु ईश्वर तेरा सत्यानाश करे, तू घर जला देनेवाली अग्निको बुझानेके बदले उसे और भी भड़कानेका प्रयत्न कर रही है। तू पूछती है कि क्या किया जाय? मैं क्या जानूँ कि तू क्या करेगी! मेरा विचार तो यह होता है कि इस लड़कीको लेकर कहीं भाग जाऊँ। तेरे जो कुछ मनमें आवे, कर। जहाँ जी चाहे जा और जा भी ऐसे स्थानपर जहाँसे फिर लौटकर न आ सके।

तीसरा दृश्य ।

स्थान—माधवप्रसादका घर ।

समय—९॥ बजे दिन ।

[विमला और यशोदा ।]

[मदनमोहन हाँपता हुआ कमरेमें आता है ।]

मदन०—क्या यहाँ मेरे पिताजी पधारे थे ?

विमला—आपके पिता ? यहाँके जागीरदार और मंत्री, भला वे मेरे यहाँ क्यों आते ?

यशोदा—जगदीश ! दया कर, दया कर

विमला—हम लोगोंको साढ़ेसाती सनीचरने घेर लिया है । अब हमारा नाश अवश्य हो जायगा । मदनमोहन ! आपके पिताका भला यहाँ क्या काम था ?

मदन०—विमला ! हृदयमें धैर्य्य धारण करो । कुसमय निकल गया, अब मुझे अपना मन ठिकाने करने दो । यह कष्ट, बड़ा कठिन तथा असह्य था । विमला ! वे चाहते थे कि तुम्हें मेरे हाथसे निकाल लें । क्या कभी मैं कमलाको पसन्द कर सकता था ? क्या मै हृदयसे उसका पति बन सकता था ? नहीं, नहीं, ऐसा होना असम्भव था । ईश्वरने मुझे बचा लिया । प्यारी, उठो । हृदयमें दुर्बलताको स्थान न देना । मैंने दुर्जय शत्रुसे लड़कर उसपर विजय प्राप्त कर ली है । आओ, हम तुम मिलकर ईश्वरको धन्यवाद दें ।

विमला—मैंने सुना है कि कमलाका विवाह किसी राजकुमारसे किया जायगा । यह कौन भाग्यवान् पुरुष होगा ?

मदन०—यह भाग्यवान् पुरुष मदनको छोड़ और कौन हो सकता है ?

विमला—आपके पिताजी चाहते हैं कि कमलासे आपका विवाह कर दें ? हाय! मेरे पिता ठीक कहते थे, किन्तु मैंने उसपर कभी विश्वास न किया। (अपने आपको यशोदाकी गोदमें डालकर) मेरी प्यारी माता ! अब मैं क्या करूँ ?

यशो०—मेरे नेत्रोंका प्रकाश विमला ! ईश्वर उसका सत्यानाश करे, जिसने तुझे यह दिन दिखाया और तुझे अभागी बनाया। (मदनमोहनसे) मेरी विमलाको तुमने नष्ट कर दिया।

मदन०—मैं कहता हूँ कि विमला मेरे लिये निश्चित की गई है और मै विमलाके लिये बनाया गया हूँ। महाराज तो क्या, स्वयं मेरे पिताजी भी, मुझे इससे पृथक् नहीं कर सकते। अब मैं जाता हूँ और जो कुछ मेरे जीमें आवेगा, करूँगा।

विमला—ऐसी दशामें कहाँ जाते हो ? हमें इस समय अकेला न छोड़ो।

यशोदा—यदि मन्त्री हमारे यहाँ आ जायगा, तो न मालूम क्या कर डालेगा। मदनमोहन, तुम्हें उचित है कि मन्त्रीके क्रोधसे हम लोगोंकी रक्षा करो और अभी कुछ समय तक यहीं उपस्थित रहो।

मदनमोहन—बेटेका कर्तव्य है कि पिताका आज्ञाकारी सेवक रहे; किन्तु यदि पिता चाहे कि बेटेके निष्कलङ्क कीर्ति-चन्द्रमें कलङ्कका टीका लगा कर उसे कलुषित कर दे, तो बेटेको भी अधिकार है कि वह बाग़ी होकर उससे प्रतिकूल हो जाय। प्यारी विमला ! निकट आओ और अपना हाथ मुझे दो। (विमलाका हाथ अपने हाथमें लेकर) शपथ है उस

परम पिता परमात्माकी, जो प्रेम और अनुरागका पिता है। मैं भगवान् मार्तण्डको साक्षी रख कर कहता हूँ कि ये दोनों हाथ उस समय एक दूसरेसे पृथक् होंगे, जब कि हमारी आत्मायें शरीर-पिञ्जरको छोड़ कर स्वर्गधामको सिधार जायँगी। विमला! मैं एक ऐसी भयङ्कर बात जानता हूँ कि यदि उसे प्रकट कर दूँ, तो वे महापुरुष, जिनका पुत्र कहलानेमें भी मुझे लज्जा मालूम होती है, अपमानित और कलङ्कित-पुरुषके समान मेरे सम्मुख नेत्र उठानेका भी साहस न करेंगे।

यशोदा—(आप ही आप) आज मेरी मनोकामना पूरी हो गई। मदनने विमलाका पाणि-ग्रहण करके अर्थात् गन्धर्व-विवाह करके मेरी इच्छा पूरी कर दी। (प्रकाश्य) मदनमोहन, देखो अपना वचन याद रखना।

चौथा दृश्य।

स्थान—माधवप्रसादका घर।

समय—१० बजे दिन।

[माधवप्रसाद, विमला, यशोदा और मदनमोहन।]

[कृष्णकुमारका प्रवेश।]

मदन०—(पिताको देखकर) आपने यहाँ आनेका कष्ट क्यों उठाया?

कृष्ण०—मेरा यहाँ आना क्या तेरे आश्चर्य्यका कारण हो गया? (विमलाकी ओर उँगली उँठता हुआ, माधवप्रसादसे) क्या इस लड़कीका पिता तू ही है? (यशोदाकी ओर संकेत करता हुआ) सम्भवतः यह इसकी माता होगी।

माधव०—श्रीमान्‌का अनुमान बिल्कुल ठीक है।

मदन०—(माधवप्रसादसे) आप विमलाको दूसरे कमरेमें ले जाइये।

कृष्ण०—किसकी मजाल है, जो कमरेसे बाहर पैर रख सके। (विमलासे) कितने समयसे तू मदनमोहनको पहिचानती है ?

विमला—कार्तिक माससे।

मदन०—हाँ कार्तिक मासमें ही मेरा विमलासे परिचय हुआ है।

कृ० कु०—मदन ! अभी तेरे बोलनेका समय नहीं आया। (विमलासे) क्या मदन तेरी पूरी फीस दिया करता था ?

विमला—मैं आपके कथनका आशय न समझ सकी।

कृष्ण०—हर कामकी कुछ न कुछ उजरत या मजदूरी हुआ करती है और वह लाभके लिये किया जाता है; फिर भला तू मुफ़्तमें मदनसे क्यों प्रेम करने लगी ?

मदन०—पिताजी ! समझ देखिये कि आप किस प्रकारके शब्दोंमें बातचीत कर रहे हैं। सबको प्रत्येक समय पवित्रता और निष्कलङ्कताकी प्रतिष्ठा करनी चाहिये। इस समय आप सभ्यता और मनुष्यताकी मर्य्यादाका उल्लङ्घन कर रहे हैं। मैं निवेदन करता हूँ कि क्या आप जैसे सभ्य पुरुषोंको ऐसे शब्दोंका प्रयोग शोभा देता है ?

कृष्ण०—मदन, तू क्या यह चाहता है कि मैं तेरी उपपत्नीकी इज्जत करूँ ?

विमला—(मदनसे सम्मानपूर्वक) आजकी तिथिसे आप स्वतंत्र हैं। आपका जहाँ जी चाहे जायँ और जो कुछ अच्छा लगे, करें।

मदन०—पिताजी, आपके कारण मेरा जीवन कलङ्कित होता है, इस लिये धर्मानुसार अब आपका मुझपर कोई अधिकार नहीं। मैं

आपसे प्रार्थना करता हूँ कि अब आप सभ्यतापूर्वक बात करनेकी कृपा करें ।

माधव०—महाशय ! यदि आप अपनी रियासतके रईस, राजमंत्री अथवा अपने घरके स्वामी हैं, तो मैं भी अपने झोंपड़ेके घेरमें यही अधिकार रखता हूँ । इस लिये मैं भी आपको सूचना देता हूँ कि बिना मेरी आज्ञा लिये मेरे घरमें न घुस आया कीजिये और इसी समय आप मेरे घरसे बाहर चले जाइये ।

कृष्ण०—इस सारे उपद्रवके मूल कारण तो आप ही हैं । मैं अभी समझाये देता हूँ कि इस समय मैं क्या कर सकता हूँ ।

माधव०—मैं मर्द हूँ, जो कुछ अपने बाहु-बलसे कमाता हूँ, खाता पीता हूँ । रईसों और अधिकारियोंके समान मैं ग़रीबोंका भाग डकारनेवाला नहीं हूँ ।

यशोदा—स्वामी ! आपको मन्त्री महाशयकी मर्यादाका विचार करते हुए बात करनी चाहिये ।

(मन्त्री आवाज़ देता है । पुलिसके जवान आ जाते हैं ।)

कृष्ण०—(उनकी ओर देखकर) महाराजकी आज्ञानुसार मैं आज्ञा देता हूँ कि इन सबको पकड़ लो और ले जाकर कारागारमें डाल दो ।

[मन्त्री सङ्केतसे माधवप्रसाद, यशोदा और विमलाको बताता है । विमला रोती हुई बेहोश होकर भूमिपर गिर पड़ती है । यशोदा मन्त्रीसे दयाकी प्रार्थना करती है और उसके पैरोंपर गिर पड़ती है । माधवप्रसाद उसको उठा लेता है ।]

माधव०—इस पत्थरमें दयाका होना असम्भव है । तू इसके सामने रो कर, और भी दुखी होनेका सामान क्यों कर रही है ? यह पुरुषाकृति हिंसक जीव है, जो अपना स्वभाव नहीं बदल सकता । तू ईश्वरसे

प्रार्थना कर और उसीसे सहायताकी आशा कर। वह दीन प्रतिपालक है, अवश्य हमारे दुखोंका नाश करेगा। (मन्त्रीसे) महाशय! स्त्रियोंने आपका क्या बिगाड़ा है, जो उन्हें भी मेरे समान बन्दी बना रहे हैं? मुझपर जो चाहिये कीजिये और मुझे जहाँ चाहिये ले चलिये।

कृष्ण०—(अपने आदमियोंसे) समय नष्ट न करो। अपना काम जल्द समाप्त करो!

[सिपाही आगे बढ़ते हैं। मदनमोहन विमला और सिपाहियोंके बीच आ जाता है।]

मदन०—तुममेंसे जो कोई आगे बढ़नेका साहस करेगा उसको ऐसा थप्पड़ मारूँगा कि भेजा निकल पड़ेगा। (सिपाही रुक जाते हैं।)

कृष्ण०—(डाँटकर) खड़े हो? तमाशा देखने आये हो? इन सबको जल्दी कैद करो।

(मदनमोहन म्यानसे तलवार निकाल लेता है)

मदन०—ईश्वर मुझे क्षमा कर! (मन्त्रीसे) मैं इस तलवारसे विमलाका काम तमाम किये देता हूँ, किन्तु इसे आपके सुपुर्द न करूँगा। (तलवारकी नोक विमलाकी छातीपर रख देता है।)

कृ० कु०—(सिपाहियोंसे) मैं कह चुका हूँ कि तीनों क़ैद कर लिये जायँ।

मदन०—हे सर्वशक्तिमान्, सर्वान्तर्यामी, सर्वज्ञाता जगदीश्वर! साक्षी रहना। मैंने प्रत्येक युक्तिसे कलह मिटानेका प्रयत्न किया, किन्तु कुछ लाभ न हुआ। वह घटनेके स्थानपर बढ़ती ही दिखाई देती है। मुझे अब उचित है कि किसी अन्य युक्तिद्वारा इस उपद्रवको रोकूँ। (पितासे) आप जब मुझपर तथा अन्य लोगोंपर दया नहीं करना चाहते और अपनी निर्दयता और कठोरतापर अभिमान कर रहे हैं,

तब मुझे भी आपके प्रतिकूल उद्योग करनेका अधिकार है। अब मैं भी किसी सड़कपर खड़े होकर दो चार हजार मनुष्य एकत्र कर लूँगा और सबके सामने कह दूँगा कि आपके समान लोग, इस कालमें किस प्रकार कुटिल नीति तथा पैशाचिक युक्तिद्वारा मंत्री-पदपर पहुँच सकते हैं।

कृष्ण०—(सिपाहियोंसे) रहने दो! मैंने सबको क्षमा कर दिया।

[मन्त्री जल्दीसे बाहर चला जाता है। माधव और यशोदा विमलाके सिरहाने आकर उसे सचेत करनेका उपाय करते हैं। मदनमोहन बाहर चला जाता है। पर्दा गिर जाता है।]

तीसरा अंक

पहला दृश्य।

स्थान—रईसका मुलाकाती कमरा।

समय—२ बजे दिन।

[कृष्णकुमार और मोतीलाल।]

कृष्ण०—अच्छा होता, यदि मैं माधवके घर न जाता और इस प्रकार अपनासा मुँह लेकर न लौटता!

मोती०—श्रीमान् तो इस बातपर घमण्ड किया करते थे कि "मैं बहुत ही चतुर और दृढ़ प्रतिज्ञ हूँ।" सचमुच आपकी यह निराशा आपके घमण्डके प्रतिकूल और चिन्ताजनक है।

कृष्ण०—मैं यों ही वहाँ जाकर लज्जित नहीं हुआ। अकारण ही अपने विचारसे नहीं हट गया। मोतीलाल, क्या वह अभागी रात तुमको याद है?

मोती०—(कुछ रुककर) कौनसी रात?

कृष्ण०—क्वाँर सुदी तीज।

मोती०—वह रात, जो हमारे सौभाग्यका उदय करनेवाली थी, वह रात, जिसमें हमारा अभाग्य नष्ट हुआ, वह रात जिसके समान कोई रात फिर हमें नसीब नहीं हुई।

कृष्ण०—मुंशीजी! तुम भी विचित्र पुरुष हो। तुम जानबूझकर मेरे कथनका तात्पर्य्य नहीं समझना चाहते। बहुत अच्छा! तुम उस

सुन्दर सौभाग्यसूचक रजनी देवीको नहीं भूले, जिसमें मैंने अपना जीवन कलङ्कित किया था। तुम जानते हो कि उस दिन ११ बजे रातको, पूर्व महाराजा एक निमंत्रणमें गये थे।

मोती०—हाँ, हाँ! वही रात जिसमें कि आपने कोड़ाकी जागीरके सम्बन्धमें बातचीत की थी। महाराजके जानेके बाद, मैं और आप, उनके कमरेमें पहुँचे।

कृष्ण०—यह वही कमरा है। सारी वस्तुएँ उसी दशामें विद्यमान हैं। फर्नीचर तथा अन्य सामग्रीमें किसी प्रकारका परिवर्तन नहीं हुआ। मेज तथा लिखने पढ़नेके सामानमें किसीने हाथ तक नहीं लगाया। घड़ीकी सुई वही समय बताती है। ईश्वर! तू न्यायकारी और दयामय है। जिस समय मैं इस कमरेमें आता हूँ, मेरा शरीर काँप जाता है, भय और चिन्ता घेर लेती है। पहले मनुष्य, जिसने जलका पात्र उठाया और उसमें विष मिलाया, क्या तुम न थे?

मोती०—क्या श्रीमानने अपने दासको, नहीं नहीं अपने स्वामिभक्त दासको, महाराजको विष देनेकी आज्ञा नहीं दी थी और नहीं कहा था कि उनके मरनेके पश्चात् रियासतका सारा अधिकार मुझे प्राप्त हो जायगा? जो मनुष्य किसी कामके फलसे लाभ उठाना चाहे, उसे उचित है कि उस कार्य्यके सारे कारणोंका अनुशीलन करे। उस समय आपके पास मेरे समान आज्ञाकारी, चतुर तथा युक्तिवान् दास मौजूद था, इस कारण आपकी मनोकामना पूर्ण हो गई। मैंने पानीमें विष मिलाया और फिर—

कृष्ण०—तुम्हें स्मरण होगा कि उस समय हम दोनोंने एक आवाज सुनी थी।

मोती०—यह आवाज आपके पुत्र मदनमोहनकी थी, जो उस समय लगभग नौ वर्षका था, और जिसे मृत महाराज पुत्रवत् चाहते थे। मदन उस समय उन्हींके कमरेमें सो रहा था।

कृष्ण०—मैं नहीं जानता कि जिस समय हम लोगोंने उस कमरेमें प्रवेश किया, मदन जाग रहा था। दूसरे दिन प्रातःकाल होते ही, महाराजकी असामयिक मृत्युका समाचार चारों ओर फैल गया। मुंशीजी! तुम समझे? ध्यानपूर्वक मेरा कथन सुना? और मेरे कामोंकी पड़ताल की? आजतक किसीने भी उस दुर्घटनका विस्मरण नहीं किया। आज जिस समय मेरे साथके पुलिसके सिपाही माधव और उसकी बेटीको पकड़ना चाहते थे, मदनने कहा—" आप जो चाहें करें, मैं भी नगरके किसी भागमें खड़ा होकर लोगोंको समझा दूँगा कि आपके समान मनुष्य किस प्रकार मंत्री-पद प्राप्त करते हैं।"

मोती०—(हँसकर) धन्य है, बुद्धिमान् और चतुर सपूत पुत्र—

कृष्ण०—यह क्या हँसनेका समय है? तुम मुझे विचित्र पशु मालूम होते हो।

मोती०—नहीं महाशय! मैं हँसता न था, बल्कि दाँत निकालता था। क्या मुझे श्रीमान् आज्ञा प्रदान करते हैं कि मैं अपना विचार प्रकट करूँ? आप यह काम मुझपर छोड़ दीजिये। अच्छा होगा यदि मैं अपने पुराने अनुभवको काममें लाऊँ और आपकी कूट नीतिसे लाभ उठाऊँ। हमारी वर्तमान मर्य्यादा न्यूनाधिक नहीं हो सकती। दास ऐसे कामोंमें दक्ष और अभ्यस्त है। मेरी योग्यताका इससे अधिक और क्या प्रमाण हो सकता है कि श्रीमान् ऐसे महापुरुष, मेरी ही युक्ति और बुद्धिमत्तासे, एक साधारण पदसे राज-मंत्रीके पदपर पहुँच गये हैं?

कृष्ण०—मदनमोहनको जिस कामका पता लग जायगा, उसका परिणाम अच्छा न होगा। उससे हमें कभी शान्ति प्राप्त न हो सकेगी। वह सत्यतामें अपनेको हरिश्चन्द्रका अवतार सिद्ध करना चाहता है। अभी दूधके भी दाँत उखड़े नहीं, और समझता है अपनेको राज-नीति-विशारद। अपनी बुद्धि और पराक्रमके सामने, किसीको कुछ समझता ही नहीं है। मदनपर यह लोकोक्ति ठीक घटती है कि—"ऊँट जबतक पर्वतके नीचे नहीं जाता, तबतक उसकी ऊँचाईका मिथ्याभिमान दूर नहीं होता।"

मोती०—खैर, आप मदनको समझ तो सके।

कृष्ण०—मुंशीजी! अब कोई ऐसी युक्ति करनी चाहिये कि विमलाकी ओरसे मदनको सन्देह हो जाय। यदि मुझसे हो सका, तो विमलापर ऐसा दोषारोपण करूँगा कि मदन तुरन्त उसका त्याग कर दे। कहो, इसमें तुम्हारी क्या राय है? इस समय क्या करना चाहिये?

मोती०—मदनमोहन अभिमानी युवक है। यह युक्ति उसको अधीन करनेके लिये काफी न होगी। यह सेवा सेवकपर छोड़ दीजिये और आप बैठे बैठे आनन्दपूर्वक देखिये कि किस प्रकार मैं यह काम पूरा करता हूँ। मैंने खूब सोच लिया है कि अन्तमें हमारी ही विजय होगी। मैं इस कुरूपता और निकृष्टताके होते हुए भी, विमलाका प्रेमी और उसका हार्दिक मित्र बनकर ऐसी चाल चलूँगा, जिससे मदनमोहनको उसपर सन्देह हो जायगा और वह अवश्य उससे घृणा करने लगेगा। इसके अतिरिक्त कदाचित् आपको विस्मरण न हुआ होगा कि उस दिन जब आप मेरे सहित कमलाके यहाँ थे, तो कमलाने हँसते हँसते, सेनापति वीरेन्द्र विक्रमसे कहा था—"बाजा हाथमें लीजिये और रागको वीणासे मिलाकर, कुछ मनोरञ्जन करनेकी कृपा कीजिये।"

कृष्ण०—तुम थोथी बातोंमें समय नष्ट कर रहे हो। भला उस बातसे और इस कामसे क्या सम्बन्ध ?

मोती०—आप नहीं जानते कि दासके मस्तिष्कमें क्या क्या कौशल और युक्तियाँ भरी पड़ी हैं। संसारमें आप देखते हैं कि लोग दूरके सीधे मार्गको छोड़कर निकट और निष्कण्टक मार्गपर चल दिया करते हैं; परन्तु मैं चाहता हूँ कि टेढ़ा मार्ग एक अनियमित चालसे चल कर समाप्त करूँ, जिससे उसकी प्रत्येक ऊँचाई नीचाईमें तीव्र-गतिसे भाग सकूँ।....

कृष्ण०—मुंशीजी ! अब तो आपका कथन सूत्रोंका रूप धारण कर रहा है। कृपा करके अपना आशय स्पष्ट तथा सुबोध भाषामें कहा कीजिये। इस समय इस प्रकारकी क्लिष्ट और श्लिष्ट भाषाकी आवश्यकता नहीं है।

मोती०—वीरेन्द्र, गान-विद्याका किञ्चित् भी ज्ञान न रखता था, इस लिये बेचारा चुप हो रहा और उसे उपस्थित लोगोंके सन्मुख लज्जित होना पड़ा। दूसरे दिन वह सङ्गीत-शिक्षक माधवप्रसादके घर गया, और उसने उससे चार पाँच प्रकारके राग याद करा देनेकी प्रार्थना की, जिससे वह कमलाका सत्सङ्ग कर सके। माधवने स्वीकार कर लिया किन्तु वीरेन्द्र विक्रमने हठ किया कि मैं तीन दिनमें ही सीख साख कर छुट्टी पा लेना चाहता हूँ। उसने इस अल्प कालमें बारह पाठ पढ़ डाले; परन्तु चौथे ही दिन नगरमें यह बात फैल गई कि आज सेनापतिको किसी कारण माधवप्रसादके घर जानेका साहस न पड़ा।

कृष्ण०—तुम्हारा यह तात्पर्य है कि मदनमोहनने, इस मूर्ख सेनापतिसे डाह की और उसका माधवप्रसादके यहाँ जाना बन्द करा दिया।

मोती०—यह मूर्ख सेनापति जवान और धनवान् है। उसकी बे-मजा बातें तथा कुचेष्टाएँ स्त्रियाँ बहुत पसन्द करती हैं। मदनमोहनजी

इस रहस्यको समझ गये, और इस डरसे कि कहीं विमला उससे प्रेम न करने लगे, उन्होंने सेनापतिका माधवके यहाँ जाना रुकवा दिया। हम वीरेन्द्रको इस कार्य-साधनका हथियार बनाते हैं। हमें आशा है कि हमारी इच्छा अवश्य पूरी होगी। आप भी सिपाहियोंको आज्ञा दे दें कि वे माधवके घरके सामने उसके निकलनेकी प्रतीक्षा करें, और घरसे बाहर होते ही पकड़ लें; उसकी स्त्री यशोदाको भी तीन या चार दिन हवालातमें रक्खें।

कृष्ण०—और लड़कीके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये?

मोती०—लड़कीको तो हम आँखकी पुतलीके समान बचायेंगे। बीस वर्षसे मैं केवल कुटिल नीतिके प्रयोगोंका ही अभ्यास कर रहा हूँ और अपनी सुबुद्धिसे कार्य्य-साधन करता रहा हूँ। मैं इस समय भी उसी देवीकी शरण लेता हूँ, जिससे कि आपकी पूरी सेवा कर सकूँ।

[वीरेन्द्र विक्रमके आनेका समाचार आता है।]

कृष्ण०—मैं इस समय सेनापतिसे किस प्रकारकी बात चीत करूँ?

मोती०—आज मैं ही श्रीमन्के बदले सेनापतिकी उचित अभ्यर्थना करके, उनसे वार्तालाप करूँगा और इस कामको करके ही छोड़ूँगा। मैं इसमें जहाँ तक हो सकेगा किसी प्रकारकी त्रुटि न होने दूँगा। आप शान्तिपूर्वक सब देखते रहें।

(कृष्णकुमार कमरेके पीछेसे बाहर चला जाता है।)

[सेनापति वीरेन्द्र विक्रमका प्रवेश।]

सेना०—मुंशीजी, आश्चर्य है कि उन्होंने मुझे न देखा।

मोती०—महाशय! आपको देखकर ही तो वे यहाँसे चले गये हैं।

सेना०—मैं अपने सारे कामकाज छोड़कर यहाँ तक आया हूँ। मेरी इच्छा थी कि आज उनको नाटक देखनेके लिये ले जाऊँ। किन्तु मंत्रीजी जानबूझकर मुझसे न मिले। उनका यह काम बहुत बुरा है। भला जब वे मुझ ऐसे निष्कपट मित्रसे न मिलेंगे, तो क्या शत्रुओंसे उनकी मित्रता जुड़ेगी?

मोती०—वे इस लिये यहाँसे चले गये कि आप उनको दुःख और क्रोधके प्रभावसे व्यथित अवस्थामें न देखें। क्योंकि मित्रोंसे मिलने और उनसे आनन्द-वर्द्धक वार्तालाप करनेके लिये यह दशा अनुपयुक्त हुआ करती है।

सेना०—जो सारे सांसारिक सुखोंपर पूरा आधिपत्य जमाये हैं, जिनका भाण्डार सब प्रकारसे परिपूर्ण है, जिनके निकट आने मात्रसे दुखियोंका दुख दूर हो जाता है; वे राजमंत्री किसी दुर्वेदनासे दुखी हों; यह बात विश्वासके योग्य नहीं। मुंशीजी, मुझे तो यह कारण ठीक नहीं जँचता। कोई वजह नहीं थी कि वे आज मेरे साथ आनन्द न मनाते।

मोती०—मंत्रीजीके हृदयमें एक ऐसी अग्नि धधक रही है, जो सम्भवतः उनका जीवन-तरु ही भस्म कर डालेगी। मुझे स्वयं भी उस भयङ्कर अग्निसे भय मालूम हो रहा है।

सेना०—मैं उनके हार्दिक और विश्वसनीय मित्रोंमेंसे हूँ। मुझे बतलाइये कि उनको क्या हो गया है और वे क्यों इस प्रकार दुखी और शोकातुर हैं। मित्र, मित्रके काम आता है। यदि मुझसे यह दुख दूर हो सके, तो उसके दूर करनेकी युक्ति की जाय।

मोती०—आप जानते हैं कि वे मदनमोहनका विवाह कमलासे करना चाहते हैं और यह सम्बन्ध, उनकी प्रतिष्ठा बढ़ानेवाला तथा

उनके हितैषियों और इष्ट मित्रों तकके सौभाग्यका कारण है। किन्तु शोक है कि इसे मदनने स्वीकार न किया और सब किया कराया मिट्टीमें मिला दिया। आपहीने तो विवाह-समाचार नगरमें फैलाया था और मदनमोहनकी ओरसे वकालत की थी।

सेना०—मैंने इस सुसम्वादको केवल अपने दो एक मित्रोंतक ही फैलाया था। उन्होंने अपने अपने मिलनेवालोंसे कहा और इस प्रकार धीरे धीरे कमलाके विवाहकी चर्चा सारे शहरमें फैल गई।

मोती०—तब आप गुप्त रहस्यसे अनभिज्ञ ही रहे। आप इस बातका अनुभव न कर सके कि कमलाको स्वयं आपने ही दुखी किया है। यदि आपको ज्ञात होता कि मदन दूसरेसे प्रेम करता है, तो आप मेरे कथनपर आश्चर्य न करते।

सेना०—क्या मदन किसी अन्यको चाहता और अन्यसे प्रेम करता है? मंत्रीजी चाहते हैं कि कमला उसकी शास्त्रोक्त पत्नी हो जाय?

मोती०—जी हाँ, परन्तु मदन इन बातोंपर कान नहीं देता। आप तो जानते ही हैं कि महाराजका अन्तःपुर, हानि-लाभ दोनोंका कोष है। जो मनुष्य महाराजकी नाकका बाल बनना चाहे, उसे उचित है कि ऐसी युक्तिसे चले जिससे सारा महल उसकी मुट्ठीमें रहे। वह पहले झूठे दोष लगाने और कुटिल नीति तथा आसुरी मायामें दक्षता प्राप्त करे। मंत्रीजीके शत्रु, उन्हें और उनके इष्ट मित्रोंको अच्छी दशामें नहीं देखना चाहते। वे सदा उनसे मिले जुले रहते हैं जिससे गाढ़ मैत्री द्वारा अपना काम निकालते रहें। वे उनपर कोई झूठा ही कलङ्क लगाकर उन्हें नीचे गिराना चाहते हैं। आज वह दिन है कि हम सब लोग उनकी सहायताके लिये खड़े हो जायँ। मंत्रीजीने जो जो भलाइयाँ मेरे या आपके साथ

की हों, आज उन सबका बदला देनेका समय है। ऐसा समय बार बार हाथ नहीं आता।

सेना०—मुंशीजी! आप इतने बड़े युक्तिवान् और अनुभवी मनुष्य-होते हुए भी, क्या कोई ऐसा उपाय नहीं कर सकते कि मदन अधीनता स्वीकार कर ले?

मोती०—इसका इलाज केवल आपके हाथ है और वह यह कि मदन अपनी प्रेयसीपर सन्देह करने लग जाय। यदि उसे विश्वास हो गया कि उसकी प्राण-प्यारी किसी अन्यसे प्रेम करती है और उसे धोखा देती है, तो बस काम सिद्ध हो गया। उसी समय हम इस कीचड़में, नवीन मछलियोंको फाँस लेंगे। मैं चाहता हूँ कि आपको विमलाका उपप्रेमी नियत करूँ।

सेना०—आपने कुछ बुरा नहीं सोचा। क्या वास्तवमें वह लड़की कुलीन तथा सुशीला है?

मोती०—वाह! आप भी विचित्र प्रश्न करते हैं! भला सङ्गीत-शिक्षक माधवकी पुत्रीका कुलीनता तथा सुशीलतासे क्या सम्बन्ध हो सकता है?

सेना०—(विस्मयपूर्वक) मदन माधवकी बेटीपर अनुरक्त है! यह वही मनुष्य तो नहीं है जिसने दो तीन दिन तक मुझे भी संगीत सिखाया था और फिर अपने घर न आने दिया था?

मोती०—मदनमोहनहीने, इस भयसे कि कहीं विमला आपपर आसक्त न हो जाय, माधवको समझा दिया था कि आपको अपने यहाँ न आने दे। मदन प्रेम-पन्थमें, आपके समान असावधानीसे नहीं चलता। वह कहता है कि—

गुलाबकी डाल लगे जहाँ कहीं, गुलाबके मञ्जुल फूल आयँगे।
सुवासके हेतु मलिन्द दूरसे, खिंचे हुए पास अवश्य जायँगे॥

अतः इस गुलाबकी सुगन्धसे अपनी नासिका अवश्य सुफल करनी चाहिये। इस कामके लिये, मैंने जो युक्ति सोची है, वह यह है कि मैं आपके लिये एक प्रेम-पत्र विमलाकी ओरसे लाऊँ, आप उसको रख लीजिये और ऐसे स्थानपर जहाँसे मदन निकलता हो डाल दीजिये।

सेना०—यह काम तो मेरे लिये अत्यन्त सहज है। मैं उस पत्रको जेबमें रख लूँगा और जिस समय जेबसे रूमाल बाहर निकालूँगा, पत्र गिर जायगा। मुझे उसका गिरना भी विदित न होगा।

मोती०—एक और कष्ट सहन कीजिये और वह यह कि मदन-मोहनके सामने अपने आपको विमलापर आसक्त, उसका उत्कट प्रेमी और अनुरागी प्रकट कीजियेगा।

सेना०—मैं, ईश्वर तथा अपने धर्मको साक्षी रखकर कहता हूँ कि इसमें लेशमात्र भी त्रुटि न होगी। आपके आदेशानुसार मंत्रीजीके हितका साधन अवश्य करूँगा।

मोती०—एक घण्टेके पश्चात् इसी स्थानपर आपको पत्र तैयार मिलेगा। आप उस समय पधारनेकी कृपा करें और पत्र लेकर सब काम करें।

[सेनापति उठकर चला जाता है। उसी समय एक नौकर आता है और मोतीलालको इस आशयका पत्र देता है कि माधवप्रसाद और उसकी स्त्री यशोदा दोनों कारागारमें भेज दिये गये; अब आप अन्य कामोंमें लग जाइये।]

दूसरा दृश्य।

समय—४॥ बजे दिन।

[अकेला कृष्णकुमार]

कृष्ण०—(धीरे धीरे) नहीं मालूम कि मदनमोहन क्यों उससे घृणा करता है। जिसकी सुशीलता तथा गुणोंपर बड़े बड़े युवराज

मुग्ध हैं, जिसके कृपाकटाक्षसे सारा दर्बार अपनेको धन्य मानता है, जिसका रूप लावण्य सारे देशमें प्रसिद्ध है, जो अपने समान आप ही कही जा सकती है; वही कमला मदनमोहनको पसन्द न हो—आश्चर्य्य है। सच है, कहीं कहीं उत्तम पदार्थ भी विषके समान हो जाया करते हैं। कुत्तेको मधुर मधु अच्छा नहीं लगता, घी मक्खी आदि मलीन जन्तुओंका प्राणघातक है, उल्लूको दिनमें नहीं सूझता, चातक वर्षामें भी प्यासा रहता है। यह क्यों ? अपने अपने भाग्यका दोष।—

"सकल पदारथ हैं जगमाहीं,
कर्महीन नर पावत नाहीं।"

मदनके ऊपर साढ़ेसाती शनीचर है। वह उसे विपत्तिकी ओर ही ले जाना चाहता है। भला जो हीरेको फेंककर गुंजा ग्रहण करे, जो अमृतपर लात मारकर विष-पान करे, जो गङ्गाजल फेंककर तलैया-का गन्दा जल पान करे, उसे मूर्खके सिवाय और किस संज्ञासे सम्बोधित किया जा सकता है ? मदन, तूने राजनीतिका तत्त्व और राज-धर्म बिल्कुल नहीं जाना। तू कमलासे केवल इसी लिये घृणा करता है कि उसका सारा भरण-पोषण महाराजके हाथमें है। उसकी रक्षा महा-राज स्वयं करते हैं। संसारमें ईर्षा द्वेष करनेवाले पुरुष बहुत हैं। उन्हें कमलाका यह सुख सहन नहीं हुआ। उन्होंने उसे अपनी दुष्ट प्रकृतिके वशीभूत हो अनेक लाञ्छन लगा डाले; हर तरह उसको बदनाम कर डाला। राजाका धर्म है कि वह प्रजाका पालन करे, अपनी दुखी और पीड़ित प्रजाको सुखी तथा सम्पत्तिवान् बनानेका प्रयत्न करे। यदि महाराजने कमलाकी दुर्दिनमें सहायता की, उसको सुखी बनाया, उसके योग्यतानुसार राज्य-प्रबन्धका अधिकार दिया, तो क्या पाप किया ? जगदीश ! तू सांसारिक मनुष्योंको सुबुद्धि प्रदान कर जिससे वे ऐसे

निर्मूल कलङ्क लगाकर तेरे सामने अपराधी न बनें। (इसी समय एक साईस आता है और कहता है कि 'गाड़ी तय्यार है।' कृष्णकुमार सैर करनेको चला जाता है और पर्दा गिर जाता है।)

तीसरा दृश्य।

स्थान—माधवप्रसादके घरका कमरा।

समय—१॥ बजे दिन।

[विमला और मदनमोहन।]

विमला—प्यारे! आजकी घटनाने मेरी सारी आशाओंपर पानी फेर दिया। वह मेरी आशा-लताके लिये पालेके समान जीवन-नाशक हुई।

मदन०—आजकी दुर्घटनासे तुम्हें भयभीत अथवा निराश न होना चाहिये। मेर पिता, सर्वदा ही मर्यादाके बाहर पैरं रक्खा करते हैं; किन्तु तुम यदि मेरी बात सुनो तो कहूँ। यह तो कदापि सम्भव नहीं कि मैं पिताजीको दुखी करूँ और उनको अपमानित करके उनके कूटनीति-मिश्रित कार्य्योंमें हस्तक्षेप करके अपने सौभाग्यका स्वप्न देखूँ। हमारी सारी आशायें, इच्छायें और सुवासनायें, केवल इन दो शब्दोंमें छिपी हुई हैं—तुम और मैं। जबतक तुम हो, संसारकी सारी सम्पत्तियाँ हैं। तुम मुझको चाहती हो और मैं तुमको। तुम मुझसे हो, मैं तुमसे हूँ। क्या तुम्हारा मनोमोहन सौन्दर्य्य और लावण्य दुर्दिनमें तसल्ली देनेवाला और शरीर तथा आत्माका बलवर्धक नहीं है? क्या मैं............

विमला—प्यारे! मैं तुम्हारा तात्पर्य्य समझ गई। हमें अपनी दशापर विचार करना चाहिए।

मदन०—प्यारी! कुछ सोच विचार कर देखो कि संसारमें हमें क्या करना है और किस प्रकार रहना है। जिस दशामें हम अपनी सुयुक्तिद्वारा प्रसन्नचित्त रह सकते हैं, उस दशामें क्यों दूसरोंकी सहायता प्राप्त करनेका प्रयत्न करें? हम ऐसे स्थानपर क्यों रहें जहाँ कि हमारे प्रेममें बाधा पड़े और हमारा अमूल्य मुक्ता मूल्यमें घट जाय? क्या सारा संसार हम दो प्राणियोंके लिये संकुचित है? क्या हम दोके लिये कहीं स्थान न मिलेगा? क्या हम दोनों प्रेमी, एक दूसरेके वास्ते मान-मर्य्यादाकी पूँजी नहीं हैं? प्यारी! यहाँ तुम्हारी ये मदभरी आँखें—जो मेरे जीवनका सहारा हैं—निरन्तर ही आँसू बहाया करती हैं। क्या तुम नहीं चाहतीं कि तुम्हारे ये मृगविनिन्दित नेत्र, श्रीभागीरथीके तट अथवा हिमालयकी किसी रमणीक चोटीपर, आँसुओंके स्थानपर, आनन्द और प्रमोदकी अटूट धारा बहायें? इस संसारमें मेरी किसी प्रकारकी जागीर अथवा सम्पत्ति नहीं है। मेरा तो वही देश है, जहाँ विमला हो। तुम मुझे अपना सच्चा प्रेमी समझो।—

राज्यसे कम सुख नहीं, यदि मित्र अपना पास है,
इसके विना नन्दन-विपिन भी दुखद कारावास है।
मित्र सँग विपिनस्थली भी वाटिकासे कम नहीं,
विश्वकी सब सम्पदा अनुराग-सुखके सम नहीं॥

प्यारी! तुम सोचती होगी कि यदि हम किसी स्थानपर जा छिपेंगे, या किसी निर्विघ्न शान्ति-निकेतनमें रहने लगेंगे, तो चित्त-विनोद तथा मनोरञ्जनकी सामग्री कम हो जायगी। नहीं, नहीं, ऐसा कदापि न होगा। संसारमें जहाँ कहीं हम लोग जायँगे, दिन रात चन्द्रदेव तथा भगवान् मार्तण्ड, उदय-अस्त होते रहेंगे। आकाशमण्डल क्षितिजके ऊपर, हमारे नेत्रोंको, अपने अनुपम दृश्यसे आनन्द प्रदान करेगा।

हम मन्दिरोंमें जानेसे रोके जा सकते हैं, किन्तु प्राकृतिक छोटे बड़े जङ्गली वृक्षों तथा लताओंका पूजन कोई मानवी शक्ति नहीं रोक सकती। जब कि संसारका प्रत्येक पदार्थ, जगदीशकी शक्तिका द्योतक है, तो मैं हर वस्तुको देवता मानकर पूज सकता हूँ। हम उन जङ्गलोंमें, जिनको प्रकृति माताने अपने हाथोंसे रङ्गविरङ्गे वस्त्र पहिनाये हैं और जिनका स्वयं श्रृङ्गार किया है, आनन्दपूर्वक जप-योग साधन किया करेंगे। प्रिये! यहाँसे भाग चलो, जिसमें इन दुष्टोंके कुसङ्गसे छुटकारा मिल जाय। इन लोगोंके शरीरमें मर्य्यादा बढ़ानेकी तृष्णा और शत्रुताके कुरोगने, रक्तसञ्चालिनी नसोंके सदृश स्थान पकड़ रक्खा है। इन महापुरुषोंने मनुष्य-समाजको नष्ट-भ्रष्ट कर देनेकी दृढ़ प्रतिज्ञा कर रक्खी है। इन्होंने अपने नगरों तथा अधिकृत प्रदेशोंको, ईर्षा, द्वेष, दुराचार और फूटकी विषैली-वायुसे दूषित कर रक्खा है और उनकी शुद्धता तथा स्वच्छता नष्ट कर दी है। प्यारी! हमारा जङ्गल इन सब उपद्रवोंसे रहित है। इन दुष्टोंके हृदयपटलपर, दुखियोंका आर्तनाद, बादलके समान छाया नहीं डालता। इनकी पृथ्वीको, असहाय लोगोंका नेत्र-जल, उमड़कर आर्द्र नहीं करता। दिनमें सूर्य्यभगवान् तथा रातमें नक्षत्रगण, अपने राजासहित, परमेश्वरका गुणानुवाद करनेमें हमारे साथ रहेंगे। सुमुखी! दो शुद्ध हृदयोंको, जिनमें अनुराग-धन छिपा हुआ है तथा दो शुद्ध जिह्वाओंको, जो प्रेम तथा अनुरागके विचारोंको भली भाँति प्रकाशित कर सकती हैं; इन पशु-प्रकृति मनुष्योंसे दया-भिक्षा माँगनेकी क्या आवश्यकता है?

विमला—क्या कोई दृश्य अथवा कष्ट आपको इन विचारोंसे नहीं रोक सकता?

मदन०—प्यारी! प्रेमसे बढ़कर कौनसा दृश्य अथवा कष्ट है और कौन पथप्रदर्शक तथा शिक्षक है?

विमला—किन्तु प्यारे, मैं तो तुम्हारे समान स्वतंत्र नहीं हूँ। मेरे पिता हैं जिनके जीवनका मैं सहारा हूँ। हमारे इस पारस्परिक प्रेमके कारण मेरे साठ वर्षके बूढ़े पितापर, मंत्रीका कठिन प्रकोप हो गया है और बहुत सम्भव है कि उससे पिताजीको कष्ट तथा हानि सहनी पड़े।

मदन०—यदि चाहें तो वे भी हम लोगोंके साथ चले चलें। आज मैं मार्गोपयोगी सामग्री ठीकठाक करके रक्खूँगा और अपने वेतनका सारा धन इकट्ठा कर लूँगा। यद्यपि वह धन पर्य्याप्त नहीं है, किन्तु फिर भी बहुत दिनोंतक काम देगा। एक घड़ी रात व्यतीत होनेपर मैं गाड़ी लेकर आ जाऊँगा, तुम तैयार रहना।

विमला—मैं तो तुम्हारे साथ चली चलूँगी, किन्तु तुम्हारे पिताका क्रोध हम लोगोंके पीछे लगा रहेगा। प्यारे! पिताका आशीर्वाद, जितना प्रभाव डालता है, उनका शाप भी उससे कुछ कम प्रभाव नहीं डालता। दुष्ट तथा दुराचारी जन भी माता-पिताके क्रोधसे डरते हैं। आपके पिताका घृणा-शर, प्रत्येक स्थानपर हम लोगोंको अपना निशाना बनावेगा। हम लोग माता-पिताको दुःख-सागरमें डूबते छोड़कर चले जायँ, तथा सांसारिक आधि व्याधिसे किञ्चित् भी न डरें; यह कहीं सम्भव है? मदन! मैं तुमसे इस लिये प्रेम करती हूँ कि हम अपना जीवन मान-मर्य्यादा-पूर्वक व्यतीत कर सकें, न कि इस लिये कि अपमानका भार सिरपर लादे लादे फिरें। मेरा कर्त्तव्य है कि तुम्हारे इस विचारको पलट दूँ या तुम्हारे प्रेमकी ओरसे नेत्र बन्द करके मुख फेर लूँ। हा जगदीश! मदनको त्याग देना या उसके प्रेमसे विमुख हो जाना........यह दुःख सहन नहीं किया जा सकता। यह विचार ऐसा हानिकारक है कि मैं इसे अब मनमें भी न आने दूँगी। मनुष्य उसी वस्तुको छोड़ अथवा कम कर सकता है; जिसका वह स्वामी हो। तुम किसी समय मेरे

जीवन-धन नहीं हुए, और न मैं उसकी स्वामिनी हुई। किन्तु आशा और सुखेच्छाने मुझे अन्धा कर दिया। मदनमोहन, मेरा इस प्रकारका कटु भाषण कभी उत्तम नहीं कहा जा सकता; परन्तु क्या करूँ? मेरे लिए अब यही अच्छा है कि क्रोध तथा सन्तापके गहरे समुद्रमें विलीन हो जाऊँ। मुझे किसीके मुखसे यह न सुनना पड़े कि 'बेटेको बापसे जुदा करा दिया।' प्यारे! या तो तुम भागनेका विचार छोड़ दो अथवा मुझे क्षमा कर दो।

मदन०—हाय! विमला ही आज मुझे इन मार्मिक शब्दोंमें उत्तर देती है! विमला! मैंने ये सारी आपत्तियाँ अपने ऊपर क्यों उठा रक्खी हैं?

विमला—प्यारे मदनमोहन! मुझे त्यागकर दूर रहो! मुझसे घृणा करो! मैं और कुछ नहीं हूँ, केवल तुम्हारे हृदय-दर्पणको मैला और गन्दा करनेवाली हूँ। एक दिन शिकारसे लौटते समय, मुझपर अचानक ही तुम्हारी दृष्टि पड़ गई। तुम उसी दिनसे प्रेम करने लगे। अब तुम समझ लो कि मुझे तुमने देखा ही न था। मैं एक निर्गन्ध तथा कण्टकाच्छादित पुष्प हूँ, जो तुम्हारे सत्सङ्गके योग्य नहीं।

मदन०—मै यहाँसे चले जानेका दृढ़ निश्चय कर चुका हूँ। तुम्हारा यह इन्कार करना, इस कामसे मुझे रोकना, मेरे दिलमें सन्देह उत्पन्न कर रहा है। कदाचित् इसमें कोई रहस्य छिपा हुआ हो। मैं तुम्हें कलतकका समय देता हूँ। खूब सोच विचार लो, और फिर ठीक उत्तर दो, जिससे मुझपर प्रतिकूलताका दोषारोपण न किया जा सके। [प्रस्थान

विमला (स्वगत)—मेरे नीच हृदय! अच्छा होता यदि तू प्रेम-पथमें पैर ही न रखता और मोह-मायामें न फँसता। परमात्मन्! तू इस निर्बल हृदय तथा उत्साहहीन मनको बल प्रदान कर जिससे मैं इन दुःखोंका भली भाँति सामना कर सकूँ। आज कोई नहीं, जो मुझे

शिक्षा देकर, ढारस बँधावे। हे पालक पिता तथा आनन्ददायिनी माता, तुम कहाँ हो! क्या कर रहे हो! वात्सल्य प्रेम त्याग कर कहीं तुम दोनों भी अपनी प्यारी बेटीको न छोड़ देना। मैं अबतक क्यों जीवित हूँ? नहीं मालूम, भाग्य-विधाताने कैसी कैसी भयानक आपत्तियाँ मेरे भाग्यमें लिख रक्खी हैं। (मोतीलाल दूरसे आता देख पड़ता है।)

विमला—यह मानसिक पीड़ा मेरे मस्तिष्कमें भयानक विचार भर रही है। मेरे नेत्र प्रत्येक दिशाकी ओर देखते हैं, किन्तु उन्हें भयोत्पादक तथा विचित्र दृश्योंके अतिरिक्त कुछ नहीं दिखाई पड़ता। (आँखें मूदकर बैठ जाती है।)

[मोतीलालका प्रवेश।]

मोती०—कहिये, श्रीमती प्रसन्न तो हैं?

विमला—हाँ, अच्छी तरह हूँ। आपने क्यों यहाँ पधारनेकी कृपा की है?

मोतीलाल—मैं इस समय आपके पिताकी ओरसे दूत बन कर आया हूँ।

विमला—आपके इस कथनपर क्योंकर विश्वास किया जाय?

मोती०—इस पत्रसे। (पत्र देता है।)

विमला—(पत्रका कुछ भाग देखकर) मेरे पिताको कैद किया है। भला, मेरे पिताने किसीका क्या अपराध किया था?

मोती०—आपके पिता माधवप्रसादने, राज्यके मंत्री श्रीमान् कृष्ण-कुमारको अपने घरमें अपमानित किया है। अभीतक राजसभाने, उनको अपनी रक्षामें रख छोड़ा है। निश्चय है कि उन्हें कड़ेसे कड़ा दण्ड दिया जायगा। आप पत्र पढ़ जाइये।

विमला—(पत्र पढ़ती है—)

"मेरी प्रिय-पुत्री विमला ! तू न जानती होगी कि मैं इस पत्रको किस स्थानसे भेज रहा हूँ। तू क्या जाने कि इस तंग तथा अँधेरी कोठरीमें मुझपर कैसी बीत रही है। तू अपने पिताको इस दुःखसे मुक्त कर सकती है। तू मदनमोहनको—जो हमारे अभाग्यका मूल कारण है—तुरन्त त्याग दे। तेरी माता भी कैद कर ली गई है। मदन हमारे यहाँ कभी न आने पावे, हमारा छुटकारा केवल इसी शर्तपर हो सकता है। तेरा पिता,—माधव।"

विमला—(पत्र पढ़नेके पश्चात् मोतीलालकी ओर देखकर) मुंशीजी ! आप जानते हैं कि आप किस महान् पापके भागी हो रहे हैं ? दुखी आत्माओंको शोक-समाचार पहुँचाना, निर्बलोंके हृदय दुखी करना, यह ऐसा पाप है कि इसका प्रायश्चित्त नहीं हो सकता। यह कितनी बड़ी नीचता तथा कठोरता है कि कोई मनुष्य किसी दुखियाके घर जाकर उसे कुसमाचार दे, उसे भयभीत तथा व्याकुल करे और स्वयं कठोरताकी मूर्ति बन कर चुपचाप देखा करे कि वह किस प्रकार रोता है। महाशय, आप मुझे दुखी करके खूब प्रसन्न हो लें। कहिये, काल-चक्रने, अब मेरे लिये कौनसा षड्यंत्र रचा है ?

मोती०—आपको मुझसे कुछ हार्दिक घृणासी है, इसलिये मेरा यहाँ आना अच्छा नहीं मालूम होता। उत्तम होगा कि मैं यहाँसे चला जाऊँ। अच्छा, ईश्वर आपकी रक्षा करे। मैं जाता हूँ। (जाना चाहता है।)

विमला—(रोककर) आपकी प्रकृतिमें दया तथा शीलका अभाव है। पाठशालामें आपने निर्दयता और कठोरताका ही पाठ पढ़ा है। मेरी छातीमें आपने तीक्ष्ण शब्द-बाण मार दिया है और पिघला हुआ सीसा मेरे कानोंमें डाल दिया है। आप चाहते हैं कि इस पीड़ाकी ओषधि किये बिना ही चले जायँ। कहिये, कारागार-वासके अतिरिक्त मेरे पिताके लिये और क्या दण्ड नियत हुआ है ?

मोती०—या तो उन्हें फाँसी दे देंगे, या जन्मभर कैदमें रक्खेंगे।

विमला—(उठकर) क्षमा कीजिये, इस समय मेरी यह इच्छा होती है कि घरमें ताला लगाकर सीधी महाराजके पास चली जाऊँ।

मोती०—(हँसकर) जाइये! महाराजके पास अवश्य जाइये!

विमला—मैं अभी जाती हूँ। आप हँसते हैं, इसीसे न कि महाराजमें दयाका अभाव है? आप मेरी हँसी उड़ाते हैं। क्या आप यह बताना चाहते हैं कि जिस महापुरुषके पास मैं न्याय तथा सहायता प्राप्त करनेके लिये जाना चाहती हूँ, वह विधि-वामता और अभाग्यका अर्थ नहीं समझता? इस समय जब कि शोकाग्नि, पीड़ा, निराशा तथा आत्मीय जनोंका वियोग, मेरी शक्ति क्षीण कर रहे हैं, मैं चाहती हूँ कि उस निर्दय न्यायाधशिके निकट जाकर अपना रोना रोऊँ और ऐसे रक्तरञ्जित आँसू बरसाऊँ कि यदि उसका हृदय पत्थरका भी बना हो, तो भी मेरे कारुणिक रुदनसे पिघल जाय। ईश्वर ऐसा शक्तिशाली तथा न्यायकारी है कि वह निर्बलों तथा पीड़ितोंकी न्यायपूर्वक सहायता करता है और सबलोंसे निर्बलोंका बदला चुकाता है।

मोती०—किन्तु अफसोस कि वहाँ आपका रोना धोना कुछ प्रभाव न डाल सकेगा।

विमला—क्या महाराज मनुष्य नहीं हैं? हृदयहीन हैं? ईश्वरसे नहीं डरते? यदि मैं महाराजके पैरोंपर गिर पड़ूँगी, तो क्या वे मेरे पिताको मुक्त न करेंगे?

मोती०—उनका अपराध तो क्षमा कर देंगे, किन्तु तुमसे कुछ चाहेंगे।

विमला—उच्चवंशीय महाराज, भला मुझ रङ्क-पुत्रीसे क्या चाहेंगे?

मोती०—आप इस मनोमोहनी सुन्दरता तथा हृदयको खींचनेवाले लावण्यद्वारा बहुतसी वस्तुयें महाराजको भटें कर सकती हैं। कमलाने राजान्तःपुरको त्याग दिया है। यदि उसके स्थानपर आप महाराजके अन्तःपुरमें प्रवेश करें, तो सहज ही अपनी इच्छा पूर्ण कर सकती हैं।

विमला—(आवेशपूर्वक) मेरे दुखी पिता! तुम्हारे मुक्त करनेके लिये तुम्हारी बेटी कालके गालमें भी जानेके लिये तय्यार है; किन्तु इस प्रकारकी अपकीर्ति तथा बदनामी स्वीकार नहीं कर सकती। वह अपना सतीत्व किसी राजा, राजपुत्र अथवा किसी सम्राट्को भी अर्पण नहीं कर सकती।

मोती०—आपकी दशा देखकर मैं कह सकता हूँ कि माधवप्रसादने आपके द्वारा मुक्त होनेकी आशा बेकार ही कर रक्खी है। (जाना चाहता है।)

विमला—ठहरिये मुंशीजी, आपने तो इस घटनापर विचार किया है। यदि आपसे हो सके तो कोई ऐसी युक्ति बतलाइये, जिससे मेरे पिता मुक्त हो जायँ।

मोती०—यदि आप मुझसे इसका उपाय पूछती हैं, तो पहली युक्ति तो यही है कि मदनमोहनसे सम्बन्ध तोड़ दीजिये।

विमला—(चिन्तित दशामें) अच्छा, अपने पिताके लिये मैंने यह भी स्वीकार किया।

मोती०—मुझे कैसे विश्वास हो कि आप सत्य कह रही हैं?

विमला—मैं आपका आशय न समझी। आप किस प्रकार विश्वास करना चाहते हैं?

मोती०—आप मेजके सामने बैठ जाइये और कलम उठाकर लिख दीजिये।

विमला—मैं नहीं जानती कि क्या लिखूँ और किसको लिखूँ।

मोती०—उनको लिखिये, जिनके हाथमें आपके पिताका जीवन है।

विमला—(स्वगत) हाय ! तुम्हारी निर्लज्जता तथा कठोरतासे ईश्वर बचावे। (प्रकाश्य) क्या लिखना चाहिये ?

मोती०—लिखिये। (विमला लिखना आरंभ करती है) "दो तीन दिन हो गये, मुझे आपके दर्शन तक न हुए। प्यारे, अपने मनसे जान लीजिये कि आपके वियोगमें मुझे एक एक पल कल्पके समान बीत रहा है। वह कौनसा कारण है जो मेरे तथा आपके मिलापमें बाधा डाल रहा है ? क्या मदनमोहनके कारण ही आपने मुझको त्याग दिया है और मुझे अपनी प्रेम-दृष्टिसे गिरा दिया है ? यह सच है कि मदनमोहन मेरे पीछे सर्पके समान लगा हुआ है। वह मुझको किसी भी समय अकेला नहीं छोड़ता कि मैं घड़ीभर भी अपनी दशापर विचार कर सकूँ। किन्तु वह चाहे जितना प्रयत्न करे, मेरी उस प्रेमाग्निको नहीं बुझा सकता, जो आपके कारण लगी हुई है।"

विमला—(कलम रखकर) यह कैसा काग़ज़ है, जो इस समय मैं लिख रही हूँ ? वह अज्ञात मनुष्य कौन है ?

मोती०—यह वह मनुष्य है जिसपर आपके पिताका भविष्य निर्भर है।

विमला—नहीं मुंशीजी, मैं न लिखूँगी। परमात्मन्, यदि मैं तेरे सम्मुख अपराधिनी हूँ, तो तू दूसरी रीतिसे मुझे उसका दण्ड दे। मुझे कोई ऐसी ताड़ना देकर क्षमा कर दे, जिसको मैं अबला सहन कर सकूँ। महाशय, मैं न लिखूँगी।

मोती०—आप मेरी रायको स्वीकार करने या न करनेमें स्वतंत्र हैं। मुझसे आपने उपाय पूछा, मैंने ऐसी सहल युक्ति आपको बतला दी

जिससे सारा काम बन जाय। आप कुछ विवश तो हैं नहीं कि मेरी रायपर कार्य्य करें ही। आप न लिखिये।

विमला—मुझ ऐसी अबलासे—जो एक चिउँटीसे भी अधिक निर्बल है और जिसको तुम शोकाग्निसे सन्तप्त देख रहे हो—कहते हो कि तुम विवश नहीं हो! अरे पापी, चाण्डाल, हिंसक, दु:शील, अधर्मी! क्या तुझको ईश्वरका भी डर नहीं है? अच्छा, पिताके छुटकारेके लिये, यह विश्वास-घात भी मैंने अङ्गीकार किया। जो चाहो, कहो, मैं लिखती हूँ।

मोती०—कदाचित् आपने सुना होगा कि कल मंत्री महाशय एक भोजमें सम्मिलित हुए थे। मैंने उस भोजमें, जान बूझकर एक ऐसा नाट्य किया कि मदनमोहन धोखा खा गया और समझा कि मैं भयसे अचेत हो गया हूँ।

विमला—(आप ही आप) प्यारा मदन आज भाग जानेकी तैय्यारी कर रहा था, कल मुझे अपने साथ लेकर वह किसी अन्य स्थानको प्रस्थान कर जायगा। (प्रकाश्य) आप याद रखिये, यह सब मैंने कलेजेपर पत्थर रखकर लिखा है। ईश्वर आपको इसका बदला देगा।

मोती०—पत्रकी पीठपर सेनापति वीरेन्द्र विक्रमका नाम लिख दीजिये। आपको याद होगा कि ये महाशय एक बार आपके घरपर गान-विद्याकी शिक्षा प्राप्त करनेके लिये पधारे थे।

विमला—इस नामका एक मनुष्य दो तीन दिन हमारे यहाँ आया तो था; परन्तु मैंने उससे कभी बातचीत नहीं की। (पत्रपर सेना-पतिका नाम लिखकर मोतीलालको देती है और कहती है) लीजिये मुंशीजी! आज मैं अपनी सारी मान-मर्य्यादा आपके हाथ सौंपती हूँ। यह पत्र मेरा तथा मदनका हृदय है, जो आज आपके हाथों दो टुकड़े हो रहा है। इस काग़ज़ने हम दोनोंका प्रेम-सम्बन्ध विच्छेद कर दिया। मेरा

सर्वस्व, जिसको मैं प्राणोंसे भी अधिक चाहती हूँ, हाथसे जाता रहा। अब मैं एक कुलटा लड़कीसे अधिक मर्य्यादा नहीं रखती।

मोती०—श्रीमती! आप निराश न हों। यह सारा प्रबन्ध आपके सौभाग्यके लिये रचा गया है। मैं उन सब रहस्योंको जानता हूँ। मैं आपके प्रेमका हृदयसे स्वागत करनेवाला हूँ और तैयार हूँ कि अपना बहुमूल्य जीवन आपके पद-कमलोंपर निछावर कर दूँ। यदि मैं आपकी सेवाके द्वारा अपनेको धन्य करना चाहूँ, तो क्या आप स्वीकार न करेंगी?

विमला—स्वीकार करूँगी; किन्तु इस लिये कि प्रथम मिलापके समय तेरा पेट फाड़ डालूँ और सर्व साधारणको तेरे राक्षसी दुष्कार्य्योंसे बचाऊँ। तू आकाश-पुष्प तोड़नेका विचार कर रहा है। इस धारणाको तू अपने मस्तिष्कसे निकाल डाल। मैं तेरी दुर्वासना भली भाँति समझती हूँ; परन्तु क्या गरीब कबूतर, तेज उड़नेवाले बाज़के चुंगलसे छूट सकता है तथा स्वतंत्रतापूर्वक उड़ सकता है?

मोती०—हाँ एक शर्त रह गई है। आप मेरे सामने कसम खायँ कि मदन तथा सबके सामने कह दूँगी कि यह काग़ज़ मैंने स्वेच्छासे लिखा है और अपने प्रतिज्ञानुसार कार्य्य करूँगी। यदि आपके पिता पौन घण्टेके पश्चात्, इसी स्थानपर उपस्थित हो जायँ, तो फिर आपकी शपथ छूट जायगी।

विमला—यह शर्त भी स्वीकार कर ली। अब तू यहाँसे चला जा और मुझे मेरे हालपर छोड़ दे, अधिक न सता!

[मोतीलालका प्रस्थान।]

चौथा अङ्क ।

पहला दृश्य ।

—:०:—
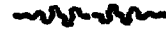
स्थान—मदनमोहनके बैठनेका कमरा ।

समय—९ बजे दिन ।

[मदनमोहन कमरेमें अकेला बैठा हुआ विमलाका पत्र पढ़ रहा है ।]

मदनमोहन—यह कदापि सम्भव नहीं कि यह पत्र विमलाने लिखा हो । नहीं नहीं, मैं भूल रहा हूँ । यदि इस समय देवगण देवलोकसे आकर विमलाकी पवित्रताकी साक्षी दें, यदि सारे संसारके मनुष्य इकट्ठा होकर उसे निरपराधिनी सिद्ध करनेका प्रयत्न करें, तो भी मैं यही कहूँगा कि तुम झूठ कहते हो । यह विमलाका पत्र है जो उसने स्वयं ही वीरेन्द्र विक्रमको लिखा है । यह एक ऐसा तिरिया-चरित है, जो किसीने भी कभी न देखा होगा । जब मैं हठपूर्वक कहता था कि इस मनुष्यको अपने घर न आने दो, तब सत्य ही कहता था । अब मैं समझा कि उसने भागना क्यों स्वीकार न किया और दूसरी जगह चलनेपर क्यों राजी न हुई । हाय, मैं मृगतृष्णा और उसकी दुरङ्गीसे अन्धा होकर न देख सका कि वह किस साहससे स्वच्छन्दतापूर्वक वार्तालाप कर रही थी, और मुझे सांसारिक लाञ्छनों तथा दैवी-कोपसे भयभीत करती थी । यह मायां और कुटिलता उस विमलाने मुझसे की, जिसे मैं अपनी जीवितेश्वरी समझता थां । हाय ! उस आनन्ददात्री और प्रेम-पात्रीने, जो मेरे जीवनका आधार थी, मुझे धोखा दिया और मुझे चिन्ताग्निमें झोंक दिया । जगदीश ! तू गुप्त-प्रकट सबका जाननेवाला है । भला, मेरे असीम अनुरागका क्या यही फल मिलना था जो विमला द्वारा मुझे प्राप्त हुआ ? हाय, उसने मुझे कुछ भी न समझा । इस निर्दयताका भी कुछ ठिकाना है, जो उसने

धारण की ? मैं अपने दुर्भाग्यको रोऊँ अथवा विमलाकी कठोरताकी चिन्ता करूँ ? विमला ! जान पड़ता है कि ब्रह्माने तुझे राक्षसी-प्रकृतिकी बनायी है। उसने तेरे मुखारविन्दपर सुन्दरताका उबटन लगाया, तेरे मस्तिष्कको उच्च विचारोंसे परिपूर्ण किया और हृदयमें उच्चाभिलाषाकी आशा जाग्रत की। क्या यह सब दैवी गुण तुझमें इसी लिये सञ्चित किये थे कि तू सीधे सादे मनुष्योंको मायाग्निमें भस्म किया करे, और उनको ऐसे दुःखागारमें बन्द कर दे कि पुनः उससे निकलना कठिन हो जाय ? अरी मायाविनी ! भला मुझसे ऐसा कौनसा अपराध हुआ, जो तूने इस प्रकार निष्ठुरता धारण की ? उस हृदय-राज्यको—जिसकी तू साधिकार स्वामिनी थी—तूने क्यों अकस्मात् खराब कर डाला ? मेरे पिता सत्यपर थे। शोक कि मेरी अज्ञानता, मूर्खता तथा जड़ताने, मुझपर, उनकी शिक्षाओंका प्रभाव न पड़ने दिया। यदि मुझे कुछ भी दूरदृष्टि प्राप्त हुई होती, तो आज मैं इस कपट-प्रेममें न फँसता। इस प्रकार दुखी न होता और यह निराशा तथा शोक-सन्तापका विष मेरे कण्ठमें न पड़ता। मैंने तेरा पक्ष लेनेके अर्थ, पिताकी आज्ञाका उल्लंघन कर डाला। तेरे प्रेमने मुझे ऐसा अन्धा कर दिया था कि उससे मैं जल्दी ही कोई महान् पाप कर बैठता। अरी दुष्टा ! जिस समय तू कमल-कोषमें मोतियोंको चमकाती हुई मेरे सामने खड़ी होती थी और बड़ी बड़ी प्रतिज्ञाओं तथा वचनोंद्वारा मुझे वशीभूत करनेका प्रयत्न करती थी, जिस समय रातमें हम दोनों आमने सामने बैठकर, ताराच्छादित आकाशमण्डलकी छटा देखते और प्रमुदित होते थे और जिस समय तू मेरा हाथ अपने हाथमें लेकर प्रेमभरी दृष्टिसे मुझे देखती थी, उस समय मैं मुग्ध हो जाता था और इन सब बातोंको सच समझता था। शोक है कि मेरी सुखेच्छा और तेरी प्रतिज्ञा दोनोंमें ही स्थिरता न थी। जिस समय मैं और वीरेन्द्र

सामने सामने होंगे, उस समय इस पत्रको देखकर वह क्या कहेगा? उस समय मुझे क्या करना होगा?—मृत्यु या प्रतिघात।

(एक नौकर आता है और सेनापतिके आनेकी खबर देता है।)
[सेनापति वीरेन्द्र विक्रमका प्रवेश।]

वीरेन्द्र०—महाशय, क्या आपने मुझे याद करनेका अनुग्रह किया है?

मदन०—हाँ, इसलिये कि अपना सन्देह आपके सामने प्रकट कर दूँ। यदि आप न आते तो आज मुझसे एक बड़ा भारी पाप हो जाना सम्भव था। कमला तथा मेरे विवाहकी बातचीत तो आप सुन ही चुके होंगे?

वीरेन्द्र०—इस सम्बन्धकी चर्चा मेरे कानोंतक अवश्य पहुँची है, किन्तु साथ ही यह भी सुना है कि आप इस परिणयसे राजी नहीं हैं।

मदन०—ठीक, ठीक, बिल्कुल ठीक। कारण यह कि मैं एक मध्यम श्रेणीकी लड़कीसे प्रेम करता था, जिसका नाम विमला है और जो सङ्गीत-शिक्षक माधवप्रसादकी पुत्री है।

वीरेन्द्र०—आश्चर्य है कि आपके समान कुलीन तथा उच्च वंशीय पुरुष ऐसे नीच कुलकी नीच लड़कीपर आसक्त हों।

मदन०—सेनापति महाशय, मैं यदि उस लड़कीकी वास्तविक मानसिक दशा जानता होता, तो कदापि उससे सम्बन्ध तथा प्रेम न करता। किन्तु कुछ अद्भुत घटनाओंने मुझे इस आपत्तिमें फँसा दिया। आज मैं अपने एक मित्रके पीछे पीछे जा रहा था कि कुछ दूर चलकर उसने जेबसे रूमाल निकाला और तब यह काग़ज पृथ्वीपर गिर पड़ा। देखिये भवितव्यता! यह काग़ज था, जो कुटिला प्रेमपात्रीने उस पुरुषको लिखा था। यह पत्र ध्यानपूर्वक देखिये! कदाचित् आप इसको पहिचानते हों।

वीरेन्द्र०—विचित्र रहस्यमय घटना है। (कागज़को देखता और कहता है) यह पत्र तो मुझको ही लिखा गया है। यह लड़की उच्चवंशज न होने पर भी कुछ सुन्दर जरूर है; जो प्रेम करनेका मूल कारण हो सकती है।

मदन०—कहिये, यह पत्र आपको लिखा गया था?

वीरेन्द्र०—हाँ, इनकार करने तथा छिपानेकी कोई जगह नहीं।

मदन०—(क्रोधपूर्वक) तो सेनापति महाशय! आपका अन्तिम समय निकट आ पहुँचा है। अपने पापोंपर पश्चात्ताप कीजिये और यदि किसीसे कुछ कहना सुनना हो, कह सुन लीजिये!

वीरेन्द्र—महाशय मदन! आप दीवाने हो गये हैं, क्योंकि क्रोधाग्निकी लपटें आपके नेत्रोंसे निकल रही हैं। (जाना चाहता है।)

मदन०—अब भागनेकी चिन्ता न कीजिये। मैं आपके साथ द्वन्द्व युद्ध करूँगा। यदि आपने मुझे मार डाला तो मुझे जीवन-कष्टसे छुड़ा दिया, और यदि मैंने आपको मार डाला तो समझूँगा कि मैंने अपना बदला चुका लिया।

वीरेन्द्र०—(डरकर) यह कौनसा विचार है जिसने आपको मेरे मारनेपर तय्यार कर दिया?

मदन०—आप तो प्रेम-पन्थके आचार्य तथा उसके नामी पथिक हैं। आश्चर्य है कि फिर भी आप मृत्युसे डरते हैं। जल्द लड़नेके लिए तय्यार हो जाइये। टालमटोल ठीक नहीं।

वीरेन्द्र०—इस कमरेमें तो मल्लयुद्ध तक नहीं हो सकता।

मदन०—आप सच कहते हैं। अच्छा तो आँगनमें चलें और दोनों एक दूसरेपर फायर करें। वीरेन्द्र! समय अकारथ मत जाने दो। मैं ऐसे जीवनसे घृणा करता हूँ।

वीरेन्द्र०—भाई! मुझे तो अपने प्राण प्यारे हैं और अभी वर्षों जीवित रहना चाहता हूँ।

मदन०—तू चाहता है कि अपना कलङ्कित वंश बढ़ाता रहे और अपने दुर्व्यसन तथा कुस्वभावका बीज उसमें बोया करे। अरे नीच! तू इस घृणित जीवनको धारण किये रह! तेरा मुख देखना भी पाप है—शरीरके रोंगटे खड़े हो आते हैं। बता कि तूने यह तलवार क्यों बाँध रक्खी है और क्यों यह वीर-वस्त्र शरीरपर लाद रक्खे हैं? तेरे सदृश पापी तथा कायर मनुष्यका रहना न रहना बराबर है। मैं तेरे वचतकसे घृणा करता हूँ। अब यह कह कि तूने त्रिमलाको कब देखा और कबसे तू उसपर आसक्त हुआ?

वीरेन्द्र०—ईश्वर जानता है कि मैंने इस लड़कीको केवल एक बार देखा है। यह सारी माया आपके पिता तथा अन्य लोगोंकी रची हुई है।

मदन०—दूर हो निर्लज्ज, दुरात्मा, पापी, तुझपर गोली बारूद खर्च करना बेकार है। (सेनापति धीरेसे चुपचाप चला जाता है।)

दूसरा दृश्य।

स्थान—मदनमोहनका कमरा।

[कृष्णकुमार और मदनमोहन।]

कृष्ण०—मदन! मैं तुम्हारे लिये एक सुसम्वाद लाया हूँ, जिसको सुनकर तुम आनन्दित तथा प्रफुल्लित हो जाओगे।

(मदनमोहन पिताके सामने सिर नीचा किये खड़ा रहता है)

कृष्ण०—बोलते क्यों नहीं? तुम्हारे हाथ पाँव क्यों काँप रहे हैं? (मदनमोहन पिताके चरणोंपर गिर पड़ता है) यह क्या बात है? उठो, मेरे प्यारे मदन, उठो।

मदन०—मैं आपका अभागा बेटा हूँ, जो युवावस्थाकी जड़ताके वशीभूत हो, गुरुजनोंके आदर-सत्कार तथा उनके साथ व्यवहार करनेतकसे दूर भाग गया। आपकी कृपा, आपका प्रेम तथा आपकी शिक्षाओंकी मैंने कुछ भी क़दर न की। पिताजी, मैं धर्मसे कहता हूँ कि मैं सब प्रकारकी ताड़नाओं तथा कठोरसे कठोर दण्डोंका भागी हूँ। आपसे अपने अपराधोंकी क्षमा चाहता हूँ, नहीं तो पागल हो जाऊँगा।

कृष्ण०—मदन ! मैं पहलेहीसे सत्यपर था। इसी लिये चाहता था कि तुमसे मिलकर तथा समझा बुझाकर तुम्हारी उन्नतिका पथप्रदर्शक बनूँ और अपनी इच्छाको आनन्द तथा प्रेमपूर्वक पूर्ण करूँ।

मदन०—(धीरेसे) हाय विमला !........

कृष्ण०—क्या कहा मदन ? वास्तवमें विमला है तो बड़ी सुन्दर लड़की। वह स्त्रीधर्म तथा शिष्टाचारमें भी कुशल है। मैं उसे तुम्हारे समान ही चाहता हूँ। तुमसे उसे किंचित् मात्र भी कम नहीं गिनता। वह स्त्री-रत्न कही जा सकती है।

मदन०—(आँखें नीची करके) जब आप उसमें सब प्रकारकी योग्यता पाते हैं, तो फिर मुझसे कभी कभी आपके विचारोंका प्रतिकूल हो जाना आश्चर्यजनक है। (धीरेसे) हाय ! विमला !

कृष्ण०—वह अवश्य इस योग्य है कि मेरी बहू बने और अपने शुद्ध व्यवहारोंसे हमारे गृहको स्वर्ग बनावे।

(मदनमोहन बिना उत्तर दिये चला जाता है। पर्दा गिर जाता है।)

तीसरा दृश्य ।

स्थान—कमलाका सजा हुआ कमरा ।

समय—७ बजे प्रातःकाल ।

[कमला और चम्पा ।]

कमला—तूने उसे देखा था ? वह आवेगी ?

चम्पा—हाँ, मैंने उसे घरमें देखा था । जिस समय मैं उसके पास पहुँची, वह स्नानकी तैयारी कर रही थी ।

कमला—यहाँ आनेके लिए कोई टालटूल तो नहीं की ?

चम्पा—जैसे ही आपका संदेशा उसको सुनाया, वह चिन्ता-सागरमें डूबने लगी और कुछ देर बाद, कुतूहलमय दृष्टिसे देखकर, मुझसे बोली कि आज आपने वह आज्ञा प्रदान की, जिसकी स्वप्नमें भी मुझे आशा न थी और जिसकी मैं कभी प्रतीक्षा ही न कर सकती थी ।

कमला—क्या यह गँवार लड़की भी कभी मदनके सहवासके योग्य हो सकती है ? यदि मदन उससे विवाह कर लेगा, तो सिवाय बदनामीके और क्या पावेगा ? लोग कहेंगे कि इतने बड़े अमीरका लड़का एक ढाढ़ीकी कन्यापर मर गया । अच्छा अब मुझे क्या करना चाहिये ?

चम्पा—यह चर्चा उस प्रतिद्वन्द्वीके सम्बन्धमें है, जो आपसे पहले ही अपने कार्य-साधनका उपाय कर चुकी है । आपने उसे अपने यहाँ बुला भेजा है, इस लिये आप खुद ही विचार करें कि आपको उससे किस प्रकारकी बातचीत करनी चाहिये । मेरे विचारमें आप पहले अपने उच्च वंशका वर्णन करके अपनी मान-मर्यादाका दिग्दर्शन कराइये, फिर अपने रत्नाभूषणों तथा असीम सम्पत्तिका वर्णन कीजिये

और उसके बाद अपनी दास दासियोंकी सेना दिखलाइये। सारांश यह कि अपने वैभव तथा अधिकारोंका प्रभाव उसके हृदय-पटलपर जमा दीजिये।

(एक दासी विमलाके आनेकी खबर देती है।)

कमला—चम्पा तू बाहर चली जा। आवश्यकता पड़नेपर तुझे बुला लूँगी।

(चम्पाका प्रस्थान।)

[विमलाका प्रवेश।]

विमला—रानीजी, आज आपने मुझे दर्शन देनेका कष्ट सहन किया है। आपके आज्ञानुसार, यह दासी सेवामें उपस्थित है।

कमला—क्या तुम वही हो जिसने सारे महलमें शोक-सन्तापका राज्य स्थापित कर रक्खा है? तुम्हारा नाम क्या है?

विमला—मेरा नाम विमला और मेरे पिताका नाम माधवप्रसाद है।

कमला—(आप ही आप) लड़की सुन्दरी तथा कमलाक्षी है, किन्तु इतनी प्रशंसाके योग्य नहीं, जितनी कि हो रही है। (प्रकाश्य) जरा निकट आ जाओ। इस सिफ़ारिशी चिट्ठीको देखो। मुझको एक परिचारिकाकी आवश्यकता है। तुम्हारे लिये मुझसे सिफारिश की गई है और लिखा है कि यह लड़की बहुत सुशिक्षिता और सुशीला होनेके अतिरिक्त व्यवहार-कुशल भी है। जिस मनुष्यने तुम्हारा परिचय दिया है, वह बड़ा आदमी है। मैं उसके कथनको मिथ्या नहीं मान सकती।

विमला—मेरा तो ऐसा कोई हितैषी नहीं है, जिसे मेरी चिन्ता हो और जो मुझे किसी जगह लगा दे।

कमला—यह तो बताओ कि तुम्हारी अवस्था कितनी है?

विमला—सोलह वर्ष।

कमला—(धीरेसे स्वगत) सोलह वर्ष! यही समय तो प्रेमाङ्कुरित होनेका है। युवावस्थाकी वासनायें इस समय मानस-केन्द्रमें जाग्रत हो जाती हैं। यही समय है, जब कि जीवन-विटप पूर्णताको प्राप्त हो जाता है और उसमें प्रेम तथा अनुरागके फल आने लगते हैं। ऐसी दशामें इन दोनों प्रेमियोंके पारस्परिक अनुरागपर क्यों आश्चर्य प्रकट किया जाय? (विमलासे) मेरी परिचारिका चम्पा अपने पतिके पास जाना चाहती है। तुम उसके स्थानपर काम करो। मैं तुम्हें किसी प्रकारका कष्ट न होने देनेका वचन देती हूँ।

विमला—मैं आपकी इस आज्ञाका पालन करनेमें स्वाधीन नहीं हूँ। आप मेरी जगह किसी औरको यह पद प्रदान कीजिये।

कमला—विचित्र समय आगया है। अपनी वर्तमान दशापर कोई भी सन्तुष्ट नहीं देख पड़ता। तुम्हारे समान यदि किसीको उसके योग्य काम मिल जाता है, तो भोग-विलासकी उत्कट इच्छा उसको वह काम करनेसे रोक देती है। क्या तुम्हारी उँगलियाँ इतनी कोमल हैं कि तुम काम न कर सकोगी? वे तुम्हें कोमलताके कारण काम करनेसे रोकती हैं? क्या तुम्हारी इस असाधारण सुन्दरताने अहंकारका भाव उदय कर दिया है?

विमला—रानीजी, आपका यह विचार बिल्कुल निर्मूल है। मैं न अपनी दीनतासे दुखी या लज्जित हूँ, न अपनी सुन्दरतापर अहङ्कार करती हूँ और न किसी विशेष सुखकी ही आशा रखती हूँ।

कमला—सुन्दरी! तुम सोचती होगी कि युवावस्थाका लावण्य तथा मुख-कमलकी शीतलता तथा प्रभा, सर्वदा इसी दशामें बनी रहेगी। तुम अबोध सीधी साधी बालिका हो। तुम इन बातोंको क्या जानो। जिसने

तुम्हें इस नाशवान् धनका विश्वास दिलाया, तुम्हें इसपर अहङ्कार करना सिखाया; उसने अच्छा नहीं किया। ज्यों ही तुम्हारी सुन्दरताके वसन्त-राजने अपना डेरा उठाया, और तुम्हारी इस पुष्प-वाटिकाकी हरियाली कम हुई, त्यों ही तुम्हारे वे हार्दिक प्रेमी, जो तुमारे यौवन-दीपकपर पतङ्गोंके समान प्राण देनेको तय्यार रहते थे, इस प्रकार तुमसे कोसों दूर भागेंगे जिस प्रकार व्याघ्रादि हिंसक जीवोंको देख कर मृग भागते हैं और तुम्हें पश्चात्तापकी अग्निमें सन्तप्त करेंगे। तुम्हारे हाथ पछतावे और लज्जाके अतिरिक्त कुछ भी न लगेगा। तुम अपने दुर्भाग्यपर रोया करोगी।

विमला—रानीजी, मेरे मनमें कभी इन अभिमानसे भरे हुए विचारोंने प्रवेश नहीं किया। जिस विचारने मुझे आपकी सेवासे रोका है वह यह है कि मैं नहीं चाहती कि मेरी उपस्थिति किसी प्रकार आपके आनन्द-विनोदमें बाधक हो, जिसके होनेकी बहुत कुछ सम्भावना है।

कमला—(स्वगत) सत्य कहती है। इसका हक़ है, यह कह सकती है। (प्रकाश्य) युवती! इसके अतिरिक्त क्या कोई और भी कारण है जो तुम्हें इस कामसे रोक रहा है? सम्भव है कि मैं उसका अनुमान न कर सकी हूँ और उसे न समझी हूँ।

विमला—क्या आपकी यह धारणा है कि यदि आप उस गुप्त कारणको समझ जाएँगी, तो मैं आपके बदला लेनेसे भयभीत हो जाऊँगी? श्रीमतीजी, मेरे अभाग्यकी सीमाका अनुमान करना मानवी शक्तिसे बाहर है। आपदाओंकी भयङ्कर मौजें मेरे सरसे गुजर चुकी हैं और मेरी नाव निराशाके समुद्रमें पड़ कर चकनाचूर हो चुकी है। जब कि मैं दुःखों और आपत्तियोंके स्वागतके लिये स्वयं तैय्यार हूँ,

तो किसीके वैमनस्य तथा किसीकी घोर प्रतिकूलता या शत्रुतासे क्यों डरने लगी ? रानीजी, क्या आप बतलानेकी कृपा करेंगी कि आप किस लिये मेरी संरक्षिका होना चाहती हैं ? क्या आप स्वयं भी—जो मेरे सौभाग्यकी मूल कारण बनना चाहती हैं—वास्तवमें सौभाग्यवती या सुखी हैं ? भले ही मैं अपनी वर्तमान दशा आपके सम्मुख प्रकट न कर सकूँ; फिर भी यह निश्चय है कि आप अपनी उच्च दशाको मुझसे अधिक सुखदायी सिद्ध नहीं कर सकेंगी ।

कमला—मैं दृढ़ विश्वासके साथ कह सकती हूँ कि यह आत्माभिमान, दृढ़ता तथा वाक्चातुरी, जो तुम्हारे कथनसे टपकती है, तुममें प्राकृतिक नहीं है और तुम्हें तुम्हारे माता-पितासे प्राप्त नहीं हुई है । अवश्य ही तुम किसी अन्य चतुर व्यक्तिद्वारा पढ़ाई गई हो ।

विमला—जिस बातको आप मुझसे अधिक अच्छा जानती हैं, उसके विषयमें क्यों मुझसे पूछनेका कष्ट उठा रही हैं ?

कमला—हाँ, मैं जानती हूँ, तथा अन्य बातोंको भी भली भाँति जानती हूँ । तुम्हें उचित है कि आज उन्हें सर्वथा भुला दो और पुनः इन विचारोंको अपने पास फटकने भी न दो ।

विमला—आप इस प्रकार मुझे नहीं डरा सकतीं और एक दुखिया लड़कीको, जिसने आपके साथ कभी कोई बुराई नहीं की, नहीं सता सकतीं । आपका शिष्ट स्वभाव, स्वाभाविक कुलीनता तथा आपकी शक्ति मेरी बाधक नहीं बन सकती ।

कमला—क्या मैं चेतनारहित हो गई थी, जो तुमसे इतनी प्रतिकूलता दिखलाई, इतनी आतङ्कपूर्ण बातचीत की ? प्यारी विमला, मुझे क्षमा प्रदान करो । मैं अब अपने जीवन तकसे विमुख हूँ । मैं आज

चक्रवर्ती राज्यतकपर लात मारती हूँ। यदि तुम्हारा बालतक बाँका होगा, तो मैं अपना खून बहा दूँगी। जो कुछ चाहो, मुझसे लो। मुझको अपनी सखी मानो। नहीं नहीं, तुम मेरी सारी सम्पत्तिपर अधिकार कर लो। किन्तु उन्हें, मुझे अर्पण कर दो।

विमला—श्रीमतीजी! यह कार्य्य आपकी रुचिके अनुसार हो जायगा। आप चाहती हैं कि मैं उनको तिलाञ्जुलि दे दूँ। बहुत अच्छा। मैंने उनको आपपर छोड़ा। आप उनसे प्रणयकी दृढ़ स्थापना कीजिये और प्रसन्न रहिये। किन्तु यह भी जान लीजिये कि मैं उनके चरणोंपर अपने शरीरका बलिदान कर दूँगी। मैं और कुछ नहीं कर सकती। इसके पश्चात् मेरी काल्पनिक आकृति सर्वदा आप तथा उनके सम्मुख घूमा करेगी। श्रीमतीजी, मैंने आपको बहुत कष्ट दिया। अब घर जानेकी आज्ञा दीजिये। ईश्वर आपकी इच्छा पूरी करे। [प्रस्थान ।

कमला—(स्वगत) परमात्मन्! किस प्रकारका सम्मिलन था, उसने मुझे किस दृष्टिसे देखा, किस ओजस्विनी भाषामें उसने यह कहा— "उनको मैंने आप पर छोड़ा।" मदनसे भी यह कहना चाहिये। सम्भव है कि कोई गुप्त रहस्यका उद्घाटन हो और उससे मेरा काम बन जाय। हे मेरे उच्छृङ्खल हृदय! अब तेरे धैर्य्य धारण करने तथा सन्तुष्ट हो जानेका समय है। आँसुओ! अब वह समय आ गया कि तुम्हारी अटूट धारा शुष्क हो जाय। आज मैं इस नगरसे जाती हूँ। अब यहाँ एक मिनट भी न ठहरूँगी। (काग़ज़ कलम उठा कर महाराजको पत्र लिखती है।)

" मान्यवर! मेरी और आपकी मित्रता, इस शर्तपर स्थापित हुई थी कि यह राज्य समृद्धशाली हो और प्रजा सुखी रहे; परन्तु हुआ इसके प्रतिकूल। प्रजापर नाना अत्याचार हो रहे हैं। उनके आर्तनाद तथा

चीत्कारने मेरे हृदयको दुखी तथा चित्तको अव्यवस्थित बना डाला है। मैं उस पुष्पकी सुगन्धसे दूर भागती हूँ, जो लाखों दुखी आत्माओंके अश्रु-जलसे उत्पन्न हुआ हो। श्रीमान् जो प्रेम मुझसे रखते हैं, वह अब किसी अन्यको दान कर दें। अन्तिम निवेदन यही है कि श्रीमान् अपनी अधीन प्रजापर दया-दृष्टि रक्खें। एक घण्टेके पश्चात् मैं आपके नगरकी सीमा पार कर जाऊँगी। आपकी दासी—

कमला।"

[पत्र महाराजके पास भेज देती है। पर्दा गिरता है।]

पाँचवाँ अङ्क ।

पहला दृश्य ।

स्थान—माधवप्रसादका घर ।

समय—६ बजे सन्ध्या ।

[माधवप्रसाद अकेला बैठा है ।]

माधव०—विमला, तू कहाँ है ? उत्तर क्यों नहीं देती ? तेरा पिता तुझे देखना चाहता है । आ, मेरे जीवन-धन आ, तुझे छातीसे लगाऊँ, तेरे मुखकी बलायें लूँ । (दूसरे कमरेमें जाता है, लैम्प जलाता है, और कहता है) अरे अभागे पिता ! धैर्य धर, प्रातःकाल होनेके पूर्व ही नदीके किनारे जा और अपनी प्रिय-पुत्रीको तलाश कर । कदाचित् वहाँ तेरा खोया हुआ धन तुझे मिल जाय ।

[विमलाका प्रवेश ।]

विमला—(आप ही आप) मैं मनमें विचारती थी कि मैंने वचन देकर, धोखा खाया; किन्तु मैं देखती हूँ कि वे अपने वचनपर जमे हुए हैं । शोक कि मेरा अधिकार हाथसे जाता रहा । (पिताकी ओर देखकर दौड़कर) अहा ! आप आ गये । ईश्वरकी कृपा है कि आप कुशलपूर्वक अपने घर लौट आये ।

माधवप्रसाद—मेरी प्यारी विमला ! मैं तुझसे बहुत प्रसन्न हूँ । मुंशी मोतीलालने यह सुसमाचार सुनाकर मुझे हर्षित किया कि विमलाने मदनमोहनको त्याग दिया और यह समाचार पाते ही मंत्रीने मुझे मुक्त कर दिया । बेटी, तू हजारों वर्ष जिए । तेरे प्रयत्नसे तेरे बूढ़े बापने जेल-खानेसे छुटकार पाया ।

विमला—माताजी कहाँ हैं ? उन्हें आप अपने साथ क्यों नहीं लाये ?

माधव०—विमला ! कुछ न पूछ । यदि वह आज न छोड़ दी जाती, तो बहुत सम्भव था कि अब तक पागल हो गई होती । बेचारी इस पचास वर्षकी उम्रमें आत्मिक वेदनाके कारण इतनी दुर्बल हो गई है कि मेरे साथ घर तक न आसकी, इसलिए उसे उसकी बहिनके यहाँ ही छोड़ आया हूँ, जिसमें दो तीन दिन वहाँ रह कर कुछ स्वस्थ हो ले । मोतीलालकी बातोंपर मैंने विश्वास न किया । यदि मुझे निश्चय होता कि कलके समान कोई नवीन घटना न होगी, तो अवश्य उसे भी अपने साथ ही लेता आता । वास्तवमें तेरी माताका ही सारा अपराध है ।

विमला—नहीं, मेरी मातापर दोष न लगाइये, और न अपने आप-हीको घृणाकी दृष्टिसे देखिये । सारा अपराध तथा दोष मेरा है । एक भयानक समरस्थली मेरे सम्मुख विद्यमान थी । ईश्वरने मुझे वह बल प्रदान किया कि मैंने बिना प्रयास या किसी प्रयत्नके उस युद्धमें वासनाओंपर विजय प्राप्त किया । प्रायः सभी पुरुषोंका विश्वास है कि हम अबलायें निरी अबला हैं और हम कोई अधिकार या किसी प्रकारकी स्वाधीनताकी पात्र नहीं; परन्तु आप इस निर्मूल और स्वार्थमय कथनपर विश्वास न कीजिये । प्रायः स्त्रियाँ जरासे भयसे भीत हो जाती हैं; किन्तु ऐसा भी देखनेमें आता है कि महान् विपत्तियोंमें भी वे अविचल भाव धारण किये रहती हैं और शूर सामन्तोंके समान, साहसपूर्वक मृत्युका सामना करती हैं । जिन हजरतने मेरे नाशका पूरा पूरा प्रबन्ध किया है, वे हर्षित होते होंगे और अपने मनमें सोचते होंगे कि उन्होंने मुझे शपथकी जंजीर-में बाँधकर क़ैद कर लिया है और मूकताकी मोहर मेरी जिह्वापर लगा दी है । परन्तु उन्हें इस बातका पता नहीं है कि क़सम बिन्दा मनुष्योंके

लिये है, मुर्दोंका उससे कोई सम्बन्ध नहीं है। ज्यों ही मौत आवेगी, कसम-की जंजीर टूट जायगी और उसके पश्चात् सारे गुप्त रहस्य प्रकट हो जायँगे। (विमला एक पत्र लिखने लगती है।)

माधव०—(घबड़ाया हुआ विमलाके पास जाकर।) विमला! तू क्या कहती है और यह क्या लिख रही है?

विमला—मैंने शपथ ले ली है कि मदनमोहनसे किसी प्रकार न मिलूँगी। इसी आशयका पत्र उनके नाम लिख रही हूँ। क्या आप आज्ञा देते हैं कि यह पत्र मदनके पास भेज दूँ?

माधव०—हाँ, इस शर्तपर कि मैं उसे पढ़ लूँ तथा यह जान लूँ कि उसमें क्या लिखा है।

विमला—पिताजी, मैं इस समय अपने आपेमें नहीं हूँ। न मुझे लज्जा है और न संकोच। लीजिये आप इसे पढ़ लीजिये। यह पत्र दूसरोंकी दृष्टिमें तो मृत शरीरसे अधिक नहीं है, क्यों कि जो कोई इसे देखेगा, खेद प्रकट न करेगा, किन्तु उस महापुरुषके लिये तो यह सञ्जीविनी बूटीसे कम नहीं होगा, जिसे यह लिखा गया है। (दे देती है।)

माधव०—(पत्र लेकर पढ़ता है—)

"प्यारे मदन! शत्रुओंने एक बड़ा भारी प्रपञ्च रच कर, मेरे और तुम्हारे दृढ़ तथा विशुद्ध प्रेम-सम्बन्धको विच्छेद कर देनेका प्रयत्न किया है। मैं इन थोड़ेसे शब्दोंके अतिरिक्त और कुछ नहीं लिख सकती। क्योंकि मैं प्रतिज्ञा-पाशमें जकड़ी हुई हूँ। मेरी जिह्वा बन्द है। वह एक शब्द भी नहीं निकाल सकती। तुम्हारे पिताके जासूस मेरे पीछे भूत होकर लगे हैं। मैं न तो अब तुमसे इस झोंपड़ीमें मिल सकती हूँ जिसे आपकी उपस्थिति इन्द्रभवन बना देती थी, और

न श्रीभागीरथीके तटपर ही मिल सकती हूँ, जहाँ मैं तुम्हारे साथ पवित्र भावसे तैर किया करती थी। प्यारे! यदि तुम्हें मुझसे मिलनेकी अभिलाषा है, तो उसके लिये एक दूसरा स्थान है, जहाँ न कोई भेदिया ही पहुँच सकता है और न कोई जासूस। वह इतना सुरक्षित स्थान है कि वहाँ दो प्रेमी, बिना किसी प्रकारके लोकापवाद या निन्दाके, स्वच्छन्दतापूर्वक, सानन्द अपना जीवन व्यतीत कर सकते हैं। (माधवप्रसाद क्रूर दृष्टिसे विमलाकी ओर देखता है तथा पुनः पढ़ने लगता है) किन्तु इस शान्ति-मन्दिरमें प्रवेश करने तथा इस उपाधिरहित नगरमें पहुँचनेके लिये हमें उचित है कि साहसको अपने साथ ले लें, जिससे इस दुरूह तथा तिमिराच्छादित पंथको सहज ही पूरा कर डालें। भोग-विलासकी इच्छाओंको त्याग दो और अपनी आत्माको इस मार्गका पथ-प्रदर्शक नियत करो। उसके आदेशके अनुसार ही इस पन्थको समाप्त करो। यह मार्ग सांसारिक विषय-वासनाओंसे शुद्ध है। जिस समय सूर्य्य भगवान् हमारे मस्तकपर विराज रहे हों, ठीक वही समय हमारे प्रस्थानका है। तुम भी मार्गोपयोगी सामग्री बाँध कर, मार्गपर चल पड़ो। इस कार्य्यमें इतनी जल्दी करो कि अपनी विमलाको पकड़ लो।   तुम्हारी दासी—

विमला।"

माधव०—(पत्रको मेज़पर रखकर) विमला, वह स्थान जहाँ तू जाना चाहती है, कहाँ है?

विमला—पिताजी, आप उसे नहीं जानते। वहाँ हर एक मनुष्य नहीं पहुँच सकता; किन्तु मदनमोहन अवश्य पहुँच जायँगे। इस स्थानको मैं आपके सामने केवल एक शब्दमें ही प्रकट किये देती हूँ। क्योंकि उसका परिचय देनेके वास्ते मैं एक शब्दसे अधिक नहीं जानती।

परन्तु उसका नाम सुनकर आप कुछ चिन्ता न कीजियेगा। क्योंकि मूर्ख मनुष्य ही उसे भयोत्पादक समझ कर चिन्ता करते हैं। तत्त्वदर्शी तथा पण्डित लोग तो अमरत्वका स्थान समझकर उसकी प्रतिष्ठा करते हैं। यह वह स्थान है, जो उन प्रेमियोंको अपनी संरक्षकतामें ले लेता है, जिनका हृदय वियोग-व्यथासे दुखी हो रहा है। वह वियोगियोंको संयोगकी महोषधि खिलाकर अच्छा करता है। यह वह स्थान है, जहाँ न अहङ्कार है और न ऊँच-नीचका विचार, जहाँ न मृत्युका भय है और न जीनेकी तृष्णा। पूज्य-पिताजी! वह स्थान 'चिता' है।

माधव—(शोकातुर होकर) हाय हाय, तूने ऐसी भयङ्कर जगह जानेका निश्चय किया है!

विमला—आप डरते क्यों हैं? आपको काल्पनिक भयने चारों ओरसे घेर लिया है। अन्यथा इस शब्दके अर्थमें तो ऐसी कोई बात नहीं; जिससे आप भयभीत हो जावें। यदि सूक्ष्म-दृष्टिसे देखें, तो ज्ञात हो जायगा कि आप अकारण ही व्याकुल हो रहे हैं। 'चिता' तो आनन्दका घर है, जिसपर दिनमें भगवान भास्कर, अपनी स्वर्ण-रंजित चादर डालते हैं और रातमें चन्द्रदेव अपनी सुकोमल तथा शीतल चन्द्रिकाका वितान तानते हैं। मेघ गुलाब-जल छिड़कते हैं और शीतल मन्द समीर सुगन्ध विकीर्ण करती है। चितासे पापी पुरुष भले ही डरें; परन्तु जो लोग अपने जीवन-कालमें पापके निकट होकर भी नहीं निकले, वे उससे क्यों डरने लगे! इसमें सन्देह नहीं कि पहले प्रकारके मनुष्योंके लिए मृत्यु एक महान् विपत्ति है, किन्तु दूसरे प्रकारके निष्पाप मनुष्योंके लिए वह ईश्वरीय अनुकम्पा है। वे इसे अमूल्य रत्नके समान समझते हैं। मृत्यु अनुरागके समान सूक्ष्म, रक्षकोंके समान हितैषी और पितरोंके समान पूजनीय है। मृत्यु दुखियोंके लिये सुखस्थान और

यमपुरके यात्रियोंके लिये पड़ाव है। यह उन लोगोंको उत्साहित करनेवाली है, जो इस दुःखागारके दुखोंसे दुखी होकर नैराश्य-दशाको प्राप्त हो चुके हैं और उन लोगोंके लिये स्वर्गधाम है, जो सांसारिक झगड़ोंसे छुटकारा पाना चाहते हैं। यह एक देवता है, जो इस अन्धेरे भवनसे निकालकर प्रकाशपूर्ण स्थानपर ले जाता है। पिताजी, यह चिता ऐसा उत्तम स्थान है।

माधव—विमला! क्या तू आत्म-हत्या करना चाहती है? तुझे यह पाप कदापि न करना चाहिये।

विमला—क्या इस संसारसे चला जाना पाप है जहाँ कि मैं रात दिन अविरल अश्रु-धारा बहाया करती हूँ? मुझे संसारमें ऐसा कौनसा सुख प्राप्त है जिसके कारण मैं इसे छोड़ना स्वीकार न करूँ?

माधव—पाप नहीं, महापाप है। आत्म-घात सारे पापोंसे बढ़कर है। आत्म-घाती मनुष्यको ईश्वर भी क्षमा नहीं करता है।

विमला—क्या मुझे इतना अवकाश नहीं है कि मैं ईश्वरसे क्षमा प्रार्थना करूँ? क्या मुझे क्षमा मिलना असम्भव है?

माधव—मैं कोई धर्माचार्य नहीं हूँ, फिर भी इतना कह सकता हूँ कि तू इस पापसे बच और ईश्वरके निकट अपराधी मत बन। जो मनुष्य सांसारिक विषय-वासनाओंमें फँसकर, ईश्वरसे विमुख हो जाता है और उसकी सेवासे अलग रहना चाहता है, वह अवश्य ही अपराधी बनता है। विमला, जब कि तू आत्म-घात करनेपर तय्यार है, तब मुझे भी मार डाल, और अपने साथ ले चल, जिससे तेरे साथ मैं भी आनन्दपूर्वक अपना शेष आयु काट सकूँ। तू मेरी आत्मा है, तू मेरे जीवनका सहारा है। यदि तेरे हृदयमें पिता-प्रेमका थोड़ासा भी अंश है—।"

शेष है, तो तू ऐसे निन्दनीय कार्यको कदापि न करेगी। मैंने तेरा १६ वर्ष तक पालन-पोषण किया है। इस लम्बे समयमें विचार करके देख कि मैंने कैसे कैसे कष्ट सहन किये हैं और कितनी बाधाओंका सामना करके तुझे इतना बड़ा किया है। तू देखती है कि वृद्धावस्थाका बर्फ मेरे सिरपर जम गया है। सम्भव है कि मेरा जीवन जल्दी समाप्त हो जाय। अब समय है कि तू मुझे सहारा दे। क्या तू यह पसन्द करती है कि मेरे उपकारोंका बदला तू अपने वियोगके रूपमें अदा करे और मुझे बिलखता हुआ छोड़कर चली जाय? (रो देता है।)

विमला—तो बतलाइये, इस समय मेरा क्या कर्तव्य है? क्या करना चाहिये?

माधव—यदि मदनमोहन तुझे अपने पिताके आँसुओंसे अधिक प्यारा हो; तो मर जा। मैं अपने कलेजेपर पत्थर रख कर यह दुःख भी सहन करनेका प्रयत्न करूँगा।

विमला—मैं अभागिनी........मैं असहाया........(जो पत्र मदनको लिखा था फाड़ डालती है) यह मदनमोहनके सामने अपनी पराधीनता सिद्ध करनेके हेतु था। (बापसे) मैं इस शहरसे जाती हूँ। कोई न जान सकेगा कि कहाँ चली गई। मैं उस जगह जाती हूँ, जहाँ मदन मुझे ढूँढ़ लेगा।

[इसी बीचमें मदनमोहन अचानक आ जाता है।]

माधव—(मदनके सामने जाकर पूछता है) मदन, तुम्हें ईश्वरकी शपथ है, सच बताओ, तुम इस समय यहाँ किस प्रयोजनसे आये हो? तुम्हारा यहाँ क्या काम है?

मदन०—ईश्वरकी लीला विचित्र है। एक समय था जब कि मेरा आना, आपकी मानवृद्धिका कारण था। प्रातःकालसे सन्ध्या समय

तक मेरी प्रतीक्षा की जाती थी। एक समय था जब कि मेरे मिलनेके लिये आप इतने आतुर हो जाते थे कि मेरा जरा भी देर करके आना आपको दुःखदायक प्रतीत होने लगता था। एक एक सेकण्ड वर्षोंके समान प्रतीत होता था। आज यह समय आ गया कि आप मुझे यहाँ आने तकसे रोकते हैं, मेरे मार्गमें रोड़े अटकाते हैं और पूछते हैं कि तुम्हारा यहाँ क्या काम है?

माधव०—यदि तुममें मनुष्यत्वका कुछ भी अंश शेष है, तो इसी समय यहाँसे चले जाओ। जिस दिनसे तुम्हारे शुभ चरण यहाँ पड़े हैं, उसी दिनसे हमारा सारा सुख, और सारी निश्चिन्तता दुःख और चिन्तामें बदल गई है। नाना प्रकारकी आपत्तियोंने डेरा जमा लिया है। मदन, कृपा करो! ईश्वरके लिये दया करो!

मदन०—मेरे पिता चाहते थे कि मेरा विवाह कमलासे किया जाय; किन्तु आज वह इस देशको अन्तिम नमस्कार करके जा रही है। इस लिये मेरे पिता इतनी प्रतिकूलता रखते हुए भी, इस सम्बन्धपर राजी हो गये हैं। अब निकट है कि मेरा भाग्य, निराशाके बादलोंसे निकल कर चमक उठे।

माधव०—विमला, सुनती है? मदनमोहन मेरी हँसी उड़ा रहा है, मुझे जली-कटी सुनाने आया है।

मदन०—क्या यह सुसम्वाद आपके अविश्वासी हृदयमें नहीं समाता? क्या इस घरमें झूठका ही अधिकार है और सत्यका बाजार बिल्कुल ठंडा हो गया है? विमला, तेरी चेष्टासे विदित हो रहा है कि तू भी मेरी बातका विश्वास नहीं करती है। मालूम होता है कि तू लिखी हुई सनदको विश्वसनीय समझती है। (विमलाका वीरेन्द्रविक्रमके नामसे लिखा

हुआ पत्र जेबसे निकाल कर देता है) बस, तुझे इसे ध्यानपूर्वक पढ़ डालना चाहिये ।

माधव०—मैं नहीं समझा कि यह कैसा काग़ज़ है और आप क्या कहते हैं ?

मदन०—विमला समझ गई है कि मैंने क्या कहा । आप उसीसे पूछ लीजिये ।

माधव०—(जल्दीसे काग़ज़ देख कर) हाय ! हाय ! तू इस लिये आया है कि विमलाको मार डाले और उसे कहींका न रक्खे ।

मदन०—विमला ! क्या मैं आशा करूँ कि तू इस पत्रसे इनकार करेगी ? क्या यह कागज़ तेराही लिखा हुआ है ?

माधव०—विमला ! सोचकर ठीक ठीक उत्तर दे और मुझे सन्देह रहित कर दे ।

विमला—(रो देती है ।)

मदन०—क्या तुझे विश्वास था कि यह काग़ज़ मेरे हाथ न लग सकेगा ? इस काग़ज़को तूने ही लिखा है ? जल्द उत्तर दे !

विमला—हाँ ! मैंने लिखा है ।

मदन०—विमला ! तू झूठ बोलती है । जिस समय किसी अपराधीको न्यायालयमें ले जाते हैं और बयान लेते हैं, उस समय निरपराध होने पर भी वह भयसे न्यायाधीशके सामने अपराध स्वीकार कर लेता है । सच बोल और एक शब्दसे मेरा सन्देह निवारण कर दे । यह काग़ज़ तूने लिखा है ?

विमला—हाँ, मैंने लिखा है ।

मदन०—हाय तूने स्वीकार कर लिया ! अरी मायाविनी, प्रपञ्चिनी धोखेबाज ! तेरे हृदयमें मेरा वह मान तथा मर्य्यादा थी कि वाक्योंसे उसका वर्णन नहीं हो सकता। शोक ! महा शोक !

विमला—प्यारे मदन, तुमने मेरा स्वीकार कर लेना सुन लिया और मेर हृदयका भाव जान लिया, फिर क्यों यहाँ उपस्थित रहनेका कष्ट उठा रहे हो ?

मदन०—हाय मेरे नेत्रोंका प्रकाश जाता रहा ! इस समय मुझे कुछ भी नहीं सूझ पड़ता ! मेरा सर चकरा रहा है, कोई एक घूँट पानी पिला दो। (चाहता है कि बाहर चला जाय, किन्तु कुर्सीपर गिर जाता है। विमला बाहर चली जाती है।)

दूसरा दृश्य।

[माधवप्रसाद और मदनमोहन।]

माधव०—ईश्वर जानता है कि मैं इन बातोंसे सर्वथा अनभिज्ञ हूँ।

मदन०—महाशय, आपका इसमें क्या अपराध ? आपकी उजरतका कुछ रुपया मुझपर बाक़ी था, उसे ले लीजिये; क्यों कि मैं कल तक जिन्दा न रहूँगा। (रुपयोंकी थैली देता है।) विद्वानोंने असीम विषयवासनाओंको, उन नवयुवकोंकी इच्छाओंसे उपमा दी है, जो प्रेम-पन्थमें चल रहे हों। जैसे ही उन्हें उनकी ध्येय वस्तु प्राप्त हो जाती है कि मृत्यु आकर उनका पल्ला पकड़ लेती है और उनकी राखसे पृथ्वी तत्त्वको अधिक कर देती है। उस्तादजी, यह मौत चाहे बच्चे हों, चाहे बूढ़े और चाहे जवान, किसीको भी नहीं छोड़ती है। जो आया, एक दिन अवश्य जायगा। आपने अपनी सारी आशायें, केवल इस बेटीपर बाँध रक्खी हैं; परन्तु यह दूरदर्शिता, परलोक-चिन्ताके प्रतिकूल है। जो वणिक अपना सारा

सामान एक ही नावपर लाद देता है, जो जुवारी अपना सारा धन एक ही दावपर रख देता है, निरा पागल है। क्या आपको विमलाके अतिरिक्त कोई अन्य सन्तान भी है?

माधव०——नहीं, विमलाके सिवा मेरा कोई नहीं है। केवल वही अन्धे-की लाठी है।

मदन०——देखिये, विमला कहाँ गई?

(माधवप्रसाद बाहर जाता है।)

मदन०——(आप ही आप) बेचारे माधवके संसारमें केवल यही एक लड़की है जो उसके जीवनका आधार है। यदि उसे कुछ हो गया, तो यह मुफ्तमें जान दे देगा। क्या यह निष्ठुर हिंसामय कार्य्य करना मुझे उचित है? इस बूढ़ेने मुझे कोई कष्ट नहीं पहुँचाया। फिर भी मैं ऐसा कार्य्य करूँ कि जिससे यह अपनी बेटीकी लाशके सामने अपना सिर पीटे, सफेद बाल नोचे और छाती कूटे; धर्म ऐसी आज्ञा नहीं देता। नहीं, यह नीति और धर्म दोनोंसे प्रतिकूल है। इसके विमलाके सिवाय कोई सन्तान नहीं है। मेरे पिताके भी मेरे सिवाय और कोई नहीं है। किन्तु इसकी आर मेरे पिताकी दशामें बड़ा अन्तर हैं। यदि मैं मर जाऊँगा, तो मेरे पिताका कुछ भी न बिगड़ेगा। क्योंकि वे अपने ऐश्वर्य्यद्वारा इस शोकको शीघ्र भुला देंगे; परन्तु यदि विमला मर गई तो यह बूढ़ा सिवाय प्राण दे देनेके और क्या करेगा? मदन, तू किसीके भी सुखमें बाधा मत डाल, दूसरोंको निरा-शाके समुद्रमें न डुबा, बल्कि तू अपना ही प्राण-धन दूसरोंके लिये निछावर कर दे और इस बूढ़ेकी लाडिली पुत्री विमलाको छोड़ दे; जिससे वह जीवनभर मेरे प्रेमको स्मरण करके रोती रहे। दूसरोंको दुख देकर स्वयं सुखी होना, महा पाप है। मनुष्यका कर्तव्य है कि

परोपकारमें अपने प्राण तक लगा दे। जा बिमला, तुझे अभय प्रदान किया। (अचेत हो आता है।)

[माधवका प्रवेश।]

माधव०—मदन ! विमला नीबूका शर्बत बना रही है। तुम उसके हाथका शर्बत बहुत पसन्द करते हो, इस लिये वह तुम्हारे लिये स्वादिष्ट शर्बत तैय्यार करके लिये आती है। सम्भव है कि इस मर्तबाका शर्बत कुछ कडुआहट लिये हो, क्यों कि उसमें विमलाके ढेरके ढेर अश्रु-बिन्दु मिल गये हैं।

[विमलाका प्रवेश।]

मदन०—उस्तादजी, आज मैं अधिक रात गये घर पहुँचूँगा। महाराजने एक आवश्यक पत्र मुझको दिया था कि इसे अभी मंत्रीके पास पहुँचा देना। क्या आप इसको पिताजीके पास तक पहुँचा सकते है, या खुद ले जानेकी कृपा कर सकते हैं ?

विमला—(पितासे) आप न जाइये, किसी औरको भेज दीजिये।

माधव०—मेर यहाँ कोई नौकर चाकर नहीं है। मै स्वयं ही ले जाऊँगा।

विमला—यह नहीं हो सकता कि मेरे होते हुए आप यह कष्ट सहन करें। लाइये, मैं पहुँचा दूँगी।

माधव०—इस अँधेरी रातमें तेरा जाना ठीक नहीं। तू घरमें रह, मैं अभी पत्र देकर लौटा आता हूँ।

मदन०—(आप ही आप) इसे साहस नहीं होता है कि मेरे साथ अकेली रहे।

(विमला चिराग लेकर बापको सीढ़ियोंसे उतारती है।)

तीसरा दृश्य ।
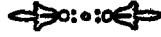
समय–८ बजे सन्ध्या ।

[मदनमोहन और विमला ।]

(विमला चिराग लिये दरवाजेके सामने खड़ी है । मदनमोहन विषकी शीशी जेबसे निकालकर शर्बतमें मिलाता है, पश्चात् विमलाको आवाज़ देता है । विमला आकर दीपक नियत स्थान पर रख देती है और पूछती है—)

विमला—क्या कहते हो मदन ?

मदन—क्या तुम मेरे साथ घरमें रहनेसे डरती थीं और इसी लिये स्वयं वह पत्र ले जाना चाहती थीं ? रोती क्यों हो ? तुम्हारी आँखोंसे यह अश्रुधारा क्यों वह रही है ? विमला, अभी तक मैं सोचता था कि यह पत्र तुम्हें विवश करके लिखाया गया है अथवा तुम्हारी लिखावटकी नक़ल की गई है; किन्तु अब विश्वास हो गया कि तुमने अपने प्रेमीसे जान बूझ कर विश्वासघात किया है। शोक ! (गिलास उठाकर) हाय विमला ! हाय ! (आधा गिलास पी जाता है।)

विमला—क्या आप नहीं जानते कि आपके ये मर्मभेदी वाक्य मेरे हृदयके टुकड़े टुकड़े किये डालते हैं और मेरी आत्माको भस्म किये देते हैं। समय आनेपर आप स्वत: समझ लेंगे कि मैंने विमलाको अकारण ही दुखी किया था ।

मदन०—मेरा समय पूरा हो चुका, मेरा जीवन-काल समाप्त हो गया । (तलवार कमरसे खोलकर अलग डाल देता है) हे ईश्वर ! तू मुझको अपनी शरणमें ले ! हे प्रेमदेव और हे सुयश तथा युवावस्थाकी आशाओ ! आज मदन तुम सबको छोड़कर अकेला जा रहा है (अँगरखेके बन्द खोल देता है) हाय ! आज मेरा हृदय भस्म हो गया ।

विमला—प्यारे, आप यह क्या कह रहे हैं? आपकी इस समय कैसी दशा है?

मदन०—अरी कुल्टा, मायाविनी, दुष्टा, मेरे सामनेसे हट जा। तूने ही, मेरे लहलहाते हुए जीवन-क्षेत्रको अपने तिरियाचरित और मायाचारकी आगसे जला डाला। फिर यह शोक किस लिये है? जा, मरण-कालमें मुझे विश्राम लेने दे, मुझे शान्तिपूर्वक मरने दे।

विमला—प्यारे, समयका फेर देखो कि मैं आपके इन कुवाक्योंको बैठी बैठी चुप चाप सुन रही हूँ। मदन, मेरे अभाग्यपर आँसू बहाओ।

मदन०—नहीं, तेरे लिये कदापि शोक न करूँगा। यह अश्रुपात जो मेरी आँखोंसे हो रहा है, वह गर्म बाष्प है, जो शरीरसे जीवात्माका वियोग होनेके कारण, मस्तिष्कपर चढ़ रही है और नेत्रोंकी नमी पाकर अश्रु-बिन्दुओंमें परिवर्तित होकर पृथ्वीपर बरस रही है। विमला! और कोई वस्तु नहीं, जो वियोगकी वास्तविक अवस्थाको दर्शानेवाली हो; केवल इन आँसुओंसे ही मेरी वर्तमान स्थिति प्रकट हो रही है।

विमला—(बेचैन होकर) मदन! प्यारे मदन! क्या कहते हो?

मदन०—इस मोमबत्तीके जलकर समाप्त हो जानेके पहले ही मेरा जीवन-दीपक बुझ जायगा।

विमला—(शोकातुर हो) क्यों? किस लिये? क्या आपने इस शर्बतमें विष मिला लिया है?

मदन०—हाँ।

विमला—(फुर्तीसे गिलासकी तरफ बढ़ती है और उसे उठाकर शेष शर्बत पी जाती है।)

मदन०—हाय! तूने यह क्या कर डाला?

विमला—जब तुमने कहा कि शर्बतमें विष मिलाया है, तब मैंने भी यह सोचकर शेष शर्बत पी लिया कि तुम्हारे साथ ही मर जाऊँ। अब हम दोनों एक ही पंथके पथिक हैं, जो एक ही साथ जा रहे हैं। मदन ! मैं अविश्वासिनी या मायाविनी नहीं हूँ। जिस समय मैंने अपना अपराध स्वीकार किया था, उस समय मैं झूठ बोली थी। आपके प्रति कभी मैंने विश्वासघात नहीं किया। (विषका प्रभाव विमलाकी सूरत तथा आवाजपर झलकने लगता है) प्यारे, मैं चाहती थी कि आपके सम्मुख आनेसे पहले ही मर जाऊँ। इन कागज़के टुकड़ोंको देखिये जो कमरेमें बिखरे पड़े हैं। मेरी इच्छा तथा मेरे विचार इन्हीं टुकड़ोंमें छिन्न भिन्न हुए पड़े हैं। मेरे पिताके रोदन और विलापने इतना भी अवकाश न दिया कि मैं इन्हें आपके पास तक भेज सकती। लाचार होकर मुझे इस अपने लिखे हुए पत्रको फाड़ डालना पड़ा।

मदन०—फिर वह पत्र कसा था ?........वह पत्र ?

विमला—वह पत्र मैंने मोतीलालकी जबर्दस्तीसे लिखा था। ईश्वर ही जानता है कि उस समय मेरी क्या दशा थी। मेरे माता-पिता कैद कर लिये गये थे और मुझसे कहा गया था कि यदि पत्र न लिखोगी, तो उन्हें कदापि न छोड़ेंगे। पत्र लिखा लेनेके पश्चात् मुझे क़सम दिला दी थी कि मैं मौन धारण करूँ और इस गुप्त रहस्यको किसीपर न प्रकट होने दूँ।

मदन०—ईश्वरके अनुग्रहसे अभी मुझमें इतनी शक्ति शेष है कि तेरा बदला ले लूँ। (तलवार जमीनसे उठा लेता है।)

विमला—अब वैर-शोधन तथा घात-प्रतिघातका समय नहीं है। मदन, तुम मुझे अकेली न छोड़ो। यदि चले जाओगे तो लौट कर मुझे जीवित न पाओगे। (अपना सिर मदनकी गोदमें डाल देती है।)

मदन०—सच कहती हो, समय निकल गया। विमला, तुम अपना हाथ मुझे दे दो। हाय! तुमने यह आँख क्यों फेर दी? बोलती क्यों नहीं? हाय, कोई नहीं, जो मेरी प्यारीको बचा ले और मेरी यह दुःखकथा सुनकर आँसू बहाये?

विमला—(मृतप्राय दशामें) मदन, मैं जब तक जिन्दा रही, तब तक मैंने तुम्हारे प्रेमके अतिरिक्त अन्य किसीसे सम्बन्ध न रक्खा और अब भी जब कि कराल कालका ग्रास बन रही हूँ तथा अपना शरीर चिताग्निकी भेंट कर रही हूँ, तुम्हारे ही पवित्र-प्रेमका सहारा लेती हूँ। मदन! मैं केवल तुमसे ही सत्य प्रेम करती हूँ। यह शरीर तथा आत्मा तुम्हारी है। प्यारे मदन............(छटपटाकर मर जाती है।)

[कृष्णकुमार, मोतीलाल, माधवप्रसाद और अधिकारियोंका प्रवेश।]

कृष्ण०—मदन! मदन!!

मदन०—(आँख खोल देता है और ज्यों ही मोतीलालको अपने निकट खड़ा पाता है कि आधा उठकर उसके पेटमें तलवार भोंक देता है) रे दुरात्मा, घातक, नीच, नरकके कीड़े!

मोती०—(चीखकर) कोई बचाओ! हाय मुझे मार डाला!

(मदनमोहन गिर पड़ता है और मर जाता है।)

कृष्ण०—(मोतीलालसे) अरे दुष्ट, पाजी, बदमाश! तूने मेरे पुत्रको मार डाला।

मोती०—(राज्यके अधिकारियोंसे) मरनेसे पहले मैं आप लोगोंको एक बात बतलाये जाता हूँ कि मैंने और इस मन्त्रीने मिलकर, पूर्व महाराजको विष देकर मार डाला था। आप इससे पूछ लीजिये, मैं देखूँ कि यह किस प्रकार मुझे झूठा ठहराता है?

(मोतीलाल मर जाता है और मन्त्री गिरिफ्तार हो जाता है।)

[यवनिका पतन]

राष्ट्रभाषा हिन्दीकी

सर्वोत्तम और सुप्रसिद्ध ग्रन्थमाला

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर-सीरीज

हिन्दी संसारमें यह सबसे पहली और सबसे अच्छी ग्रन्थमाला है। हिन्दीके प्रायः सभी साहित्यसेवियों, कवियों और सम्पादकोंने इसकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। उपन्यास, नाटक, काव्य, जीवनचरित, समालोचना, राजनीति, इतिहास, विज्ञान, सदाचार, आरोग्य आदि विविध विषयोंके कोई ६४ ग्रन्थ इसमें निकल चुके हैं जिनका हिन्दीप्रेमी पाठकोंने खूब ही आदर किया है।

एक रुपया 'प्रवेश-फीस' जमा करानेसे हर कोई स्थायी ग्राहक बन सकता है। स्थायी ग्राहकोंको सब ग्रन्थ पौनी कीमतमें दिये जाते हैं। आगे सब ग्रन्थोंका संक्षिप्त परिचय दिया गया है:—

१ **स्वाधीनता**। जान स्टुअर्ट मिलके 'लिबर्टी' नामक ग्रंथका सुबोध और सरल अनुवाद। स्वाधीनताका इतना सुंदर, प्रामाणिक और युक्तियुक्त विचार शायद ही किसी ग्रंथमें किया गया हो। अनुवादक, हिन्दीके आचार्य पं० महावीर प्रसादजी द्विवेदी। द्वितीय संस्करण। मू० २)

२ **जॉन स्टुअर्ट मिल**। स्वाधीनताके मूल लेखकका शिक्षाप्रद जीवनचरित। विद्यार्थियोंके लिए अतिशय उपयोगी। द्वितीयावृत्ति। मूल्य ॥≈)

३ **प्रतिभा**। अतिशय सुरुचिसम्पन्न, भावपूर्ण, मनोरंजक और शिक्षाप्रद उपन्यास। बालक युवा स्त्री और पुरुष सबके हाथमें देने योग्य। स्त्रियोंके लिए खास तौरसे उपयोगी और मनोरंजक। चतुर्थ संस्करण। मू० १।)

४ **फूलोंका गुच्छा**। अनेक भाषाओंसे अनुवादित बहुत ही उत्कृष्ट ग्यारह गल्पोंका संग्रह। तीसरा संस्करण। मू० ॥-)

५ **आँखकी किरकिरी**। महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुरके सर्वश्रेष्ठ उपन्यासका अनुवाद। यह उपन्यास बहुत ही मनोरंजक और सुशिक्षादायक है। हिन्दीमें इसकी जोडका एक भी उपन्यास नहीं। इसमें मनुष्यके स्वाभाविक भावोंके चित्र खींचकर उनके द्वारा मित्रकी तरह—आत्माकी तरह–शिक्षा दी गई है। बहुत ही सरस और दिलचस्प है। मू० १॥), राजसंस्करणका २॥)

६ चौबेका चिट्ठा । स्वर्गीय बाबू बंकिमचन्द्रके सुप्रसिद्ध ग्रंथका अनुवाद । इसमें हँसी मजाक, चुटीली बातें, इतिहास, राजनीति, समाजनीति, देशप्रेम आदि सभी कुछ है । पढ़ते पढ़ते जी नहीं भरता । ती० आ० । मू० ॥।≠)

७ मितव्ययता (गृह-प्रबंध-शास्त्र)। सेमुएल स्माइल्सके 'थ्रिफ्ट' का छायानुवाद । किफायतशारी और सदाचार सिखानेवाली सुन्दर पुस्तक । चतुर्थ आवृत्ति । यू० पी० और सी० पी० के शिक्षाखातों द्वारा सरकारी स्कूलोंकी लायब्रेरियोंके और इनामके लिए स्वीकृत । मू० ॥।≡)

८ स्वदेश । रवीन्द्रबाबूके स्वदेशसंबन्धी आठ निबन्धोंका अनुवाद । अपूर्व और अश्रुतपूर्व विचारोंका समावेश । चौथी आवृत्ति । मू० ॥≠)

९ चरित्रगठन और मनोबल । चरित्रसंगठनमें सहायता करनेवाली पुस्तक । सी० पी० के शिक्षाविभागद्वारा स्वीकृत । पाँचवीं आवृति । मू० ≶)

१२ सफलता और उसकी साधनाके उपाय । इसमें सफलता और उसके सिद्धान्तोंका सरल भाषामें विचार किया गया है। अनेकानेक ग्रन्थोंके आधारसे लिखी गई है । इसका एक एक वाक्य बहुमूल्य है । सी० पी० के शिक्षाविभागद्वारा स्वीकृत । दूसरी आवृत्ति । मू० ॥।)

१३ अन्नपूर्णाका मन्दिर । शिक्षाप्रद उपन्यास । मू० ॥।)

१४ स्वावलम्बन । डा० सेमुएल स्माइल्स ' सेल्फ हेल्प ' के आधारसे लिखा हुआ अतिशय शिक्षाप्रद ग्रन्थ । नवयुवकों और विद्यार्थियोंके जीवनको उत्साही, उद्योगी और कार्यक्षम बना देनेवाला अपूर्व ग्रन्थ । यू० पी० और सी० पी० के शिक्षाविभागोंने इसे स्कूलोंकी लायब्रेरियोंमें रखने और इनाममें देनेके लिए मंजूर किया है । तीसरी आवृत्ति । मू० १॥)

१५ उपवास-चिकित्सा । उपवास या लंघन नीरोग होनेके लिए सबसे अच्छी दवा है । भयंकरसे भयंकर और दुःसाध्यसे दुःसाध्य बीमारियाँ उपवास-चिकित्सासे आराम हो सकती हैं। इसी बातको इसमें विस्तारके साथ उदाहरण देकर समझाया है । तीसरी आवृत्ति । मूल्य ॥।)

१६ सूमके घर धूम । द्विजेन्द्र बाबूके एक प्रहसनका अनुवाद । थके हुए मस्तकको घड़ी भर आराम देनेकी चीज । चौथी आवृत्ति । मू० ।)

१७ दुर्गादास । बंगालमें स्वर्गीय बाबू द्विजेन्द्रलाल राय बहुत बड़े नाटकलेखक हो गये हैं। देशभक्ति और विश्वप्रेमके भावोंसे उनके नाटक

लबालब भरे हुए हैं। हमारे यहाँसे उनके १५ नाटक प्रकाशित हो चुके हैं और उनकी हिंदी-संसारमें धूम है। यह दुर्गादास भी उन्हींके एक नाटकका अनुवाद है। इसमें जोधपुरनरेश जसवन्तसिंहके सुप्रसिद्ध सेनापति राठोर दुर्गादासका चरित्र अंकित किया गया है। बहुत ही महान् चरित्र है । सी० पी० के शिक्षाखातेमें यह पाठ्य पुस्तक है। चौथी आवृत्ति। मू० १)

१९ **छत्रसाल**। बुन्देलखंडको स्वतंत्रता दिलानेवाले वीरकेसरी छत्रसाल—के चरित्रके आधारपर लिखा हुआ अत्यन्त रोचक, उत्कण्ठावर्द्धक और घटना-वैचित्र्यपूर्ण उपन्यास। देशभक्ति, आत्माभिमान और वीरताके भाव इसके प्रत्येक पृष्ठ और प्रत्येक पंक्तिमेंसे छलक रहे हैं। तीसरी आवृत्ति। मू० १।॥), राजसंस्करण २॥)

२० **प्रायश्चित्त**। बेलिजयमके नोबल प्राइज पानेवाले सुप्रसिद्ध लेखक मेटरलिंककी एक भावपूर्ण और हृदयद्रावक नाटिकाका सुन्दर अनुवाद । पश्चात्तापकी अग्निमें पापोंके जल जानेकी सुन्दर कल्पना। द्वितीयावृत्ति। मू० ।)

२२ **मेवाड़-पतन**। स्वर्गीय द्विजेन्द्रबाबूके नाटकका अनुवाद । मेवाड़के राणा अमरसिंह और बादशाह जहाँगीरके इतिहासके आधारपर लिखित। इसके पात्र दाम्पत्य प्रेम, जातीय प्रेम और विश्वप्रेमके सजीव चित्र हैं। मूल्य ॥।=)

२३ **शाहजहाँ**। यह भी द्विजेन्द्रबाबूका प्रसिद्ध नाटक है। मुगल बादशाह शाहजहाँ इसके प्रधान नायक हैं। बंगालके प्रसिद्ध प्रसिद्ध समालोचकोंकी रायमें यह बंगभाषाका सर्वश्रेष्ठ नाटक है। दूसरी आवृत्ति। मू० १)

२५ **उस पार**। द्विजेन्द्र बाबूके सामाजिक नाटकका अनुवाद। इसमें एक ओर स्नेह, कृतज्ञता, भक्ति, क्षमा और त्याग और दूसरी ओर कृतघ्नता, अत्याचार, कपटता, निष्ठुरता और हत्याके भाव दिखलाये गये हैं। स्वर्गके साथ नरकका ऐसा तुमुल संग्राम शायद ही किसी नाटकमें दिखलाया गया हो । बहुत ही शिक्षाप्रद है। दूसरी आवृत्ति। मूल्य १=)

२७ देश-दर्शन। तृतीयावृत्ति। पृष्ठसंख्या ३५०, चित्रसंख्या १८, मूल्य साधारण संस्करणका २), राजसंस्करणका ३)। देशकी दुर्दशाका दर्शन करानेवाला अपूर्व ग्रन्थ। ६ हजार कापियाँ बिक चुकी हैं।

२९ **नवनिधि**। सुप्रसिद्ध उपन्यासलेखक प्रेमचन्दजीकी एकसे एक बढ़कर चुनी हुई नौ गल्पोंका संग्रह। मू० ॥)

३० नूरजहाँ । द्विजेन्द्रबाबूका ऐतिहासिक नाटक । मुगल बादशाह जहाँगीर और उनकी बेगम नूरजहाँके चरित्रोंके आधारसे लिखित । दूसरी आवृत्ति । मू० १≈)

३१ आयर्लेण्डका इतिहास । यों तो आयर्लेण्डका इतिहास सभी पराधीन जातियोंके लिए शिक्षाप्रद है; परन्तु भारतवासियोंके लिए तो यह बहुत ही उपकारक और सच्चा मार्गदर्शक है । यह केसरी-सम्पादक श्रीयुत केलकरका लिखा हुआ है । मू० १।।।≈)

३२ शिक्षा । साहित्यसम्राट् रवीन्द्रबाबूके शिक्षासम्बन्धी पाँच निबन्धोंका अनुवाद । दूसरी आवृत्ति । मू० ।।)

३३ भीष्म । द्विजेन्द्रबाबूका पौराणिक नाटक । महाभारतके वीर भीष्मपितामह इसके प्रधान पात्र हैं । बहुत ही शिक्षाप्रद और खेलने योग्य है । मू० १।)

३४ कावूर । इटलीको स्वाधीनता दिलानेवाले वहाँके एक महान् देशभक्त और राजनीतिज्ञका जीवनचरित । मू० १)

३५ चन्द्रगुप्त । द्विजेन्द्रबाबूका हिन्दू राजत्वके समयका ऐतिहासिक नाटक । मौर्यवंशी सम्राट् चन्द्रगुप्तके चरित्रको लेकर इसकी रचना की गई है । मू० १)

३६ सीता । द्विजेन्द्रबाबूका पौराणिक नाटक महासती सीताका आदर्श चरित्र । पढकर पाठक मुग्ध हो जाएँगे । द्वितीयावृत्ति । मू० ।।-)

३८ राजा और प्रजा । जगत्प्रसिद्ध विद्वान् रवीन्द्रबाबूके राजनीतिसम्बन्धी ११ निबन्धोंका अनुवाद । दूसरी आवृत्ति । मू० १)

३९ गोबर-गणेश-संहिता । व्यंग और वक्रोक्तियोंसे भरी हुई बहुत ही दिलचस्प चीज । दूसरी आवृत्ति । मू० ।।)

४१ पुष्पलता । अतिशय मनोहर और हृदयद्रावक गल्पगुच्छक । कई चित्रोंसे सुशोभित । दूसरी बार छपाई गई है मू० १)

४२ महादजी सिन्धिया । अँगरेजोंके प्रबल प्रतिद्वन्द्वी, असमसाहसी, वीरकेसरी महादजी सिन्धियाका जीवनचरित । मू० ।।।≈)

४३ आनन्दकी पगडंडियाँ । अमेरिकाके ज्ञानी और अंतर्द्रष्टा लेखक जेम्स एलेनके 'बाइवेज आफ ब्लेसडनेस' नामक वेदान्त ग्रन्थका अनुवाद । मू० सजिल्दका १।।)

४४ ज्ञान और कर्म । बंगालके सुप्रसिद्ध विद्वान्, हाईकोर्टके जज, स्व० गुरुदास बनर्जी, एम० ए०, पी० एच० डी०, डी० एल० के अमूल्य ग्रन्थका अनुवाद ।मू० ३)

४५ सरल मनोविज्ञान। इसमें मनोविज्ञान जैसे कठिन विषयको बहुत ही सरलतासे सुगम भाषामें अच्छी तरह उदाहरण आदि देकर समझाया है और प्रत्येक अध्यायके अन्तमें एक रोचक प्रश्नावली दी है जो इस विषयके विद्यार्थियोंके लिए बड़े कामकी है। मू० १॥)

४६ कालिदास और भवभूति। संस्कृतके दो सुप्रसिद्ध कवियोंके अभिज्ञान शाकुन्तल और उत्तररामचरित इन दो नाटकोंकी गुणदोषविवेचिनी, मर्मस्पर्शिनी और तुलनात्मक समालोचना। लेखक सुप्रसिद्ध नाटककार स्व० द्विजेन्द्रलाल राय। मू० १॥)

४७ साहित्य-मीमांसा। यह भी एक समालोचनाका ग्रन्थ है। इसमें पूर्वके और पश्चिमके साहित्यकी—यूरोपियन और आर्यसाहित्यकी—तुलनात्मक समालोचना की गई है और इस देशके साहित्यको सब तरहसे आदरणीय, उत्कृष्ट और महान् सिद्ध किया है। बिहार यूनीवर्सिटीने इसे अपने बी० ए० के कोर्सके लिए चुना है। मू० १।≈)

४८ महाराणा प्रतापसिंह। स्वर्गीय द्विजेन्द्रबाबूके दुर्लभ नाटकका अनुवाद। इसमें महाराणा प्रताप, उनके भाई शक्तसिंह, राजकवि पृथ्वीराज, उनकी स्त्री जोशीबाई, अकबरकी कन्या मेहरुन्निसा और भानजी दौलतुन्निसा आदि पात्रोंके चरित्र एक अपूर्व ढंगसे चित्रित किये गये हैं। मू० १॥)

४९ अन्तस्तल। इसमें सुख, दुःख, स्मृति, भय, क्रोध, लोभ, निराशा आशा, घृणा, प्यार, लज्जा, अतृप्ति आदि मानसिक भावोंको बिल्कुल ही अनौखे ढंगसे चित्रित किया है। यह हिन्दू यूनीवर्सिटीके बी० ए० के कोर्समें पाठ्य पुस्तक है। मू० ॥≈)

५० जातियोंको सन्देश। मूल-लेखक श्रीयुत पाल रिचर्ड और भूमिका-लेखक साहित्यसम्राट् श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर। इसमें साम्राज्यमदसे मतवाली हुई पाश्चात्य जातियोंको बड़ा ही मार्मिक और चुभनेवाला उपदेश दिया है। पाल रिचर्ड महाशय बड़े भारी विश्वप्रेमी और शान्तिप्रेमी हैं। मू० ॥-)

५१ वर्तमान एशिया। पाश्चात्य जातियोंने एशियाके अनेक देशों, प्रान्तों और अगणित द्वीपोंपर जिन धूर्तताओं, छलकपटों, अत्याचारों और झूठे प्रलोभनोंसे अधिकार विस्तार किया है और अनेक बड़ी बड़ी जातियोंको अपना गुलाम बनाया है उनका सारा कच्चा चिट्ठा। मू० २)

५२ **नीतिविज्ञान** । लेखक, बाबू गोवर्धनलाल, एम. ए., बी. एल.। आचारशास्त्र या नीतिविज्ञानपर अभीतक हिन्दीमें कोई ग्रन्थ नहीं है। यह सबसे पहला ग्रन्थ है। सच्चे सदाचार और सच्चे धर्मको पहिचानिए। मू० २।)

५३ **प्राचीन साहित्य**। साहित्याचार्य रवीन्द्रनाथ ठाकुरके प्राचीन साहित्य-सम्बन्धी आगे लिखे हुए सात निबन्धोंका अनुवाद--१ रामायण, २ धम्मपद, ३ कुमारसंभव और शकुन्तला, ४ शकुन्तला, ५ मेघदूत, ६ कादम्बरी चित्र, ७ काव्यकी उपेक्षिता। हिन्दू यूनीवर्सिटीमें पाठ्य ग्रन्थ। मूल्य ॥।)

५४ **समाज**। रवीन्द्रबाबूके आगे लिखे हुए, समाजशास्त्रसम्बन्धी आठ निबन्धोंका अनुवाद--१ आचारका अत्याचार, २ समुद्रयात्रा, ३ विलासकी फाँसी, ४ नकलका निकम्मापन, ५ प्राच्य और प्रतीच्य, ६ अयोग्य भक्ति, ७ पूर्व और पश्चिम, ८ चिट्ठीपत्री। मू० ॥।≈)

५५ **अञ्जना** । पौराणिक कथाके आधारसे लिखा हुआ श्रीयुत सुदर्शनका मौलिक नाटक। बहुत ही भावपूर्ण और शिक्षाप्रद। इससे प्रसन्न होकर पंजाबके सरकारी शिक्षाखातेने लेखकको ५००) इनाम दिया है। पंजाबके स्कूलोंकी लायब्रेरियोंके लिए और इनामके लिए भी यह मंजूर है। मू० १।)

५६ **मुक्तधारा**। महाकवि रवीन्द्रनाथका नया नाटक। प्रो० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री एम० ए०, तर्कशिरोमणिकी विस्तृत भूमिकासहित। मू० ॥≈)

५७ **सुहराब रुस्तम**। स्व० द्विजेन्द्रलाल रायकी वीर और करुणरससे भरी हुई बंगाली नाटिकाका गद्य और पद्यमय अनुवाद। मू० ॥≈)

५८ **चन्द्रनाथ**। बंगालके इस समयके सर्वश्रेष्ठ लेखक शरच्चन्द्र चट्टोपाध्यायके एक सुन्दर सामाजिक उपन्यासका अनुवाद। बहुत ही मार्मिक और हृदयद्रावक है। समाप्त किये बिना नहीं छोड़ा जाता। मू० ॥।)

५९ **भारतके प्राचीन राजवंश**। (तीसरा भाग) इस भागमें प्राचीन कालसे लेकर अबतकके तमाम राष्ट्रकूटों अर्थात् राठोड़ों और गहड़वालोंका सिलसिलेवार इतिहास बड़ी खोजसे संग्रह किया गया है। मू० ३), ४)

६० **रवीन्द्र-कथाकुञ्ज**। महाकवि रवीन्द्रनाथकी तमाम गल्पोंमेंसे चुनी हुई बहुत ही उच्च श्रेणीकी ९ गल्पोंका संग्रह।—१ जय पराजय, २ पड़ोसिन, ३ राजतिलक, ४ समाप्ति, ५ जासूस, ६ अतिथि, ७ दृष्टिदान, ८ अध्यापक और ९ दुर्बुद्धि। प्रत्येक गल्प एक एक गद्य खण्डकाव्य है। मू० १)

६१ **मेरे फूल**। गुरुकुल कांगड़ीके स्नातक पं० वंशीधरजी विद्यालंकारकी कवितापुस्तक। मू० ॥।)

६२ **संजीवन-संदेश**। भारतके साधुशिरोमणि टी. एल. वास्वानीके नवयुवकोंको लक्ष्य करके लिखे हुए तीन महत्त्वपूर्ण निबन्ध। मू० ॥=)

६३ **प्रेम-प्रपंच**। जर्मनीके महाकवि 'शिलर' के एक प्रसिद्ध और सुंदर नाटकका अनुवाद। मू० ॥≈)

६४ **सामर्थ्य, समृद्धि और शान्ति**। डा० ओरिसन स्वेट मार्डेनके सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक ग्रन्थका भाषानुवाद। मू० १॥)

नोट—कपड़ेकी जिल्दवाली पुस्तकोंका मूल्य ऊपर लिखे हुए मूल्यसे आठ आने अधिक है। आगे और भी अच्छे अच्छे ग्रन्थ निकालनेका प्रबन्ध किया जा रहा है। हिन्दी हितैषियोंको इस ग्रन्थमालाके ग्राहक बढ़ाना चाहिए।

प्रकीर्णक-पुस्तकमाला।

१ **अस्तोदय और स्वावलम्बन**। सेमुएल स्माईल्सके सुप्रसिद्ध 'सेल्फ-हेल्प' (स्वावलम्बन) ग्रन्थके ढंगका स्वावलम्बनका पाठ सिखानेके लिए बहुत ही उपयोगी ग्रन्थ। मू० १=)

६ **कोलम्बस**। अमेरिका महाद्वीपका पता लगानेवाले एक असीमसाहसी उत्साही नाविकका जीवनचरित्र। मू० ॥।)

७ **सन्तान-कल्पद्रुम**। अपने ढंगकी एक ही पुस्तक है। मू० १)

१० **कर्नल सुरेश विश्वास**। एक बंगालीका अद्भुत जीवनचरित। मू० ॥)

११ **व्यापारशिक्षा**। व्यापारसम्बन्धी बहुत ही उपयोगी पाठ। मू० ॥।)

१२ **शान्ति-वैभव**। चरित्रगठन और चरित्रसंशोधनके लिए बहुत ही उपयोगी है। दूसरी आवृत्ति। मू० ।=)

१३ **ब्याही बहू**। ससुराल जानेवाली लड़कियोंके लिए बहुत ही उत्तम शिक्षा देनेवाली एक अनुभवी विद्वान्की लिखी हुई पुस्तक। मू० ।)

१४ **पाषाणी (अहल्या)**। द्विजेन्द्रबाबूका पौराणिक नाटक। इसमें अहल्या और गौतम ऋषिका विचित्र चरित्र अंकित किया गया है। मू० ॥।)

१५ **सिंहल-विजय**। द्विजेन्द्रबाबूका ऐतिहासिक नाटक। मू० १=)

१८ **प्राकृतिक चिकित्सा**। मू० ।=) १९ **योग चिकित्सा**। मू० ≈)

२० **दुग्ध चिकित्सा**। मू० ≈) २१ **सुगम चिकित्सा**। मू० ≈)